

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 अक्टूबर, 2020
डाक प्रेषण तिथि 10 अक्टूबर, 2020

वर्ष : 78 अंक : 10
द्वितीय-आश्विन, 2077 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2018-20
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2018-20
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

अक्टूबर, 2020



नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच नमोवकारो, सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥



Website : www.jinwani.in

आवश्यकता को सीमित करके चलने वाले प्रायः गलत रास्ते पर नहीं जाते।

— आचार्य श्री हीरा

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जय गुरु हस्ती

जय महावीर

जय गुरु हीरा-मान

अंक सौजन्य

देव अरिहंत शरण उत्तम, दिव्य जिनकी देशना,
हे वीतरागी सिद्ध प्रभु! तुझसे मिलूँ यह प्रार्थना।
आचार्य संघ के सारथि, उवज्झाय मुझको ज्ञान दो,
निर्ग्रन्थ गुरुओं से विनय, निज की मुझे पहचान दो॥

“गुरुकृपा सदैव बनी रहे, यही प्रार्थना”

आचार्य श्री हस्ती दीक्षा-शताब्दी के
मंगलमय अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ

:: गुरुचरणों में श्रद्धावनत एवं संघ-सेवा में समर्पित ::

श्रीमती रतन-जसराज चौपड़ा

श्रीमती नीलम-आनन्द चौपड़ा

श्रीमती सविता-चन्द्रशेखर चौपड़ा

श्रीमती निकिता-अभिनव चौपड़ा

प्रांजुल चौपड़ा, जयपुर

जय गुरु हस्ती

जय महावीर

जय गुरु हीरा-मान

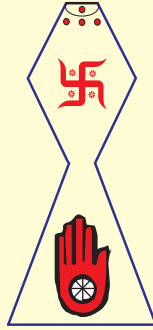
अंक सौजन्य

जो पूँजी पाकर स्वयं उसका सदुपयोग नहीं करता और दूसरों की सहायता नहीं करता,
प्रत्युत दुर्व्यसनों का पोषण करता है, वह इस लोक में निन्दित बनता है और
अपरलोक को पापमय बनाकर दुःखी होता है।

-आचार्य श्री हस्ती

मनुष्य प्रकृति का कानून मानकर चले तो
यह धरती स्वर्ग बन सकती है।

-आचार्य श्री हीरा



आचार्य श्री हस्ती के परम भक्त श्री नेमीचन्दजी-पारसकँवरजी भण्डारी
(पीपाड शहर) मुम्बई का परिवार

सुपुत्र : रतनराज, गौतमचन्द, प्रकाशचन्द, अशोक कुमार, अनेश कुमार भण्डारी

सुपौत्र-सुपौत्रवधू : दिलीपजी-सुषमाजी, रविजी-वर्षाजी भण्डारी

सुपुत्री-दामाद : श्रीमती रीतु-श्री नवीनजी गोटावत

प्रपौत्र-प्रपौत्री : सिद्धि, अदित, आरव

प्रदौहित्री : पूर्वी, मायरा

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

सह-सम्पादक

नीरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.- JaipurCity/413/2018-20
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2018-20
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परस्परपद्मो जीवनाम्

लद्धूण वि उत्तमं सुद्धं,
सहहणा पुणरावि दुल्लहा।
मिच्छत्त-मिसेवए जणे,
समयं गौयम! मा पमायए॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.19

उत्तम धर्म श्रवण पाकर भी,
श्रद्धा की प्राप्ति पुनः दुष्कर।
मिथ्यात्व-निषेवक जन होता,
गौतम! प्रमाद क्षण का मत कर॥

अक्टूबर, 2020

वीर निर्वाण सम्वत्, 2546

द्वितीय-आश्विन, 2077

वर्ष 78

अंक 10

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा

कराकर जमापत्री (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	भय एवं निर्भयता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	11
विचार-वारिधि-	तप और ताप में भेद	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
प्रवचन-	साध्य के साथ श्रद्धा एवं विवेक भी आवश्यक	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	गौरवशाली संघ की दीप्ति में सजग बनें	-महान् अध्यक्ष. श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	16
	अनुप्रेक्षा स्वाध्याय से जानें अपना स्वरूप	-म.व्याख्यानी श्री गौतममुनिजीम.सा.	19
	सुपुण्यशाली की उपजे धर्म में मति (2)	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	24
	बन्धन की स्वीकृति के अभाव में मुक्ति की चर्चा व्यर्थ		
तत्त्व चर्चा-	मुक्ति का आधार : समिति-गुप्ति	-श्री अरूण मेहता	31
	आओ मिलकर कर्मों को समझें (8)	-श्री धर्मचन्द जैन	66
अध्यात्म-	चञ्चलता में उपलब्धि नहीं	-नेहा चोरड़िया	36
English-section	Applied Philosophy of Economics of Mahavira	-Dr. Samani Shashi Prajna	42
दीक्षा-शताब्दी-	आत्म-अमरता के स्पन्दन : आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.	-डॉ. मीनाक्षी डागा	44
परिवार-स्तम्भ-	बुजुर्ग धरोहर हैं, बोझ नहीं	-श्री पदमचन्द गाँधी	47
रोचक-प्रसङ्ग-	हम जैसा बीज बोते हैं, वैसा ही फल प्राप्त करते हैं	-श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.)	51
जीवन-व्यवहार-	साधना का फल	-श्री गौतम पारख	52
चिन्तन-	अहं विलय का महामन्त्र : 'नमस्कार'	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	54
युवा-स्तम्भ-	कोरोना का पॉजिटिव प्रभाव	-श्री मनीष मेहता	56
प्रासङ्गिक-	सीधी बात.... कोरोना के साथ	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	59
विचार/चिन्तन-	कैसे दें बच्चों को संस्कार	-श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा.	15
	मनीषियों की दृष्टि में आचार्य हस्ती झाड़ू वाली	-श्री सुरेशचन्द धींग	35
	पाप में आनन्द : विष का बघार	-श्रीमती टीना मुथा	50
	चयन कम नुकसान का	-आचार्य विजयरत्नसुन्दर सूरि	58
	मेरी कीमत 20 लाख	-अनुश्री	65
गीत/कविता-	आस्रव	-डॉ. रमेश 'मयंक'	18
	हे जीव! जरा सोच	-श्री पीरचन्द चोरड़िया	23
	धर्म भावना	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	46
	जीवन सार सिखाने को	-डॉ. रेनू सिरौया कुमुदिनी	55
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	69
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	71
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

भय एवं निर्भयता

◆ डॉ. धर्मचन्द जौन

अभी कोरोना वायरस (कोविड-19) के संक्रमण एवं उससे होने वाले मरण का भय सर्वत्र व्याप्त है। पूरी दुनिया इस भय से आक्रान्त है। अब तक विश्व में लगभग 3.34 करोड़ लोग इस वायरस से संक्रमित हो चुके हैं तथा लगभग 10 लाख लोगों की मृत्यु हो चुकी है। भारत में 61 लाख लोग संक्रमित हो चुके हैं तथा प्रतिदिन लगभग एक लाख लोग नये संक्रमित हो रहे हैं। समाचार पत्रों के अनुसार भारत में लगभग 83 प्रतिशत रोगी स्वस्थ भी हो रहे हैं। समाचारपत्रों में यह जो आधिकारिक संख्या दी जा रही है वह वास्तविकता से कम ही है। अनेक अस्वस्थ लोग घरों में ही ठीक हो रहे हैं। सरकार भी अब इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पा रही है। अस्पतालों में कोविड-19 के रोगियों के लिए शय्या खाली नहीं मिल रही है। मई माह में जहाँ इस रोग से ग्रस्त कोई व्यक्ति मिलता था तो उस कॉलोनी में पुलिस भेजकर लोगों का आवागमन बन्द कर दिया जाता था। आज कई घरों में रोगी मौजूद हैं, न कोई पुलिस आ रही है और न ही कोई सरकारी चिकित्सक की सुविधा प्राप्त हो रही है। भय निरन्तर बढ़ता जा रहा है। प्रतिदिन इस रोग से मरने वालों की सूचना दहशत पैदा कर रही है। पहले गाँवों तक यह रोग नहीं पहुँचा था, किन्तु गाँवों में भी कोरोना वायरस का रोग दस्तक दे चुका है। इस रोग की अभी कोई निश्चित औषधि नहीं है। देशी काढ़े और काली मिर्च, लोंग, दालचीनी, हल्दी आदि मसालों के उपयोग की महत्ता निरन्तर बढ़ती जा रही है। अभी दो-तीन माह में इनका निर्यात कई गुणा बढ़ा है।

कोरोना रोग के तीन स्तर हैं-1. जुकाम एवं गले में खराश रहता है, 2. उससे अधिक बुखार, खाँसी आदि का प्रकोप रहता है और 3. फेफड़ों में कफ बढ़ जाने से श्वास की समस्या उत्पन्न हो जाती है। तीसरे

प्रकार के रोगी की स्थिति बड़ी चिन्तनीय हो जाती है और उसे अस्तपताल में भर्ती होना पड़ता है। सरकारी अस्पतालों में स्थान नहीं है, प्राइवेट में लाखों रुपये खर्च हो रहे हैं। सब ओर से भयाक्रान्त स्थिति है।

स्थानाङ्गसूत्र और समवायाङ्गसूत्र में भय के सात स्थान निरूपित हैं-1. इहलोक भय, 2. परलोक भय, 3. आदान भय, 4. अकस्मात् भय, 5. वेदना-भय (समवायाङ्ग में आजीव भय), 6. मरण भय और 7. अश्लोक भय। इहलोक भय का तात्पर्य टीकाकार अभयदेवसूरि ने बताया है कि जो जिस जाति का जीव है उसे अपनी जाति के जीव से भय होना इहलोक भय है। उदाहरण के लिए मनुष्य को मनुष्य से भय, इहलोक भय है। अपनी जाति के जीवों के अतिरिक्त अन्य जीवों से भय होना परलोक भय है। उदाहरण के लिए मनुष्य को जब सर्प, बिच्छू, छिपकली, कॉकरोच, सिंह, बाघ आदि से जो भय होता है, वह परलोक भय है। अपने अधिकार की वस्तु के चोरी होने, विनाश होने का भय आदान भय है। किसी बाह्य निमित्त के बिना ही रात्रि आदि में आकस्मिक भय का अनुभव करना अकस्मात् भय है। शरीर, मन आदि में होने वाली वेदना या पीड़ा से भय होना वेदना भय है। मृत्यु का भय मरण भय है। सप्तम भय अश्लोक भय है। अश्लोक का अर्थ है अपकीर्ति या अपयश। मनुष्य अपयश के कारण भी भयभीत रहता है। समवायाङ्ग में वेदनाभय के स्थान पर आजीव भय का उल्लेख है, जो जीवन संचालन हेतु जीविका के साधन से सम्बद्ध भय है।

दिगम्बर परम्परा के ग्रन्थों में भी भयों की संख्या तो सात ही स्वीकार की गई है, किन्तु वहाँ पर दो नाम भिन्न हैं-अरक्षा भय और अगुप्ति भय। जीवन की सुरक्षा का अनुभव न करना अरक्षा भय है। खुले स्थान में रहने पर हर पल अपनी क्षति का भय अगुप्ति भय है।

दोनों परम्पराओं में भय के प्रमुख सात भेद ही कहे गए हैं, किन्तु इनके अनेक अवान्तर भेद भी सम्भव हैं, जैसे-दुर्घटना का भय, रोग का भय, परिवारजन के वियोग का भय, बैंक से धन के अपहरण हो जाने का भय आदि।

कोरोना के कारण मनुष्य अनेक प्रकार के भयों का अनुभव कर रहा है। उसे इहलोक भय है कि वह ऐसे मनुष्य के सम्पर्क में न आ जाए जो कोरोना विषाणु से संक्रमित हो। इस भय के कारण सम्प्रति अनेक रिश्ते गौण हो गए हैं। मात्र मोबाइल फोन का सम्पर्क रह गया है। बड़े आयोजन बन्द हैं। सजगता के लिए भी यह आवश्यक है, क्योंकि असावधानीवश मानव जाति का अधिक विनाश बुद्धिमत्ता नहीं है। बहुत से लोगों की इस कोरोना काल में आजीविका चली गई है, जिनकी आजीविका खतरे में है, उन्हें आजीविका भय है। सबके धन्धे ठप्प पड़े हैं। निजी अस्पताल एवं दवा कम्पनियों के अलावा अधिकतर मन्दी है। ऋण बढ़ रहा है, अतः मनुष्य तनाव में है। आजीविका का साधन न होना भय एवं तनाव का बहुत बड़ा कारण है। कुछ लोग परिवारजनों एवं रिश्तेदारों की स्थितियों के कारण भयभीत हैं, नींद भी उन्हें ठीक से नहीं आती है। उन्हें भय है कि यह रोग उन्हें आक्रान्त न कर ले। रोग होने की आशंका से वेदना का भय है। रोगी भी वेदना से भयभीत हैं। मरण के भय का तो कहना ही क्या, वह तो अभी सर्वाधिक अनुभव में आ रहा है। इस प्रकार भय के विभिन्न रूप इस संकटकाल में अनुभूत हो रहे हैं।

अब यह चिन्तन करने की आवश्यकता है कि हम निर्भय कैसे बनें। निर्भयता सबको प्रिय है, किन्तु फिर भी वह दुर्लभ प्रतीत होती है। यहाँ कतिपय विचार प्रस्तुत हैं-1. जो सत्य है, यथार्थ है उसे स्वीकार करने पर भय-रहित हुआ जा सकता है। यह सत्य है कि यह देह सदैव रहने वाली नहीं है, कुछ वर्षों या सीमित अवधि के लिए यह प्राप्त हुई है। एक-न-एक दिन यह अवश्य छूटने वाली है। जो देह छूटने वाली है, उसके छूटने पर किस बात का भय? एक सैनिक देश की रक्षा के लिए शत्रुओं से लड़ता है तो भी अपने जीवन की परवाह नहीं करता,

बिना भय के युद्ध के मैदान में पहुँचता है। वह किसी अंश में निर्भय होता है। उसकी मानसिकता में निर्भयता एवं वीरता प्रकट होती है। जब मृत्यु का क्षण उपस्थित हो जाये और उसे स्वीकार करने का सामर्थ्य जुटा लें तो भय रहित हुआ जा सकता है। जैनधर्म में संलेखना एवं संथारापूर्वक मरण का स्वागत करना निर्भयता का ही एक स्वरूप है। यदि भय हो तो संथारा स्वीकार करना सम्भव नहीं है। इस प्रकार देह की नश्वरता का सत्य हमें मरण आदि के भय से मुक्त बनाता है।

इसी प्रकार यह भी सत्य है कि जिसका संयोग हुआ है उसका वियोग किसी दिन अवश्य होना है। यहाँ परिवारजनों का संयोग मिला है, रिश्तेदारों का संयोग मिला है, धन-सम्पत्ति, भूमि-भवन, बैंक-बैलेंस आदि का संयोग मिला है। यह अनुकूल संयोग एक न एक दिन वियोग में परिवर्तित होने वाला है, इस सत्य को स्वीकार न करने पर हम वियोग के भय से आक्रान्त रहते हैं। हम सोचते हैं कि यह जो संयोग मिला है वह सदैव बना रहे, किन्तु ऐसा तीन काल में भी सम्भव नहीं है। हमारे से उनका या उनसे हमारा वियोग होना ही है। जिस प्रकार ट्रेन यात्रा में मिले यात्रियों का संयोग कुछ घण्टों में वियोग में बदल जाता है, इसी प्रकार जीवन-यात्रा में मिला यह संयोग भी किसी दिन वियोग में परिणत होता ही है। यह सत्य हमें आदान भय, इहलोक भय एवं अकस्मात् भय से मुक्त बनाता है।

यह भी सच है कि मैं किसी का बुरा नहीं सोचूँगा, बुरा नहीं कहूँगा और किसी का बुरा नहीं करूँगा तो अधिक सम्भवना यह है कि मेरी किसी से शत्रुता स्थापित नहीं होगी। शत्रु से हमें, वह कब क्या कर दे इसका भय बना रहता है। दूसरे शब्दों में कहें तो मैं अपने व्यवहार से दूसरों को भयभीत करता हूँ तो बदले में मुझे भी भय प्राप्त होता है। तीर्थङ्कर और केवली सबके अभयदाता हैं। वे सब जीवों को निर्भयता प्रदान करते हैं। जैन साधु-साध्वी भी इस मार्ग पर चलते हैं। वे एकेन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक के जीवों को अपनी ओर से अभय प्रदान करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि त्रस एवं पीड़ा नहीं देना भी हमें निर्भयता की ओर ले जाता है।

2. सम्यग्दर्शन से रहित अज्ञानी व्यक्ति मूढ़ होता है। वह भय एवं आशंका में जीता है। अन्धविश्वास के कारण उसे पदे-पदे भय का अनुभव होता है। इसलिये हितोपदेश में कहा है-

शोकस्थानसहस्राणि, भयस्थानशतानि च।
दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम्॥

मूढ़ व्यक्ति हजारों कारणों से शोकाकुल होता है तथा सैकड़ों कारणों से भयभीत होता है, किन्तु पण्डित अर्थात् विवेकशील व्यक्ति उन कारणों के रहते हुए भी शोकाकुल एवं भयभीत नहीं होता।

दृष्टि की सम्यक्ता और सम्यक् सोच मनुष्य को बहुत से भयों से रहित कर देती है। सम्यग्दृष्टि व्यक्ति सामान्य कारणों से भयभीत नहीं होता। जो व्यक्ति पदार्थों एवं परिवारजनों से जितना अधिक सुखाकांक्षी है एवं जितना अधिक आसक्त है वह उनके विनाश या वियोग की आशंका से उतना ही भयभीत रहता है। वह उन्हें बचाने का प्रयत्न करे, इसमें कोई बुराई नहीं है। यह उसका कर्तव्य भी बनता है, किन्तु घटना घटित हो जाती है उसके पश्चात् उसके सम्बन्ध में शोक करना एवं परिणामस्वरूप भावी परिस्थितियों की कल्पना कर भयभीत होना उचित नहीं है। समय आने पर हर समस्या का धैर्य से समाधान सम्भव है। जिन बच्चों के माता-पिता दूध पीते बच्चों को छोड़कर चल बसते हैं, उनका भी कोई न कोई रक्षक और पालक संसार में देखा जाता है। सबका अपना भाग्य है, हम व्यर्थ चिन्तन कर अज्ञान के कारण भयभीत होते हैं। धैर्य और हिम्मत से समाधान मिलते जाते हैं।

3. अपने कर्तव्य का निर्वहन करने वाले एवं दूसरे व्यक्तियों से अपेक्षा नहीं करने वाले को प्रायः भय नहीं होता। जिसे संसार से जितनी अधिक अपेक्षाएँ हैं और अपने कर्तव्य के प्रति प्रमत्त है वह उतना अधिक भयभीत है। संसार के प्रति आत्मीयतापूर्वक अपने कर्तव्य का निर्वहन करने वाला व्यक्ति संसार का बुरा नहीं करता। सत्पुरुषों की भावना रहती है-

छोड़ूँ लोभ घमण्ड बुराई, चाहूँ सबकी नित्य भलाई।
जो करना सो अच्छा करना, फिर दुनिया में किससे डरना।

जो स्वयं बुराई रहित होकर दुनिया का भला करता है उसे प्रायः किसी प्रकार का भय नहीं होता।

4. सभी प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव का जितना विकास होगा उतना ही जीवन में निर्भयता का अनुभव होगा। हम प्रतिदिन हर प्राणी के प्रति मन से मैत्रीभाव की भावना करें, वचनों से अभिव्यक्ति करें तथा कार्यों में भी मैत्रीभाव का प्रयोग करें। मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ। मेरा किसी के प्रति वैर नहीं है, सभी जीवों के प्रति मेरी मैत्री है। मैं सबका भला चाहता हूँ। सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो, सभी जीव प्रसन्न रहें, मेरा न किसी भी वैर है न द्वेष-इस प्रकार मैत्रीभाव की अभिव्यक्ति से सबके प्रति आत्मीयता का विकास होता है एवं निर्भयता प्राप्त होती है।

5. आचाराङ्गसूत्र में कहा गया है-सव्वओ पमत्तस्स भयं अपमत्तस्स नत्थि भयं अर्थात् जो प्रमाद युक्त है उसे भय है और जो प्रमाद-रहित है उसे भय नहीं है। हम प्रायः अपना जीवन विषय-भोगों के प्रमाद में व्यतीत करते हैं और अपने आत्मस्वरूप से अनभिज्ञ रहते हैं। जो अपने आत्मस्वरूप को जानता है वही प्रमाद से रहित हो पाता है। प्रमाद एक प्रकार से असावधानी और अजागृत अवस्था का सूचक है। शतपथ ब्राह्मण (14.24) में भी कहा गया है-न भयं चाऽस्ति जाग्रतः। जो सावधान है और जागृतिपूर्वक सोच-विचार कर कार्य करता है उसको भय और आशंका की सम्भावना कम रहती है। अन्यत्र भी कहा गया है-निर्विमर्शा हि भीरवः। (सुभाषितरत्नखण्डमञ्जूषा, पृ. 11) अर्थात् जो विचारशील होकर कार्य नहीं करते वे भयभीत होते हैं। कुछ प्रमादी लोग इस प्रकार के भी होते हैं जो अपने बारे में वीरता की डींगें हाँकते हैं, किन्तु परिस्थिति आने पर एकदम कायर बन जाते हैं। कहावत रत्नाकर में कहा है-वीरम्मन्यो भेरिशब्दाद् बिभेति। अपने को वीर मानने वाला व्यक्ति भेरी की आवाज सुनकर ही डरने लगता है। वह वास्तविक वीर नहीं है। वीर व्यक्ति तो भेरी की आवाज सुनकर उत्साहित होता है। कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो एक घटना से भयभीत होकर उस प्रकार की

क्षुद्र घटनाओं से भी भयभीत होने लगते हैं। सर्प से डसे हुए मनुष्य सर्प के सदृश दिखने वाली रस्सी से भी भयभीत होने लगते हैं। इस भय को सही सोच के साथ ही दूर किया जा सकता है। किसी को किसी वस्तु से एक बार डर उत्पन्न हो जाता है तो वह जीवन भर उस वस्तु से डरता रहता है। यह मानसिक डर (Phobia) सही सोच और हिम्मत के साथ तथा दूसरों को निडर देखकर दूर किया जा सकता है।

भय को जैनदर्शन में मोहनीय कर्म की एक प्रकृति माना गया है। जिसका उदय होने पर भय का अनुभव होता है। भय के जो निमित्त मिलते हैं, उनके कारण इस भय की अभिव्यक्ति होती है। नरक के जीवों को सबसे अधिक भयभीत माना जाता है, इसलिये हम अधिक भयभीत होकर नरक के जीवों की भाँति भयग्रस्त न बनें। भय को चार संज्ञाओं में एक संज्ञा भी माना गया है। भय मोहनीय कर्म के उदय से जो पलायन की इच्छा उत्पन्न होती है वह भय संज्ञा है। अन्तरंग में भय मोहनीय कर्म

इसमें कारण बनता है तथा बाहर में भय उत्पत्ति के स्थान या निमित्त तथा स्वयं की शक्ति हीनता कारण बनते हैं।

हमें यदि भयभीत होना है तो पाप प्रवृत्ति करने में भय का अनुभव करें अर्थात् पापभीरु बनें। भय का यह सही उपयोग है। बुराई करने से जो डरता है दूसरों को पीड़ा देने से डरता है उसका डरना भी भय का सदुपयोग है। तुलसीदास ने भी कहा है—भय बिन प्रीत न हो गुसांई। यह भी भय के सकारात्मक पक्ष को ध्यान में रखकर ही कहा गया है कि दण्ड आदि का भय जब तक न हो तब तक व्यक्ति सन्मार्ग पर नहीं चलता है। जो अश्लोक या अकीर्ति का भय है वह भी मनुष्य को बुराई से बचाता है इस प्रकार भय भी कुछ अंशों में उचित कहा जा सकता है। लोक-निन्दा मनुष्य को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करती है, अतः लोक-निन्दा के भय से यदि हम सन्मार्ग पर चलते हैं तो वह सार्थक है, किन्तु जो भय हमारी हानि करता है व्यर्थ चिन्तन, तनाव और दुःखों को आमन्त्रण देता है उस भय से तो विरक्त होना ही श्रेष्ठ है।

(शेषांश पृष्ठ 11 का)

आरिर्एहिं पवेइए। (आचाराङ्गसूत्र 1.8.3) स्थानाङ्गसूत्र में धर्म के दो प्रकार निरूपित हैं—1. श्रुतधर्म और 2. चारित्रधर्म। ये दोनों धर्म साधन हैं, स्वरूप नहीं। अतः आत्मशुद्धि का साधन भी धर्म है—आत्मशुद्धिसाधनं धर्मः। (जैनसिद्धान्तदीपिका) क्षमा, निर्लोभता, आर्जव, मार्दव, लघुता, संयम, तप, त्याग, सत्य और ब्रह्मचर्य भी साधन स्वरूप धर्म हैं जो आत्मा में रहकर उसको निर्विकार बनाते हैं तथा घातिकर्मों के विनाश में सहायक बनते हैं।

आजकल 'वत्थुसहावो धम्मो' के माध्यम से धर्म की अपूर्ण व्याख्या की जाती है, इससे धर्म का जीव के द्वारा आचरणीय स्वरूप विलुप्त हो जाता है। कार्तिकेयानुप्रेक्षा की पूर्ण गाथा का अवलोकन करें तो यह कमी दूर हो जाती है, पूर्ण गाथा इस प्रकार है—
धम्मो वत्थुसहावो, खमादिभावो य दसविहो धम्मो।
रयणत्तयं च धम्मो, जीवाणं रक्खणं धम्मो।।

इस गाथा से विदित होता है कि कुमार स्वामी ने वस्तु स्वभाव के साथ क्षमा, मार्दव, आर्जव आदि दस प्रकार के धर्मों को भी धर्म के स्वरूप में स्थान दिया है। यही नहीं उन्होंने मोक्षप्राप्ति के साधन स्वरूप ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र स्वरूप रत्नत्रय को भी धर्म कहा है। संक्षेप में उन्होंने जीवों की रक्षा करने को भी धर्म कहा है। धर्म के इन सभी स्वरूपों को दृष्टि में रखना आवश्यक है, क्योंकि 'वत्थुसहावो' को धर्म कहना वस्तुमात्र में अर्थात् जीव-अजीव आदि सभी द्रव्यों में लागू होता है तथा वह वस्तु के गुण-पर्याय स्वरूप धर्मों का कथन करता है, आचरण-पक्ष उसमें नहीं आता है, जबकि जैनधर्म में चारित्रधर्म एवं आचरणीय धर्म का मोक्ष की दृष्टि से विशेष महत्त्व है।

क्षमा आदि दशविध धर्म, ज्ञान-दर्शन-चारित्र स्वरूप त्रिरत्न एवं जीव-रक्षा स्वरूप धर्म जीव की वैभाविक परिणति को दूर कर स्वभाव में प्रतिष्ठित करते हैं। धर्म साधन है एवं आत्मशुद्धि साध्य है।

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

धम्मो वत्थुसहावो। -कातिकेयानुप्रेक्षा, गाथा-478

अर्थ-वस्तु का अपना स्वभाव ही धर्म है।

विवेचन-प्रायः धर्म के स्वरूप का प्रतिपादन करते समय इस वाक्य को उद्धृत किया जाता है-‘वत्थु सहावो धम्मो।’ अर्थात् वस्तु का स्वभाव ही धर्म है। ‘वस्तु’ शब्द यहाँ द्रव्य का वाचक है। ‘वसन्ति गुणपर्यायाः यस्मिन्निति वस्तु’ अर्थात् जिसमें गुण एवं पर्याय रहते हैं वह वस्तु है। जिस प्रकार जल का स्वभाव शीतलता है, अग्नि का स्वभाव उष्णता है, इसी प्रकार आत्मा का स्वभाव निर्विकारता है। इस तरह धर्म का स्वरूप समझाया जाता है। किन्तु धर्म का यह लक्षण विचारणीय है। वस्तु के स्वभाव को धर्म कहने पर यह लक्षण सभी वस्तुओं पर लागू होता है, सभी द्रव्यों पर लागू होता है। हर वस्तु में कोई न कोई धर्म अवश्य होता है। वह धर्म दो प्रकार का होता है-1. गुण स्वरूप 2. पर्याय स्वरूप। प्रत्येक वस्तु का गुण उसका धर्म कहा जाता है। उदाहरण के लिए पुद्गल द्रव्य में रूप, रस, गन्ध, स्पर्श गुण रहते हैं। वे गुण उस पुद्गल के धर्म ही हैं। पुद्गल में जो संयोग-वियोग पाया जाता है वह भी उसका धर्म है। धर्मास्तिकाय द्रव्य में जो पुद्गल एवं जीव की गति में सहायक निमित्त बनने का स्वभाव है, वह उसका धर्म है। अधर्मास्तिकाय द्रव्य में जीव और पुद्गल की स्थिरता में सहायक निमित्त होना उसका धर्म है। आकाश समस्त द्रव्यों को स्थान देता है, अवगाहन करने या रहने के लिए अवकाश देता है, यह उसका स्वभाव है, अतः अवगाहन देना आकाश का धर्म है। काल के कारण विभिन्न द्रव्यों में पर्याय परिवर्तन होता है, इस तरह पर्याय परिवर्तन में सहायक निमित्त होना उसका स्वभाव है, यही उसका धर्म है।

जीव का स्वभाव क्या है? जीव ज्ञान एवं दर्शन गुण

से सम्पन्न है, यही उसका स्वभाव है और धर्म भी। यह धर्म जीव में सदैव उपलब्ध रहता है। इस धर्म की कभी हानि नहीं होती। हाँ, यह अवश्य है कि ज्ञान अज्ञान स्वरूप हो सकता है, किन्तु दर्शन अदर्शन स्वरूप नहीं होता है। कषाय की उपस्थिति में भी ज्ञान एवं दर्शन गुण पाए जाते हैं। जब जीव कषाय रहित अवस्था में होता है तब भी उसमें ये गुण रहते हैं, अतः ये स्वभाव होने से धर्म हैं।

दार्शनिक क्षेत्र में पर्याय को भी वस्तु का धर्म कहा गया है, क्योंकि पर्याय भी किसी वस्तु में रहती है। उदाहरण के लिए पुद्गल की सुगन्धित पर्याय भी उसका धर्म है एवं दुर्गन्धयुक्त पर्याय भी उसका धर्म है। कटु, मधुर आदि रस भी उसके धर्म हैं। जीव में नारक, देव, मनुष्य, तिर्यञ्च आदि को भी पर्याय कहा गया है। लेश्या, कषाय, विशिष्ट ज्ञान-दर्शन आदि भी जीव की पर्याय हैं। दार्शनिक दृष्टि से ये भी धर्म कहे जाते हैं। वस्तु एवं जीव का स्वरूप समझने की दृष्टि से वस्तु के स्वभाव को या उसके गुण एवं पर्यायों को समझना उपयोगी है, किन्तु इनसे आत्मा के लिए कल्याणकारी धर्म का पूर्ण स्वरूप उजागर नहीं होता है।

भगवान ने जीव के लिए जिस कल्याणकारी धर्म का उपदेश दिया है वह जीवों की आत्मिक-शुद्धि एवं आत्म-उत्थान के लिए उपयोगी साधन है। धर्म का वह स्वरूप जीव के द्वारा आचरण योग्य है। इसीलिए कहा गया-एगे चरेज्ज धम्मं। (प्रश्नव्याकरणसूत्र 2.3) वह धर्म स्वभाव की ही व्याख्या नहीं करता, स्वभाव में जाने का भी उपाय या साधन भी प्रतिपादित करता है। इसीलिए दशवैकालिकसूत्र में अहिंसा, संयम एवं तप को धर्म निरूपित किया गया है-धम्मो मंगलमुक्किट्टमहिंसा संजमो तवो। (दशवैकालिकसूत्र, गाथा 1) आचाराङ्गसूत्र में समता को धर्म कहा गया है-समियाए धम्मं (शेषांश पृष्ठ 10 पर)

तप और ताप में भेद

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

आत्मा को पूर्णतः विशुद्ध बनाने के लिए बाह्य तप के साथ-साथ अन्तरङ्ग तप भी आवश्यक है। बाहर का तप इसलिये किया जाता है कि जो हमारा अन्तर विषय-कषायों की उत्तेजनाओं से आन्दोलित है, उद्वेलित है, हमारे अन्दर मोह, ममता और मिथ्यात्व का प्राचुर्य है, प्राबल्य है, वह कम हो, उसकी उत्तेजना शान्त हो, उसका प्राबल्य, उसका प्राचुर्य घटे एवं इस तरह उसे घटाते हुए अन्ततोगत्वा आन्तरिक तप से उन विकारों को पूर्णतः समाप्त करना है, उन्हें पूर्णतः नष्टकर आत्मा के विशुद्ध स्वरूप को प्रकट करना है।

मान लीजिये कि एक भाई ने तीन दिन के लिए खाना बन्द करके तेले की तपस्या कर ली, लेकिन उसने आस्रव को नहीं रोका। एक घड़ी के लिए सत्संग में आया, उसके बाद घर चला गया, बाजार या दुकान घूमता रहा। बाजार में झूठ बोलने का मौका आया, ऊँचा-नीचा देने का कारण बन गया, किसी के साथ झगड़ा हुआ। तेले के तप में भी उसका पाप कितना रुका, यह विचार करना चाहिए।

यदि किसी ने उपवास किया, बेला, तेला किया है, लेकिन उसका हिंसा का काम बन्द नहीं हुआ, झूठ बोलना बन्द नहीं हुआ, अदत्तादान बन्द नहीं हुआ, किसी से मजाक कर ली तो कुशील का त्याग दूषित हो गया। इस प्रकार तप में भी दोष का त्याग न करना उचित नहीं।

एक आदमी उपवास, पौषध नहीं कर रहा है, लेकिन उसने उपवास पौषध करने वालों की सेवा

की। सबके आसन बिछाता है, स्थान पूँजता है, दया करने वालों की थाली साफ करता है, तो वह भी एक तरह का तप है।

आठ मर्दों में तपस्या का मद भी एक मद माना गया है। जाति-मद, कुल-मद, बल-मद, रूप-मद, लाभ-मद, ज्ञान-मद, ऐश्वर्य-मद आदि मर्दों के साथ यह भी एक मद गिना गया है। कभी अगर ज्ञान का और तप का भी मद यानी अहंकार आ जाए तो वह भी कर्मों के बन्ध को तोड़ने के स्थान पर उनके बन्ध को और प्रगाढ़ बनाने का कारण बन जाता है।

तप और ताप में भेद समझें। अज्ञान भाव में विकारी वृत्तियों के वश में होकर तप को और मन को तपाया जाता है, वह ताप है। इसमें व्यक्ति अपने शरीर से भी कष्ट सहता है एवं दूसरे लोगों को भी कष्ट देता है। उसके अन्तर में काम, क्रोध की वृत्तियाँ सुलग रही हैं। अपने किसी बाह्य दुश्मन को मारना है, अमुक व्यक्ति का काम बिगाड़ना है, अमुक से बदला लेना है, उसको नुकसान पहुँचाना है, इस प्रकार की भावना से प्रेरित होकर अगर किसी व्यक्ति ने तप किया, जप किया, बेला या तेला आदि किया तो वह तप नहीं ताप है, क्योंकि उसके भीतर में भी ताप है, मन में ताप है और बाहर तन में भी ताप है।

कोई यह कहते हैं कि जैनियों की तपस्या में बेला-तेला-अठाई आदि तप से शरीर की हिंसा होती है, क्योंकि इनसे शरीर क्षीण होता है। किन्तु ऐसा सत्य नहीं है। यह हिंसा इसलिये नहीं है कि शरीर का जो स्वामी है, वह तपस्या से प्रसन्न है।

- 'नमो पुरिसवरगंधहृत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

साध्य के साथ श्रद्धा एवं विवेक भी आवश्यक

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर चातुर्मास में 2 अक्टूबर, 1993 को फरमाये गये इस प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोक कुमारजी जैन (हरसाना वाले), जयपुर द्वारा किया गया है। -सम्पादक

संसार के अज्ञान अन्धकार को दूरकर केवलज्ञान का प्रकाश प्राप्त करने वाले अनन्तज्ञान के सागर तीर्थङ्कर भगवान की वीतराग-वाणी का अमृतपान कर ज्ञान के प्रकाश में धर्म का सत्यग्रहण करने वाले परमेश्वर भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!!

कुछ लोग साधन सही लेकर चलते हैं, पर गन्तव्य का निर्णय नहीं हो पाता है। एक भाई पत्र लिखने बैठा, कागज रङ्गीन है, स्याही चमकीली है, अक्षर मोती की तरह सुन्दर हैं, भावना सुन्दर है, सुन्दर भाषा में पत्र लिखा गया है। पर लिखा किसे है, पता नहीं है। एक मुसाफिर पसीने से लथपथ होकर चल रहा है, एक गाड़ी से दूसरी गाड़ी बदल रहा है, पैसा खर्च कर रहा है, समय दे रहा है। किसी भाई ने पूछा-जाना कहाँ है, वह बोला-यह तो मुझे मालूम नहीं। ठीक उसी तरह कुछ लोग साधना करते चल रहे हैं, पर साधना किसलिये है, लक्ष्य निर्धारित नहीं है। माला भी चल रही है, स्वाध्याय भी चल रहा है, सामायिक भी चल रही है, तप की करणी कर रहा है, पर किसलिये? नहीं कहा जा सकता।

इस जीवन में साध्य भी चाहिये, साधना भी चाहिये। मैं इसी बात को सम्मेलन के विषय को लेकर जोड़ कर कहूँ। आज का सम्मेलन श्रावक सम्मेलन है। श्रावक सम्मेलन अथवा श्रद्धा का सम्मेलन। श्रावक सम्मेलन अथवा विवेक का सम्मेलन। जीवन में सबसे पहली बात श्रद्धा है। जहाँ श्रद्धा है, वहाँ प्रेरणा की अपेक्षा नहीं है। व्यक्ति स्वयं आचरण करके चलता है, जहाँ विश्वास है, वहाँ कहने की जरूरत नहीं है। धन पर विश्वास है, बिना कहे दुकान पर जाता है। भोजन पर विश्वास है, बिना मनुहार के खाता है, शुद्धि पर विश्वास

है, बिना कहे मैल उतारता है। इसी तरह जिसे आत्मा पर विश्वास है, अपने आप पर विश्वास है, उसके जीवन में न क्रिया की प्रेरणा की आवश्यकता है, न साधना के लिये आगे बढ़ने के लिए कहने की जरूरत है। वह स्वयं बिना कहे साधना के मार्ग पर चलेगा। श्रद्धा दो तरह की है-विपरीत भी है, अनुकूल भी है। विश्वास भौतिक जगत् में भी है, आध्यात्मिक जगत् में भी। इसीलिये कौनसी श्रद्धा करनी चाहिए? इस सम्बन्ध को लेकर दूसरा विवेचन किया जा रहा है।

श्रद्धा के साथ विवेक हो। विवेक सारे दोषों को हरण करने वाला है। नीतिकार कहते हैं-

यौवनं धनसम्पत्तिः, प्रभुत्वमविवेकिता।

एकैकमप्यनर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम्॥

जवानी दिवानी है, पैसा पाप की ओर जोड़ने वाला है, सत्ता जीवन का सत्त्व खत्म करने वाली है। एक जवानी ने कुपथ का रास्ता स्वीकार करा दिया, दिवाने बन गये, हजारों लाखों की हत्याएँ की गईं। अविवेक ने पाप का मार्ग खोल दिया है। पर नीति कहती है कि जन्म पाया है तो जवानी भी आयेगी। पुण्य किया है तो पैसा भी मिलेगा और योग्यता है तो सत्ता और अधिकार भी पायेगा, पर इन सबके साथ विवेक जुड़ा होना चाहिये। जवानी राम को ही नहीं रावण को भी आयी थी। पैसा मुम्मण को ही नहीं मिला, शालिभद्र को भी मिला था। सत्ता ब्रह्मदत्त को ही नहीं मिली, भरत भी छह खण्ड के स्वामी थे। विवेक रहा तो जीवन डूबने के बजाय तिर गया। श्रावक विवेक से चले, सत्क्रिया में चले तो वह बन्धन तोड़ने वाला होता है। विवेक का आधार ज्ञान का प्रकाश है। नीतिकार कहते हैं-द्रव्यों का आधार आकाश

है, जीवों का आधार धरती है। अधर्मों का आधार हिंसा है और मानवता का आधार निर्व्यसनता है। जहाँ निर्व्यसनता है, वहाँ विकास सम्भव है। एक व्यसन जीवन को बर्बाद कर देता है, इसीलिये श्रावक जीवन में आप जो यहाँ सम्मिलित हुए हैं, व्यसन हटाइये, फैशन घटाइये। एक व्यसन पाँचों पाण्डवों को जंगल में ले जाने वाला बन गया। एक व्यसन सातों व्यसनों का जनक बन गया। अखाद्य का आस्वाद आचरण को खराब करता है। अपेय का पान विचार में अपवित्रता उत्पन्न करता है। इन दो के बिगड़ने पर जीवन बिगड़ जाता है। इसीलिये श्रावक बनने वाले, सबसे पहले अपने जीवन में एक-एक व्यसन की तिलाञ्जलि करें।

आचार्य भगवन्त निर्व्यसनी को श्रावक मानते थे। जैन परम्परा में विशेष कर स्थानकवासी जैन परम्परा में सामायिक पर अधिक जोर दिया जाता है। घर-घर में सामायिक करने वाले मिलते हैं। भगवन्त ने कहा-सामायिक का धारक वह है जिसके जीवन में व्यसन नहीं है। निर्व्यसनी हो, प्रामाणिक हो, धोखा किसी के सङ्ग न हो। किसी जीव को जीवन में सुख पाना हो तो वह सामायिक कर ले। जीव के विकास के जितने पथ हैं, उनमें सबसे पहली बात है-निर्व्यसनता हो। अपने समान दूसरों को समझो। अगर आपने इस सामायिक से अपने समान दूसरों को समझ लिया तो सारे पाप घट जायेंगे। स्वतः छूट जायेंगे पाप। आदमी हिंसा भी करता है, परायों के साथ करता है। झूठ अपनों के साथ नहीं बोला जाता, परायों के साथ बोलता है। घर में चोरी नहीं करता है, अगर चोरी करके लाता भी है तो घर में सच-सच बोलता है। अमुक सामान वहाँ से चुराकर लाया। अपनों पर गुस्सा नहीं करता, अपनों पर अहंकार भी नहीं करता। बालक यदि पिता की मूँछ को पकड़ ले, हाथ से थप्पड़ मार दे तो गुस्सा नहीं किया जाता है। यदि कोई दूसरा मूँछ का बाल पकड़ ले तो गुस्सा आ जाता है, गुस्सा कर लेता है। जहाँ सामायिक अपने मन में भा गयी तो जीवन निर्माण होकर आप पवित्र और क्षमाशील बन जायेंगे। स्वाध्याय विचार सुधारने वाला है, सामायिक आचार

सुधारने वाली है। जहाँ ये दोनों आ गये, सामायिक और स्वाध्याय, वहाँ क्रूरता का नाम नहीं होगा। दया की आवाज लगाना बन्द हो जायेगा।

आज कुछ पाप प्रवृत्तियाँ चल रही हैं, अपने समान दूसरों को नहीं समझा जा रहा है। आपको काँटा भी खारा लगता है, तो दूसरों पर छुरियाँ चलाने की बातें कैसे की जा सकती हैं? आप अपनी श्रद्धा बढ़ाइये, विवेक जाग्रत कीजिए। आत्मविकास में आगे बढ़ने में श्रद्धा, विवेक और क्रिया सहायक होती है। जिसने सीख लिया, उसने परमार्थ में, व्यवहार में, सबमें आगे बढ़ना सीख लिया। आत्मा का विकास जगत् का विकास है, अपने आपका विकास है। सबसे पहले अपने पर दया करो। हिंसा करेंगे तो दूसरा मिटेगा या नहीं, आपके आठों आत्म गुण समाप्त हो जायेंगे। आप झूठ बोलेंगे तो आप पर से विश्वास हट जायेगा। सबसे पहले अपने पर दया करो, उसके बाद संसार पर दया करो। जिसने अपने आप पर दया कर ली, उसने दुनिया पर दया कर ली। आप स्वयं निर्मल बनें, आपके लिए दुनिया अपने आप निर्मल हो जायेगी। स्वयं पाप से हटें, आप दुनिया में शान्ति और समाधि के साथ जीवन बिताने लगेंगे।

आप विवेक को, क्रिया को जोड़कर चलेंगे तो आप सुखी होंगे। आपके घट में धर्म आ गया तो व्यवहार में स्वतः आ जायेगा। यही धर्म का सार है, यही आत्म उत्थान का सार है। आप स्वयं अपने आप की हिंसा भी नहीं करें और दूसरों की हिंसा भी नहीं करें। जो करते हैं, उन्हें अपने सदाचरण से, सदबुद्धि से बचाकर सन्मार्ग में लगाइये, यह पर दया है। भूखे को भोजन देना शरीर रक्षण का कारण है। नीचे गिरने वाले को नरक निगोद से निकालना भाव दया है। दया अपनी भी कीजिए, दूसरे पर भी कीजिए। संसार के पथ पर मानव जीवन का सार निकालने हेतु ब्रती बनिये, धर्मी बनिये। अगर आप धर्मी बने तो ज्ञानी कहते हैं-धर्म सब्जी में नमक है, धर्म शरीर का प्राण है। अगर धर्म नहीं है तो यह तन मुर्दा बन

जायेगा। धर्म के बिना मानव जीवन का स्वाद नहीं है, सार नहीं है। इस सम्मेलन में आत्मविकास की ओर जितने आगे बढ़ोगे, संसार का विकास अपने आप होता जाएगा। व्यक्ति-व्यक्ति मिलकर समाज बनता है, समाज मिलकर राष्ट्र बनता है। व्यक्ति सुधर जायेगा,

समाज सुधर जायेगा। समाज सुधर जायेगा तो राष्ट्र सुधर जायेगा। श्रद्धा और विवेक से चलिये। श्रद्धा एवं विवेक का आचरण आपके लिये, दुनिया के लिए, देश के लिए समाधि देने वाला बनेगा। जो करेगा वह पायेगा।

कैसे दें बच्चों को संस्कार

श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा.

1. **गुण**—बच्चे फूल जैसे कोमल, प्रेम जितने पवित्र, मन के सच्चे तथा सरलता आदि गुणों वाले होते हैं।
2. **सुसंस्कार**—बच्चे की पहली पाठशाला, पहली शिक्षा माँ होती है। संस्कारों की शुरुआत माता-पिता को करनी होगी, क्योंकि बच्चे उपदेशों से अधिक हमारे व्यवहार तथा आचरण से सीखते हैं। अपना हर कार्य उठना-बैठना, खाना-पीना, सोना-जागना, धर्मध्यान आदि समय पर व्यवस्थित, सावधानीपूर्वक हो।
3. **सुप्रभात**—जो ब्रह्म मुहूर्त में सोते रहते हैं वे ही ज्यादा दुःखी होते हैं, अतः सूर्योदय से कम से कम एक घण्टे पहले उठकर पहला कार्य धर्म-ध्यान (सामायिक) करने का लक्ष्य रखें, जिससे दिनभर शान्ति मिले।
4. **सुप्रमोद**—प्रकृति हर बच्चे को उसके भाग्य तथा योग्यता से नवाजती है, हमें तो बिना राग-द्वेष के उनमें गुणग्राही प्रकृति का बीजारोपण करना है। याद रखें आप बच्चों के ट्रस्टी हैं, मालिक नहीं।
5. **तीन सूत्र**—ACE 1. Appreciate (तारीफ, प्रशंसा) 2. Constructive Suggestion (उचित सुझाव, मार्गदर्शन) 3. Encourage (उत्साहवर्धन) बच्चा कोई गलती करे तो फिक्र न करें, बल्कि उससे ही जानना चाहिए कि जो वह कर रहा है उससे उसको नुकसान तो होने वाला नहीं है। उसकी भावना को, विचार को, तर्क को धैर्य से समझ कर पहले उसकी प्रशंसा करें, फिर शान्ति और प्रेम से अच्छा सुझाव दें, फिर उसका उत्साहवर्धन करें।
6. **समय का महत्त्व**—बच्चों को पूरा समय देना चाहिए, ताकि उन्हें आप समझ सकें और वे आपको। अगर उन्हें स्नेह और प्यार की ऊष्मा घर में नहीं मिलेगी तो वे बाहर किसी गलत मार्ग को चुन लेंगे, जिसकी जिम्मेदारी आपकी होगी।
7. **प्रेशर**—अपने बच्चों को किसी के जैसा बनने का दबाव नहीं डालें, उन्हें किसी लम्बी रेस का घोड़ा नहीं बनाना है। उनके दिमाग पर प्रेशर न बढ़ावें।
8. **धर्मी**—बच्चे को दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी बनाने का लक्ष्य रखें, इसके लिए धर्मस्थान में समय-समय पर साथ में लेकर जाते रहें। प्रतिदिन देव-गुरु-धर्म के बारे में कुछ न कुछ संस्कार देते रहें। केवल धार्मिक पाठशालाओं पर निर्भर न रहें, अपना कर्तव्य समझें।
9. **पारिवारिक प्रार्थना**—रात को सोने से पहले घर के सभी सदस्य कुछ समय के लिए साथ बैठकर जाप और प्रार्थना करें, फिर दिनभर के कार्यों सम्बन्धी जानकारी एवं निगरानी करें। आपकी एक प्यारी मुस्कान मिटा देगी सभी की थकान।

बच्चों को देंगे यदि, नैतिक-धार्मिक संस्कार, तो पाओगे भविष्य में, खुशियाँ और शान्ति अपार।

(10 सितम्बर, 2020 को पावटा स्थावक में दिए वक्तव्य से श्री सुभाष गुन्देचा, जोधपुर द्वारा संकलित)

गौरवशाली संघ की दीप्ति में सजग बनें

महान् अध्यक्षसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

महान् अध्यक्षसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा सुराणा मार्केट, पाली में 29 सितम्बर, 2019 को संघ की साधारण-सभा और गुणी अभिनन्दन कार्यक्रम के परिप्रेक्ष्य में फरमाये गये इस प्रवचन का आशुलेखन एवं सम्पादन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया।

-सम्पादक

आदि का अन्त कर अभयदयाणं-पद को अलङ्कृत करने वाले, व्याधि का वमन कर वीतरागता का वरण करने वाले, उपाधि का उपमर्दन कर स्व-स्वरूप में सञ्चरण करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्तों को वन्दन!

आत्म गुणों से मण्डित, शील-सुरभि से सुरभित भक्तों के द्वारा भगवान के रूप में चर्चित, गुरु हस्ती के द्वारा तृतीय पद पर अधिष्ठित, मम् मनमन्दिर में प्रतिष्ठित अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त को नमन!!

बन्धुओं!

जयवन्त जिनशासन में जिसे प्रवेश मिल जाता है तो वह स्वयं जिन बन सकता है। वह तीर्थङ्कर प्रभु के द्वारा प्ररूपित तीर्थ में सम्मिलित हो जाता है। वह स्वयं तो तिरता है, औरों को भी तारने में सहायक बन जाता है।

संघ का सुरक्षा-कवच होता है-धर्म संघ। आप सब धर्म-संघ के सदस्य हैं। गौरवशाली रत्नसंघ के आप सदस्य हैं। आपको संघ में साधना का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। आचार्यश्री हस्ती के शब्दों में कहूँ, तो कहना होगा-संघ सदस्यों को संघ का गौरव अक्षुण्ण तो रखना ही है, गौरव-गरिमा को बढ़ाते भी रहना है।

जहाँ ज्ञान-क्रिया और दृढ़ श्रद्धा की बहती निर्मल धारा वो पावन संघ हमारा।।

हम भाग्यशाली हैं। हमें वह धर्म-संघ मिला है जहाँ आचार और विचार की प्रधानता रही है। आचार की निर्मलता और विचारों की पवित्रता से जो प्रचार होता है वह अखबार, पत्र-पत्रिकाओं,

वाट्स-एप्प से नहीं हो सकता। हमारा संघ प्रचार-प्रधान नहीं, आचार-विचार प्रधान संघ है। किसी की जेब में कस्तूरी हो तो उसे कहने की जरूरत नहीं पड़ती कि मेरे पास कस्तूरी है। कस्तूरी की सुगन्ध स्वतः चहुँओर महकती है। जहाँ आचार-विचार की शुद्धता होती है वहाँ स्वतः प्रचार होता ही है।

आज गुणी-अभिनन्दन और सम्मान-समारोह का दिन है। मुनिराज (श्री योगेशमुनिजी म.सा.) ने ठीक ही कहा-“हम स्वयं गुणी बनें।” आप गुणी बनेंगे तो संघ का गौरव अक्षुण्ण बना रहेगा, संघ की दीप्ति दिनों-दिन बढ़ती जाएगी।

पूर्वाचार्यों ने जिस संघ को सींचा है उसे आचार्यश्री हीरा पल्लवित-पुष्पित-फलित कर रहे हैं। आप गौरवशाली संघ का विकास करना चाहते हैं तो आपको चाहिए कि आप संघनायक से जुड़ जाएँ। संघनायक से जुड़ने पर आपमें अपने-आप शक्ति आ जाएगी।

एक उदाहरण है, जिससे समझने का प्रयास करते हैं। एक टोकरी में दो आम अलग-अलग रखे हुए हैं। वे आम जैसे हैं, वैसे ही रहेंगे, जबकि वृक्ष पर लगे आम पुष्पित-फलित होते जाएँगे। जो आम वृक्ष पर लगे हैं वे विकसित होते हैं, जबकि टोकरी में रहे आम विकास नहीं करेंगे, धीरे-धीरे विकृत होते जाएँगे।

संघ जड़ से सुरक्षित है तो वह खिलता जाएगा। संघ में प्रतिभावान सदस्य चाहिए, होशियार सदस्य चाहिए, पर डेढ़ होशियार नहीं। आप यदि

मूल से जुड़े रहेंगे तो विकास करते जाएँगे। आप कई बार कहते तो हैं—‘इक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।’ कहना जैसा है, वैसा करना भी है। आवश्यकता है संघ का प्रत्येक सदस्य न तो किसी की निन्दा करे और न ही आलोचना। एक-दूसरे की टाँग खिंचाई होने पर विकास अवरुद्ध हो जाएगा।

आज निन्दा-आलोचना करने वाले बहुत हैं। निन्दा परायों की करते हैं, अपनों की नहीं। निन्दा पतन करती है। आप नारे तो लगाते हैं, जोर-जोर से बोलते भी हैं—‘हम सब भाई-भाई, हममें न हो जुदाई।’ किन्तु नारों से संघ का विकास नहीं होता। विकास तो तभी सम्भव है जब आप तन से भले ही अलग-अलग हैं, पर मन से एक रहें। संघ में विचार-भेद तो हो सकता है, मन-भेद नहीं होना चाहिए।

आप सब गौरवशाली धर्म-संघ के सदस्य हैं, परस्पर में गुरुभाई हैं, इसलिए एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता का भाव जगना चाहिए। संघ के हर सदस्य के प्रति अपनत्व का भाव हो। आपने गुरु हस्ती-गुरु हीरा का जीवन व्यवहार देखा है। गुरु हस्ती के शब्दों में कहूँ—

निर्व्यसनी हो, प्रामाणिक हो,
धोखा न किसी जन के संग हो।
संसार में पूजा पाना हो तो,
सामायिक साधन कर लो।
जीवन उन्नत करना चाहो तो,
सामायिक साधन कर लो॥

गुरु हस्ती ने अनमोल सूत्र दिए हैं। संघ का हर सदस्य निर्व्यसनी हो और प्रामाणिक हो।

आप गुरु हीरा का आह्वान भी गुन-गुनाते हैं—
गुरु हीरा का है आह्वान,
निर्व्यसनी हो हर इन्सान।

आप घर सुधारने के पहले अपने-आपको सुधारें। आपमें अपने-आपको सुधारने की कितनी

ललक है? आप चाहे युवक हैं, बाल हैं, वृद्ध हैं, किसी में कोई व्यसन नहीं होना चाहिए। रत्नसंघ में अधिकतर सदस्य निर्व्यसनी हैं, पर जो कोई भी व्यसनी हैं वे व्यसन-त्याग करके अपने जीवन को निर्व्यसनी बनाएँ।

निर्व्यसनता के साथ प्रामाणिकता भी हो। प्रामाणिक कौन? प्रामाणिक वह होता है जो संघ की रीति-नीति से चलता है, संघ की मर्यादा और समाचारी को ध्यान में रखकर आचरण करता है। संघ में प्रीति-प्रेम और वात्सल्यभाव होगा तो प्रामाणिकता बनी रहेगी। आप सब संघ की आचार-संहिता का पालन करें। आचार-संहिता हम सन्तों के लिए ही नहीं, आप श्रावकों के लिए भी है।

रत्नसंघ की स्थापना को पैंतालीस साल हो जाएँगे। ब्यावर में रत्नसंघ की स्थापना हुई थी।

आप संघ की रीति-नीति पर चलें। रीति-नीति से हटकर कोई भी काम करेंगे तो संघ की बदनामी होगी। आप संघ के सदस्य हैं, आपका अपना कार्यक्रम है, संघ के कार्यक्रम संघ वाले करें, पर आप अपना समय निन्दा-विकथा में लगाते हैं—वहाँ ऐसा हो गया, वैसा नहीं करना चाहिए, इस तरह इधर-उधर की बातें संघनायक को आकर कहेंगे तो उनकी साधना में विक्षेप के भागी होंगे और संघ रचनात्मक दृष्टि से आगे नहीं बढ़ेगा। संघ का हर सदस्य प्रीति से रहे और नीति से चले तो किसी को किसी के प्रति शिकायत नहीं होगी।

आप संघ द्वारा प्रदत्त कार्य को करें। प्रदत्त कार्य नहीं करते हैं तो आपका वह आचरण संघ के साथ धोखा है। आज पदों का सर्जन दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। क्योंकि सबको पद चाहिए। पद की भूख किसे नहीं है? आप योग्य बनें तो पद बिना माँगे मिलेगा। योग्य को पद न भी मिले तो खतरा नहीं है और अयोग्य को पद दे दिया जाएगा तो पग-पग पर खतरा है। आप चाहे अध्यक्ष हैं या

कार्याध्यक्ष, महामन्त्री हैं या मन्त्री, आप-सब अपने-अपने कर्तव्य का पालन करें और संघ के विकास के लिए संघनायक से जुड़ जाएँ तो आपकी उन्नति कोई रोक नहीं सकेगा।

आपको पूर्वाचार्यों के आदर्श को ध्यान में रखना है। आप भजन में बोलते भी हैं-

निन्दा-विकथा न हो पर घर की
जय बोलो रत्न मुनीश्वर की॥

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. के समक्ष कोई निन्दा-विकथा करता तो दया पालने का तुरन्त कह देते। गुरु हस्ती ने जीवन को निर्व्यसनी और प्रामाणिक बनाने की सीख दी है। गुरु हीरा ने निर्व्यसनता का आह्वान किया है। आप पूर्वाचार्यों की उज्ज्वल-धवल परम्परा का अनुसरण करें और संघ-सेवा में समर्पित रहें तो संघ का उत्तरोत्तर विकास होता रहेगा। इसी भावना से.....।

आस्रव

डॉ. रमेश 'मयंक'

आस्रव द्वार,
शुभ-अशुभ कर्मों के आने का
मन-वचन-काया के योगों से
जीवन धन्य बनाने का।

आस्रव के द्वार
मिथ्यात्व, अविरति
प्रमाद-कषाय और योग हैं
आत्म-शुद्धि के साथ-साथ
पापों के परिहार का संयोग है।

जीव-जब
मलिनता के जनक
पापों का परित्याग करेगा
तभी तो- शुद्ध भावों से
शुचिता का अनुसरण करेगा
किन्तु, प्राणी

पाप-तत्त्व को जाने
अशुभ प्रकृति रूप के
कड़वे, कठोर, अप्रिय फल को पहचाने
तभी, स्वयं बच पाएगा

और, दूसरों को भी बचाएगा।

जरूरी है- जीव
व्यवहार और भाव पाप को अनुभव करे,
मिथ्यात्व- प्रमाद
रागद्वेष-कषाय से
स्वयं को दूर करे,
जो- हिंसा से बचेगा
पर- पीड़ा का अनुभव करेगा
वही-
पश्चात्ताप के साबुन से
प्राण पर लगी मलिनता हटाकर,
सत्कर्मों की उज्ज्वलता पाएगा,
पंचमहाव्रतों की भावनाओं से
प्रमाद पर अंकुश लगाएगा।

सच है-
करण और तप का योग
दूर करेगा प्रपंच का रोग
प्राणी- आत्म शुद्धि के
अनुष्ठान में लग जाएगा,
अपरिग्रही बनकर निवृत्ति द्वारा
जीवन धन्य बनाएगा।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

अनुप्रेक्षा स्वाध्याय से जानें अपना स्वरूप

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. द्वारा सवाईमाधोपुर शहर में वर्ष 2020 के चातुर्मास में धर्मचर्चा करते हुए अनुप्रेक्षा स्वाध्याय पर मार्मिक उद्बोधन दिया गया, जिसका संकलन श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन (सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, सवाईमाधोपुर) ने तथा सम्पादन श्रीमती अनुपमाजी गोलेच्छा, पाली ने किया।

-सम्पादक

बन्धुओं!

हम बड़े ही पुण्यवान हैं कि जिस आर्य संस्कृति में आपने और हमने जन्म लिया है उस संस्कृति में त्याग की, वैराग्य की, संयम की, मर्यादा की और आध्यात्मिक साधना की सदैव प्रतिष्ठा रही, महत्ता रही है। हमारा सांस्कृतिक इतिहास अनेकानेक ऐसे आध्यात्मिक साधकों के प्रेरक विस्मयकारी प्रसङ्गों से महिमामण्डित है जो आज तक हमारे जीवन को आलोकित करते हैं। गजसुकुमाल, अर्जुनमाली, धर्मरुचि अनगार जैसे कई कथानक आज भी हमारे रोंगटे खड़े कर देते हैं। कैसे थे वे साधक! जो बाहर में तो देह से युद्ध करते प्रतीत होते थे, किन्तु वस्तुतः उससे भी बड़ा पराक्रम करते थे भीतर में अपने मोह को जीतने का। कैसे सम्भव होते थे, ये असम्भव से लगने वाले प्रसङ्ग। वास्तव में उनकी इस आध्यात्मिक साधना के पीछे अनुप्रेक्षा स्वाध्याय का ही दृढ़ सम्बल था। इसी बल पर वे जीव और अजीव के भेद को अनुभूत कर पाए। देह और चेतन के पृथक्त्व को महसूस कर पाए।

आज हम देखते हैं कि संसार का हर व्यक्ति पौद्गलिक पदार्थ में ही सुख मानने की मान्यता कर बैठा है। यही कारण है कि वह शरीर को, धन को, रिशतों को, बाह्य साधनों को मूल्यवान समझकर प्रधानता देता है। इसीलिए सदैव उदास, अशान्त और समस्याग्रस्त रहता है। फिर भी उन पौद्गलिक

पदार्थों से अनासक्त होकर उन्हें छोड़ने, त्यागने की हिम्मत नहीं कर पाता है। क्योंकि वह अनादि से जड़ पदार्थों में ही सुख मानने की मिथ्या मान्यता कर बैठा है। यह हमारी अज्ञान चेतना है। क्योंकि अशाश्वत भौतिक पदार्थों को अपना स्वीकार करना असत् है, मिथ्या है। उनमें पूर्णत्व स्वीकार करना मूढ़ता है। यह हमारे जीवन में अनुप्रेक्षा स्वाध्याय अर्थात् आत्म-स्वरूप की मूल्यवत्ता के बोध के अभाव को दर्शाता है। क्योंकि अनुप्रेक्षा स्वाध्याय करने वाला साधक कभी अपूर्ण, विनश्वर सुख की ओर आकर्षित नहीं होता। एक विचारक ने बहुत सुन्दर लिखा है, जरा गौर करें-तुम जिसको पैसा समझते हो, वह एकमात्र एक मान्यता है। अगर किसी दिन सरकार रातों-रात यह ऐलान कर दे कि फलों-फलों नोट नहीं चलेंगे तो क्या होगा? क्या हम अब भी उसे मुद्रा समझेंगे? बस मान्यता को बदलने में इतनी-सी ही देर लगती है। चन्द कागज के टुकड़ों पर किसी का चित्र और हस्ताक्षर से वह मुद्रा बन गई और व्यावहारिक काम में आने लगी, लेकिन अब जैसे ही मान्यता बदल गई तो वही मुद्रा दो कोड़ी की हो गई। सारा खेल मान्यता का है। बस इसी तरह जड़ वस्तुएँ मूल्यहीन हैं, महज़ एक मान्यता है। जिसके कारण हमने उन्हें मूल्यवान बना दिया है, मान लिया है। हीरे, स्वर्ण मुद्रा, रजत, जवाहरात या नोट कुछ

भी हों, उनका मूल्य महज़ एक मान्यता है। जिस दिन तुम जगत् की मान्यता से मुक्त हो गए, उसी दिन वह सब मिट्टी हो जाएगा और उस दिन जिस चेतना की उपलब्धि होगी, वह अमूल्य होगी।

यह सच है कि जीवन चलाने के लिए जड़ पदार्थों का सहारा लेना ही पड़ता है। मगर उससे भी बड़ा सच यह है कि हमारे अज्ञान के कारण हमने जड़ पदार्थों को ही सर्वोसर्वा, यहाँ तक कि प्राणतुल्य समझ रखा है। इसी मिथ्या मान्यता के कारण जब-जब यह चेतन जड़ पदार्थों से स्वयं को आँकता है, मापता है, तौलता है, तब-तब जीव अहं भावना या हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है। भौतिक पदार्थों की मौजूदगी से ग्रसित हो उठता है तो उनके अभाव से आकुल-व्याकुल। यही मानव की सबसे बड़ी भूल है। इसी भूल के परिणामस्वरूप वह अनादि काल से अशान्त, दुःखी और कर्माधीन बनकर जन्म-मरण करता आ रहा है। तो आइए आप और हम जीवन की सच्चाई को जानने के लिए, मूल्यवान समय को सार्थक करने के लिए तथा अशान्ति से शान्ति की ओर बढ़ने के लिए अनुप्रेक्षा स्वाध्याय को जीने का प्रयास करें। यह अनुप्रेक्षा स्वाध्याय ही हमारी मिथ्या मान्यताओं से हमको दूर करेगा।

सबसे पहले तो हमें यह जानना है कि अनुप्रेक्षा स्वाध्याय क्या है? ज्ञानियों ने स्वाध्याय का अर्थ करते हुए फरमाया-ऐसे ग्रन्थों, ऐसे तथ्यों का अध्ययन करना, पढ़ना, जानना, मनन करना जो भीतर के राग-द्वेष की ग्रन्थि को गलाने में सहायक बन कर व्यक्ति को निर्ग्रन्थ बनने की प्रेरणा प्रदान करें। दूसरा अर्थ करते हुए फरमाया 'स्वस्य स्वस्मिन् स्वाध्यायः' अर्थात् स्व का स्व में अध्ययन करना।

इस स्व से स्व के अध्ययन की आवश्यकता जानकर ही परम श्रद्धेय गुरुदेव आचार्यश्री हस्ती ने हर धर्म क्रिया में स्वाध्याय को सर्वोपरि माना। उन्होंने जन-जन को स्वाध्याय की प्रबल प्रेरणा तो

दी ही, लेकिन स्वयं ने भी अनुप्रेक्षा स्वाध्याय को अपने जीवन में आत्मसात् कर लिया। तभी तो भीतर से 'मेरे अन्तर भया प्रकाश.....', 'मैं हूँ उस नगरी का भूप.....', जैसी कालजयी रचनाएँ स्फुटित हुईं। अनुप्रेक्षा स्वाध्याय के बल पर ही 'अत्तसम मणिज्ज छप्पिकाए' (दशवैकालिकसूत्र 5/10) आगम सूत्र को साकार करते हुए घायल नाग को बचाकर उत्कृष्ट निर्भयता का परिचय दिया। करुणा, निर्भयता, अनासक्ति जैसे आत्मिक उत्कृष्ट गुण देह बुद्धि से ऊपर उठने वाला तथा आत्मस्वरूप में रमण करने वाला ही प्रकट कर सकता है। वरना देह में, पौद्गलिक पदार्थों में, धन वैभव में बुद्धि रखने वाला सांसारिक मूढ़ प्राणी न तो सम्यक् करुणा का अधिकारी बनता है, न ही निर्भयता का, सच तो यह है कि ऐसे जीव केवल मैं और मेरे के घेरे में आबद्ध होकर ईर्ष्या, क्रोध, द्वेष, लोभ जैसे दुर्गुणों से ग्रस्त हो जाते हैं। वे धन पाकर भी दरिद्र के दरिद्र ही रहते हैं। हम तो आज तक उसे ही दरिद्र मानते आए हैं, जिसके पास खाने-पीने, रहने-पहनने के साधन न हों, किन्तु सही में गरीब तो वह है जो कामनाओं से जुड़ा हुआ होने से अभाव में जीता है। वह कितनी भी प्राप्ति कर ले, उसकी तृष्णा का कहीं अन्त ही नहीं होता।

सुभूम चक्री के पास छह खण्ड का राज्य, फिर भी और खण्ड जीतने के लिए आगे बढ़ा, परिणाम.... सब कुछ विनष्ट हो गया। आश्चर्य फिर भी आज का मानव ऐसे प्रसङ्गों से सीख नहीं लेता। हमेशा यही आशंका कि कहीं कोई अन्य मुझसे आगे न बढ़ जाए। कहीं कोई मुझे पराजित न कर दे। सच तो यह है कि जो अभी रो रहे हैं वे और ज़्यादा रोने के लिए रो रहे हैं। सम्पत्ति मिल गई, पर शान्ति चली गई। प्रतिष्ठा मिल गई, किन्तु प्रसन्नता गायब हो गई। सफलता मिल गई, स्वाध्याय बिगड़ गये, सत्ता मिल गई, स्वजन दूर हो गए, ये तो वही बात

हो गई कि डॉक्टर जब ऑपरेशन थिएटर से बाहर आए तो मरीज के परिजनों ने आकर पूछा-‘डॉक्टर साहब, ऑपरेशन कैसा रहा?’ डॉक्टर साहब ने ज़वाब दिया-‘ऑपरेशन तो बहुत अच्छा हुआ लेकिन.....।’ लेकिन क्या डॉक्टर साहब? लेकिन मरीज की तो मृत्यु हो गई। लो भला, ऐसे ऑपरेशन को क्या हम अच्छा मान सकते हैं, प्रसन्न हो सकते हैं। किसी ने क्या खूब कहा है-

खूब भागे, खूब दौड़े, पहुँच गये हो ताज़ तक।

लेकिन ये बताओ कफ़न से ज़्यादा,

किसने कमाया आज तक।।

लेकिन फिर भी आज के इंसान को सब्र कहाँ? गला काट स्पर्धा के इस युग में हर कोई भौतिक जगत् में आगे निकलने की होड़ में दौड़ रहा है। परिणामस्वरूप रिश्तों में खटास पनप रही है। न देव तुल्य माता-पिता का सम्मान, न अशक्त, रुग्ण परिजनों की सेवा का जज़्बा, न समाज का डर, न धर्म की भावना, न गुरु के प्रति समर्पण, न कर्मबन्ध के प्रति जागरूकता, न पाप के फल की कोई चिन्ता, न दुर्गति से बचाव की कोई तैयारी, न नैतिक उत्थान, न चारित्रिक विकास। जीवन में थोड़ी बहुत धर्मक्रिया, दया, परोपकार क्या कर लेते हैं, माना हमें पाप करने का लाइसेन्स मिल गया। आदमी अन्याय, अनीति में रच-पचकर बस भागता जा रहा है। जरा सोचें इन सबका क्या हस्र होगा? सावधान! हे मूढ़ जीव सावधान! क्योंकि जैसे अग्नि अपने साथ धुआँ लेकर आती है, भूकम्प जैसे सङ्ग में विनाश लेकर आता है, वैसे ही यह भौतिक सफलता अपने साथ निराशा, नकारात्मकता, निष्ठुरता, दुर्गति लेकर आती है। भवान्तर की क्या कहें, कई बार इस जन्म में ही भुगतना पड़ जाता है। तब व्यक्ति पागल बनकर चारों ओर दौड़ लगाता है। कोई क्लबों की शरण में जाता है तो कोई व्यभिचार के दलदल में, कोई नशे के चंगुल में, तो कोई टी.वी. के डिब्बे में समय व्यर्थ करता है। कोई

अवसाद से ग्रस्त होता है तो कोई आत्महत्या जैसे निकृष्ट कदम भी उठा लेता है।

हम जरा ठहरें, जरा सोचें! हम, हमारे बच्चे कहाँ जा रहे हैं? कुछ क्षण शान्त चित्त बैठकर अनित्य, अशरण, एकत्व, संसार-भावना से अनुप्रेक्षा स्वाध्याय करें। आचार्य महाप्रज्ञ ने कितना सुन्दर लिखा है, जो अनुप्रेक्षा स्वाध्याय का सजीव प्रमाण है-‘अकिञ्चन हूँ, इसलिए मैं महान् हूँ। कामनाएँ सीमित हैं, इसलिए सुखी हूँ। इन्द्रियों पर नियन्त्रण है, इसलिए स्वतन्त्र हूँ। कथनी-करणी में कोई अन्तर नहीं जानता, इसलिए सुखी हूँ। बाहरी वस्तुएँ मुझे आकर्षित नहीं करतीं, इसलिए सरस हूँ। अपनी कमजोरियों को देखता हूँ, इसलिए पवित्र हूँ। सबको आत्मतुल्य मानता हूँ, इसलिए अभय हूँ।’

यही तो है अनुप्रेक्षा स्वाध्याय का फलितार्थ। एक घटना बताता हूँ-एक फक्कड़ मनमौजी सन्त पेड़ की छाँव तले बैठा था। उधर से एक सम्राट गुजरा। उसे मस्ती में बैठा देख सम्राट पूछने लगा-‘आप कौन हो?’ उसने जवाब दिया-‘मैं सम्राट हूँ।’ सम्राट का दिमाग चकराया। कहने लगा-‘जंगल में पेड़ के नीचे अकेले बैठे हो, न कोई सेवक, न सेना, न वैभव, न कोई आडम्बर, फिर भला तुम सम्राट कैसे हुए?’ सन्त बड़ा दार्शनिक था। धैर्यपूर्वक कहने लगा-‘देखो भाई! सेवक उसे चाहिए जो खुद आलसी हो या हाथ-पैरों से लाचार हो, मैं न आलसी हूँ और न लाचार, फिर भला मुझे सेवक क्यों चाहिए। सेना उसे चाहिए जिसके शत्रु हों, और मेरा तो दुनिया में कोई शत्रु ही नहीं तो मेरे साम्राज्य में सेना की क्या जरूरत। धन-वैभव भी उसे चाहिए जिसे कोई कमी हो, दरिद्रता हो, मुझे तो कोई लालसा ही नहीं तो फिर मुझे धन की क्या आवश्यकता और आडम्बर तो उसे चाहिए जिसका निज स्वरूप सदोष हो विकृत हो। मेरे भीतर में अथाह करुणा, प्रसन्नता, सरलता का वास है तो

बाहरी प्रदर्शन क्यों करूँ। सम्राट् का सिर लज्जा से झुक गया। अब भला वह क्या बोले। सुना आपने? इसे कहते हैं अनुप्रेक्षा स्वाध्याय।

आप जरा इस महीने (अगस्त 2020) की जिनवाणी में आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. का प्रवचन पढ़ें, कितना प्रभावी प्रवचन है जिसमें ज्ञान के स्वरूप का सुन्दर विश्लेषण है। हाँ तो मैं कह रहा था-जहाँ व्यक्ति आत्मतत्त्व को प्रधानता देता है, वहाँ साधन साधन तक सीमित रहते हैं, वे कभी जीवन में साध्य नहीं बनते। ध्यान रखें, शरीर को अपना मानने से आलस जगता है, इन्द्रियों को अपना मानने से विलासिता आती है। मन को अपना मानने से संकल्प-विकल्प उठते हैं और आत्मा को अपना मानने से सिद्धत्व का भाव जगता है। धन-रूपया, सामग्री होना कोई पाप नहीं है। पाप है उनके प्रति आसक्ति, नाव पानी में रहे, कोई तकलीफ़ नहीं। नाव में पानी भर जाए तो नाव डूब जाती है। आसक्ति भी भार है, सन्ताप है। वह जितनी गहरी होगी दुःख भी उतना गहरा होगा। पति के मरने पर सबसे अधिक दुःख आखिर पत्नी को ही क्यों होता है? चक्रवर्ती के वियोग से पटरानी श्रीदेवी मोह में मूढ़ बनकर ही छठी नरक की अधिकारिणी बनती है। आसक्ति ही दुःख की जड़ है। इसीलिए तो जब-जब मानव के इच्छित कार्य में बाधाएँ, प्रतिकूलताएँ आती हैं तो वह येन-केन-प्रकारेण बाह्य निमित्त से दुःख को दूर करने का समाधान ढूँढ़ता है और इस चक्कर में अनेक नए दुःखों के बीज बो देता है। ये मानव की होशियारी होगी या अज्ञानता? प्रभु ने तो बहुत पहले ही कह दिया- 'जावंतऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा....' (उत्तराध्ययनसूत्र 6/1) अर्थात् इस अज्ञान अविद्या के कारण ही मानव दुःखी है। संसार में रहना अलग बात है, लेकिन संसार में रम जाना अवाञ्छनीय है। श्रावक के तीन मनोरथों में पहला मनोरथ भोगवाद से ऊपर उठकर यथार्थ में जीने की ही प्रेरणा देता है,

क्योंकि जिसने भोग की तुच्छता को जान लिया, परमात्म भाव में मग्न हो गया, वह कभी भी पुद्गल के मोह में मूढ़ नहीं बनता। बाह्य आकर्षण में वह साधना-पथ से कभी विचलित नहीं होता। यही तो अनुप्रेक्षा है। 'जैसे आत्मा में ज्ञान तो सबके है, लेकिन वे धन्य हैं जिनके ज्ञान में आत्मा है।' अनुप्रेक्षा के बल पर ही अनादि का मिथ्यात्वी सम्यक्त्व को उपलब्ध होता है, गुणस्थान में उत्तरोत्तर आगे बढ़ता है। अनुप्रेक्षा स्वाध्याय तो जीवन जीने की वह कला है जो बन्ध में सावधान होने का पाठ पढ़ाती है और उदय में समभाव का गुर भी सिखाती है। यही नहीं कर्म की सत्ता में साधना का मार्ग भी दिखाती है। ज्ञाताधर्मकथाङ्ग में वर्णित मेघमुनि का जीवन यही तो कहता है। वे जब प्रभु से प्रेरित होकर अनात्मभाव से आत्मभाव में आए तो नज़ारा वही होने पर भी उनका नज़रिया बदल गया। फलतः सम्पूर्ण जीवन ही रूपान्तरित हो गया।

स्वयं प्रभु ने अन्तिम देशना उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन 'सम्यक्त्व पराक्रम' में अनुप्रेक्षा स्वाध्याय का महत्त्व फरमाया, जब प्रभु से पूछा गया कि- 'अणुप्पेहाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ?' अर्थात् हे भन्ते! अनुप्रेक्षा से जीव को क्या लाभ होता है? तो प्रभु ने इस प्रश्न का हितकारी, मंगलकारी समाधान करते हुए फरमाया कि अनुप्रेक्षा अर्थात् सूत्रार्थानुकूल तत्त्व चिन्तन करने से जीव निकाचित कर्मों के प्रगाढ़ बन्धन को शिथिल कर देता है। उनकी दीर्घकालिक स्थिति को अल्पकालिक बना लेता है। यदि उनका विपाक (रस) कटु तीव्र हो तो उसे मन्द कर देता है। अगर उनकी स्थिति बहुप्रदेश वाली हो तो उसे भी अल्पप्रदेश बना लेता है। आयुर्कर्म का बन्ध आयु के दो-तिहाई भाग व्यतीत होने पर होता है। यदि अनुप्रेक्षा करते समय एक तिहाई भाग शेष न हो

अथवा जिस मनुष्य को उसी जन्म में मोक्ष पाना है तो आयुकर्म का बन्ध नहीं होता। वह असाता वेदनीय की अशुभ कर्म प्रकृतियों को पुनः पुनः नहीं बाँधता तथा चार गतियों वाले भयंकर अनादि अनन्त संसार रूपी वन को अनुप्रेक्षा स्वाध्याय के द्वारा पार कर जाता है। कितना उत्कृष्ट है अनुप्रेक्षा स्वाध्याय का प्रतिफल। यदि हम प्रभु में दृढ़ आस्था रखते हैं तो कितने विश्वास के साथ प्रभु ने हमें अनुप्रेक्षा का फल फरमाया है, उतने ही विश्वास के साथ हमें आचरण में कदम बढ़ाने होंगे। यह मुश्किल जरूर प्रतीत होता है, लेकिन असाध्य नहीं है।

जैसे फिल्म जगत् में एक अभिनेता कितना सजीव अभिनय प्रस्तुत करता है। वह कभी कोई पुत्र बनता है तो कभी पिता, कभी पुलिस अधिकारी तो कभी व्यापारी, कभी हत्यारा तो कभी कुछ और, लेकिन इन सब किरदारों को पूर्ण निष्ठा और सजीवता से निभाते हुए भी अन्तःकरण में अच्छी तरह से जानता है कि ये सब बाह्य रूप हैं, अभिनय हैं। मैं तो इन सबसे भिन्न अमुक व्यक्ति ही हूँ। बस इसी तरह अनुप्रेक्षा स्वाध्याय यही पाठ पढ़ाता है कि ये जितने भी जगत् के बाह्य व्यवहार हैं चाहे वह शरीर हो, चाहे परिजन। चाहे व्यापार हो, चाहे धन-वैभव, पद-प्रतिष्ठा। ये सभी मात्र जीवन व्यवहार हैं, विनाशवान हैं, अयथार्थ हैं, अपूर्ण हैं, मैं तो इन

सबसे परे सिर्फ और सिर्फ आत्मा हूँ, अखण्ड हूँ, शुद्ध हूँ, बुद्ध हूँ। ऐसा अनुप्रेक्षक कर्ता भाव से परे हटकर द्रष्टा-भाव में आ जाता है। बाहर के व्यवहार निभाते हुए भी भीतर अपने आत्मस्वरूप से बेभान नहीं रहता, जैसे मिठाई या ज्वैलरी की दुकान से मिठाई का, ज्वैलरी का बॉक्स लेकर आने पर भी कोई यह नहीं कहता कि मैं डिब्बा लेकर आया हूँ। वरन् कहता है कि ये मिठाई या अमुक आभूषण लेकर आया हूँ। क्योंकि वह जानता है कि यहाँ महत्त्व डिब्बे का नहीं वरन् उसके भीतर रहे सार तत्त्व का है। बस इसी तरह हम भी इस जगत् में, देह में रहते हुए यही अनुभव करें कि मैं इन सबसे भिन्न आत्म तत्त्व हूँ। इस बाहरी व्यवहार का मेरी भीतर की परिणति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। ये भाव जितना स्मृति में रहेगा, हम उतने ही अनासक्त बन पाएँगे। एकत्व-भाव में प्रतिष्ठित रह पाएँगे। तब निश्चय ही वर्तमान भव में शान्ति और प्रसन्नता का साम्राज्य होगा और भविष्य में भी निमिराजर्षि जैसे अनन्त भव्य आत्माओं के समान सिद्धत्व का वरण कर पाएँगे, यही मंगल भावना है। अन्त में भजन की दो पंक्तियों के साथ अपनी बात को विराम देता हूँ।

आत्मा हूँ आत्मा, मैं स्वयं परमात्मा,
देह विनाशी रे, मैं अविनाशी रे।

हे जीव! जरा सोच

श्री पीरचन्द चोरड़िया

हे मुसाफिर जीव!
तू कहाँ से आया है?
तू कहाँ जाने वाला है?
तू क्या कर रहा है?
तू किसके लिए कर रहा है?
तू साथ में क्या लेकर आया था?

तू क्या लेकर जाने वाला है?
तू किसके लिए रात-दिन मेहनत,
मजदूरी कर रहा है?
तेरा दुनिया में कौन है?
हे जीव! अब तू जाग। प्रमाद को छोड़,
एक क्षण का भी विलम्ब मत कर,
परभव की तैयारी कर।

-माणक चौक, नया बास, सुतर खाना की गली,
जोधपुर (राज.)

सुपुण्यशाली की उपजे धर्म में मति (2) (बन्धन की स्वीकृति के अभाव में मुक्ति की चर्चा व्यर्थ)

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा जोधपुर में वर्ष 2019 के चातुर्मास में पुण्य की महता पर प्रवचन फरमाया गया था, जिसका अशुलेखन श्री नीरतमलजी मेहता, सह सम्पादक, जिनवाणी द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

बन्धुओं!

कर्मों की मूल एवं उत्तर प्रकृतियों की विशद विवेचना प्रस्तुत कर कर्मबन्ध से छुटकारा पाकर छुटकारे का मार्ग बताने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और उस छुटकारे की कला को आत्मसात् कर छुटकारा पाने की प्रेरणा प्रदान करने वाले आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्-

छुटकारा किसका? जीव का, छुटकारा किससे? अजीव से। बन्धन हो तो ही छुटकारे का प्रश्न उपस्थित हो सकता है।

जीव द्रव्य एकान्त भिन्न है, अजीव एकान्त भिन्न है। एक द्रव्य अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव में ही परिणत हो सकता है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य को छू भी नहीं सकता, त्रिकाली ध्रुव आत्मा है, मैं वर्तमान काल में परिपूर्ण हूँ, शुद्ध बुद्ध हूँ, सिद्धों की जाति का हूँ, सिद्धों की भाँति का हूँ इसलिए जड़ से पूरी तरह मुक्त हूँ। कर्म बन्ध की चर्चा मत करो। जड़ को देखते रहने से मुक्ति मिल नहीं सकती। बन्ध, उदय, सत्ता की चर्चा करना, उनके थोकडे सीखना व्यर्थ में समय गँवाना है। अनन्त बार इन्हें सीख लिया, साधु के बानों का, ओघे पातरों का मेरु जितना ढेर लगा दिया, हुआ क्या? सम्यग्दर्शन के अभाव में अनन्त भव गँवा दिये। सामायिक में क्या रखा है? व्रत नियम कर पुण्य कमा-कमा कर देवलोक का आयुष्य बाँध कर कितना काल गँवा दिया, गरज सरी नहीं। ग्रन्थि भेद हुआ नहीं, छोड़ो इन्हें और केवल

आत्मा की चर्चा करो। ऐसी न जाने कितनी बातें सुनने को मिल रही हैं। गत दिवसों में अनेक संघों एवं दर्शनार्थियों के उपस्थित होने का प्रसंग आया; प्रश्न पूछे गए। गुजराती भाषा की पुस्तक पर भी पृच्छा उपस्थित की गई, आगम से उसकी समीक्षा का अनुरोध किया गया।

‘सम्यग्दर्शन’ परम दुर्लभ अंग। भारतीय भू भाग पर आविष्कृत निवृत्तिप्रधान धर्म का प्रमुख अंग सम्यग्दर्शन। पातञ्जल योग में जिसकी चर्चा है, बौद्ध दर्शन में जिसकी अर्चा है, पर जिनेन्द्र भगवान की वाणी में इसकी चर्चा है, अर्चा है, हाँ हाँ इसी का पर्चा है। इसके अभाव में कोई भी जीव न तो श्रावक बन सकता है, न ही साधु। न तो केवली बन सकता है न ही सिद्ध। सम्यग्दर्शन है तो ज्ञान आत्मा है, सम्यग्दर्शन में धर्मध्यान है, शुक्लध्यान है, कर्मों से छुटकारा है। दुःखों का आत्यन्तिक क्षय है।

दुःख? जीव तो परम सुखी है, दुःख तो कर्मों से है, उस कर्म को, जड़ को अपना स्वरूप मानना मिथ्यात्व है। कर्म और जीव एक दूसरे को छूते ही नहीं। अपेक्षा समझे बिना, नय के बिना एकान्त ऐसा ही मानना जिनवचनों का अनादर है। सम्यग्दर्शन में आयु बन्ध परीत संसारी बनाता है, 22 दण्डक के ताला लगाता है, 15 भवों में मुक्ति की सीमा निर्धारित करता है। उस सम्यग्दर्शन के लिए तत्त्वों की सही श्रद्धा अनिवार्य है। आज कतिपय स्थलों पर कतिपय चैनलों पर जिस रूप में प्ररूपण हो रहा है, उसका चिन्तन कुछ-कुछ कर रहे हैं।

ठाणांगसूत्र के प्रथम ठाणे में 'एगे आया' से उपयोग लक्षण की अपेक्षा सभी जीवों में समानता बताई, शुद्ध संग्रह नय में सभी जीवों की समानता दिखा, व्यवहार नय से दूसरे ठाणे में 'संसार समावन्नगा य असंसार समावन्नगा' से दो भेद कर दिये- संसार समापन्नक अर्थात् संसारी और असंसार समापन्नक अर्थात् सिद्ध। फिर संसार समापन्नक के त्रस, स्थावर आदि भिन्न-भिन्न अपेक्षा से भेद कह दिये। बद्ध और मुक्त भी कह दिये। जब तक बन्धन को जानेगा ही नहीं, छुटकारा होगा कैसे? सूत्रकृताङ्गसूत्र की प्रथम गाथा कह रही है-

“बुञ्जिज्ज त्ति तिउट्टिज्जा, बंधणं परिजाणिया।
किमाह बंधणं वीरो किं वा जाणं तिउट्टइ।।”

बन्धन को जानेगा, वीर प्ररूपित बन्धन को जानेगा, तोड़ने के उपायों को जानेगा, जानकर सम्यक् आचरण करेगा तभी तो बन्धन से मुक्ति सम्भव है। बाहरी बन्धन आँखों से दिखता है। तोता पिञ्जरे में बन्द है। तोता अलग है, पिञ्जरा अलग है। पिञ्जरे का दरवाजा बन्द है, अलग है तो भी है तो बन्द ही। अत्यन्त स्थूल दृष्टान्त है। आँखों से भी अलग-अलग दीखता है, पर है तो बन्धन ही। क्या पिञ्जरे में बन्द तोता स्वाधीन है, मुक्त है, स्वेच्छा से गगन में उड़ सकता है, स्थूल बन्धन भी अहितकारी है। छोटी गाय रस्सी से बँधी है। पूछते हैं कतिपय; रस्सी से रस्सी में गाँठ दी, रस्सी से रस्सी बँधी है, गाय कहाँ बँधी है? फरमाते हैं कोई-कोई कर्म, कर्म से बँधा है, जीव कर्म से नहीं बँधा। कर्म मूर्त है, जीव अमूर्त है। अमूर्त आत्मा को अरूपी आत्मा को मूर्त कर्म कैसे बाँध सकता है? सूक्ष्म में आगे बढ़ेंगे पर गाय को ही ले लें। भले ही गाँठ रस्सी से रस्सी पर लगी पर यदि गाय के गले का आवर्तन कर रस्सी से रस्सी पर गाँठ लगी तो गाय भी उस बन्धन के कारण स्वतन्त्रता-पूर्वक घूम नहीं सकती, गाय बँधी हुई ही कही जाएगी। गाय अलग, रस्सी अलग, इस निश्चय से व्यवहार में प्रवृत्ति नहीं हो सकती। रस्सी खुलने पर ही गोवत्स माँ के पास जाता है, स्तनपान करता है, माँ का दूध झरता है।

आत्मसुख झरने के लिए कर्मों के बन्धन से छुटकारा आवश्यक है। एक-एक आत्मप्रदेश पर अनन्त अनन्त प्रदेश हैं कर्मों के। कर्म कहलाते ही तब हैं जब जीव के प्रमाद से कार्मण वर्गणा का आस्रव होता है। प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेश के रूप में उनका जीव के साथ, एक-एक जीव के साथ पृथक् पृथक् सम्बन्ध जुड़ता है। भगवतीसूत्र, शतक 8, उद्देशक 9 में इसे प्रयोग बँध कहा। संसारस्थ जीव के योग, कार्मण वर्गणा से सम्बन्ध करते हैं, उदयप्राप्त कषाय, स्थिति एवं पाप प्रकृतियों में अनुभाग उत्पन्न करता है, पुण्य प्रकृतियों का अनुभाग, कषाय की कमी रूपी आत्म-परिणामों से सर्जित होता है।

हमें वीतराग देव, जिनेन्द्र भगवान के परस्पर अविस्वादी वचनों से ही आराधना करनी है। 'जिणवयणं जे करेन्ति भावेणं' जरा गहराई से सोचिये। कर्मों के आठ भेद या 148 प्रकृति किस दर्शन में बताई गई? क्या अल्पज्ञानी इन भेद-प्रभेदों के साथ प्रदेश, स्थिति, अनुभाग का ऐसा सूक्ष्म विवेचन कर सकता है? हजारों हजार पृष्ठों के विवेचन आज भी उपलब्ध हैं, पूर्वो का ज्ञान तो इससे कितना गहन और विस्तृत होगा। इन सबका कथन विशिष्ट ज्ञानी के अतिरिक्त और किसी के बस की बात ही नहीं है। श्वेताम्बर और दिगम्बर कर्म सिद्धान्त में 90-95 प्रतिशत समानता हो सकती है। तब फिर इन्हें व्यर्थ कहना, इनका अध्ययन जड़ में उलझना बताना, क्या उन अनन्त ज्ञानियों की आशातना करना नहीं है? पुण्य-पाप के शब्द तो प्रायः अन्य अन्य दर्शनों में मिल सकते हैं, पर नवविध पुण्य, अष्टादश पाप अथवा पुण्य की 42 प्रकृतियाँ, पाप की 82 प्रकृतियाँ बताना क्या सिद्ध करता है? खेद है भगवान के नाम पर, सम्यग्दर्शन के नाम पर प्रभु की वाणी का अपलाप कर पड़ौसी दर्शनों के एकान्त मत के संस्कारों को विहरमान से प्राप्त बताकर, विपरीत प्ररूपणा से स्वयं को भारी बनाया जा रहा है, उनके स्वाध्याय से दूसरों को प्रभु द्वारा वर्णित राजमार्ग से

भटकाया जा रहा है।

भगवतीसूत्र शतक 12 उद्देशक 5 में बताया गया— मिथ्यादृष्टि, 3 अज्ञान, 4 संज्ञा आदि अरूपी हैं, इनमें वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं। दसवें बोल कर्म आठ में मोहनीय कर्म की उत्तर प्रकृति में 'मिथ्यात्व मोहनीय' कर्म की प्रकृति है। चौदहवें बोले नवतत्त्व के 115 भेद में मिथ्यादर्शनशल्य पाप का भेद है और 18वें बोले दृष्टि तीन में मिथ्यादृष्टि दृष्टि का भेद है। कर्म और पाप रूपी हैं तथा दृष्टि अरूपी हैं।

मिथ्यादर्शनशल्य रूपी (अठारहवाँ पाप 4 स्पर्श वाला रूपी है) जड़ है, अजीव है, पुद्गल है। मिथ्यात्व मोहनीय कर्म भी इसी प्रकार रूपी है। किन्तु मिथ्यात्व के उदय व मिथ्यात्व के पाप का अरूपी स्तर पर दृष्टि के रूप में भी प्रभाव पड़ता है, अरूपी होने से वह पुद्गल तो हो नहीं सकता। 5 अरूपी द्रव्यों में उसका समावेश प्रारम्भ के 4 निष्क्रिय अजीव द्रव्यों में भी नहीं हो सकता। तब इसे जीव द्रव्य में समाविष्ट करना होगा। पुद्गल का प्रभाव जीव पर पड़ रहा है। इस जीव की वैभाविक परिणति से ज्ञान आत्मा प्रकट नहीं हो रही। औदयिक भाव का अज्ञान व क्षयोपशम भाव के तीन अज्ञान जीव की विपरीतता को स्पष्ट कर ही रहे हैं। चारों संज्ञाएं भी कर्म के उदय से जीव के विभाव को दिखा ही रही हैं। क्या इन जिनवचनों का अपलाप कर यह कहना कि 'एक द्रव्य दूसरे द्रव्य में कुछ कर ही नहीं सकता', अपने को जिनेन्द्र से अधिक ज्ञानी मानना नहीं है? विपरीत भावों से हम अनादि काल से मिथ्यात्व से मुक्त हो नहीं पाए। पहले गुणस्थान का साधु का बाना चारित्र नहीं कहलाता, चारित्र आत्मा को भगवान ने छठे से चौदहवें गुणस्थान तक बताया है। अनन्त बार तीर्थंकरों का सान्निध्य मिला, अनन्त बार ऐसी चर्चाएँ भी तो की। आज कहा जाता है—पुण्य अनन्त बार किया, पूर्वों का अध्ययन अनन्त बार किया, साधु का वेश अनन्त बार लिया। पर, ज्ञानी का सान्निध्य नहीं मिला, आत्मा की चर्चा नहीं सुनी। थोकड़े रटने में, शास्त्र रटने में, सेवा-उपकार करने में रह गये।

क्रान्तिवीर लोकाशाह जी के अट्टावन बोल अनुपम हैं, बार-बार प्रेरणा करते हैं 'डाह्या हो तो विचारिये जी' अर्थात् कुशल हो तो विचारिये। क्या तीर्थंकर से बढ़कर कोई सत्पुरुष हो सकता है? क्या तीर्थंकर की देशना से बढ़कर कोई देशना हो सकती है? क्या उस देशना के आधार के बिना मेरु जितने ओघे पातरे की बात कोई कर सकता है? क्या मिथ्यात्व की 70 कोटाकोटि सागर की स्थिति उस देशना के बाहर कहीं से आई है? कषाय के 16 भेद अनन्तानुबन्धी आदि नाम किसकी देन हैं? अरे भइया! तो उसी वाणी में अवगाहन कर सत्य को स्वीकार करें। भगवती सूत्र की प्रस्तावना में वर्णित भगवती के प्रमाण मननीय हैं।

एकान्तवादी कहते हैं कि जीव भोगी नहीं, जीव, अजीव को ग्रहण नहीं कर सकता, भोग नहीं कर सकता। उनका ऐसा कथन असत्य है। भगवतीसूत्र, शतक 25, उद्देशक 2 में स्पष्ट विधान है कि—'अजीव-द्रव्य, जीव-द्रव्य के परिभोग में आता है। जीव-द्रव्य ही अजीव को शरीर, इन्द्रियाँ एवं आहार आदि रूप से ग्रहण करता और परिभोग में लाता है। भगवतीसूत्र, शतक 7, उद्देशक 7 में भी काम और भोग जीव के ही होना बतलाया है। एकान्तवादी मत, जीव की विभिन्न स्थितियाँ नहीं मानता। इतना ही नहीं, वह जीव की प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली और अनुभव में आने वाली दशा का लोप कर के एक अंश को ही पकड़े हुए है, जब कि जिनागमों में जीव की सभी स्थितियों का वर्णन है।

ऊपर देखा जा चुका ठाणांग के दूसरे ठाणे में संसार समापन्नक और असंसार समापन्नक दो प्रकार के जीव बतलाए, ठीक वैसे ही भगवती सूत्र, शतक 1, उद्देशक 1 में दो प्रकार के जीव बतलाए। असंसार समापन्नक जीव सिद्ध भगवन्त हैं। इनके न तो शरीर है, न इन्द्रियाँ, न कर्म, न भोग और न परिभ्रमण। ये सादि अपर्यवसित एक ही स्थिति में स्थिर, अचल, अडौल, अकम्प और अवस्थित रहते हैं।

जो संसार समापन्नक-संसार में परिभ्रमण

करने वाले जीव हैं, वे ही विविध भावों एवं परिणामों में परिवर्तित होते रहते हैं। इनके शरीर हैं, इन्द्रियाँ हैं, कर्म हैं और भोग हैं। अजीव से सम्बन्ध, वेदना, निर्जरादि इन्हीं के हैं और पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, संयम-तप आदि भी संसारी जीवों के ही हैं। इसी से तो कहा है कि—“जीवों के आधार से अजीव है और जीव, कर्म प्रतिष्ठित=कर्मों के आधार पर है, अजीव को जीव ने संगृहीत किया है और जीव को कर्मों ने संगृहीत किया है (भगवतीसूत्र, शतक 1, उद्देशक 6)। संसारी जीवों का अजीव से सम्बन्ध होने के कारण ही उनमें कम्पन होता है (भगवतीसूत्र, शतक 3, उद्देशक 2)।

एकान्तवादी मत जो जीव का स्वरूप बतलाते हैं, वह असंसार समापन्नक जीवों का है। वे अजीव के सम्बन्धादि से रहित हैं। सिद्ध भगवन्तों में मात्र उपयोग-ज्ञान-दर्शनोपयोग ही है। इसी को लक्ष्य कर एकान्तवादी कहा करते हैं कि-आत्मा तो मात्र ज्ञाता-द्रष्टा ही है, कर्ता-भोक्ता आदि नहीं। वह ज्ञान ही कर सकता है, कर्म नहीं? ‘यह इनका एकान्तवाद है। परन्तु वे इस स्थिति पर भी स्थिर नहीं रहते। जब उनके सामने संसार-समापन्नक जीवों की स्थिति आती है, तो इसका कारण वे अज्ञान भाव-मिथ्या उपयोग बतलाते हैं। यहीं उनकी गाड़ी अटक जाती है। यदि वे अज्ञान को भी आत्मा का गुण मानते हैं, तो उनके सामने प्रश्न खड़ा होता है कि-जब अज्ञान को भी आत्मा का गुण मानते हैं, तो गुण को भी परिवर्तित मानना होगा, अन्यथा जो अज्ञानी है, वह सदैव अज्ञानी ही रहेगा। वह कभी ज्ञानी हो ही नहीं सकेगा। क्योंकि ज्ञान गुण तो जीव द्रव्य का ही है। द्रव्य में ही गुण है और गुण में पर्याय है (उत्तराध्ययनसूत्र 28/6)।

यदि द्रव्य के गुण में परिवर्तन मानो, तो कर्म-परिणाम भी मानना ही पड़ेगा, जिसके उदय से अज्ञानी बना और क्षयोपशम से ज्ञानी हुआ। यदि कहा जाय कि ज्ञान-अज्ञान तो पर्याय है, गुण नहीं, तो प्रश्न होगा कि पर्याय आई कहाँ से? गुणों में से ही पर्याय उत्पन्न हुई। गुण से पर्याय सर्वथा भिन्न नहीं हो सकती। द्रव्य में गुण दो प्रकार के होते हैं, एक द्रव्य-सापेक्ष और दूसरे

संयोगजन्य। द्रव्य सापेक्ष गुण, द्रव्य में सदा विद्यमान रहते हैं। ज्ञानादि गुण द्रव्य-सापेक्ष हैं। संयोगजन्य गुण अन्य द्रव्य के संयोग से होते हैं और संयोग सम्बन्ध रहने तक रहते हैं। ये संयोगजन्य गुण पुद्गल में परस्पर भी होते हैं तथा जीव और पुद्गल में भी। दोनों द्रव्य सक्रिय हैं। परमाणु से द्वयणुकादि स्कन्ध बनना पुद्गल का परस्पर संयोग है और जीव के साथ शरीर, इन्द्रियादि रूप से जुड़ना, जीव-द्रव्य और पुद्गल-द्रव्य का संयोग सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को भगवतीसूत्र, शतक 8, उद्देशक 9 में ‘प्रयोग बन्ध’ कहा है और उसके भेद-प्रभेद बतलाये हैं। इसी से जीव को ‘पुद्गली’ भी कहा है। (भगवतीसूत्र, शतक 8, उद्देशक 10)

पाप, धर्म, बुद्धि, मति, उत्थानादि, गति, कर्म, लेश्या, दृष्टि, दर्शन, मत्यादि ज्ञान-अज्ञान, औदारिक शरीर, योग और उपयोगादि सब आत्मा में ही होते हैं, आत्मा के अतिरिक्त अन्य अजीव-द्रव्य में नहीं होते (भगवतीसूत्र शतक 20, उद्देशक 3)।

जीव अपनी आत्म-ऋद्धि, आत्म कर्म एवं आत्म प्रयोग से ही परभव में उत्पन्न होता है, परायी ऋद्धि से नहीं (भगवतीसूत्र, शतक 25, उद्देशक 8)।

जब तक जीव का पुद्गल के साथ सम्बन्ध है, तब तक वह कामी भोगी भी है ही। जीव स्वयं प्रेरक है, प्रयोग करने वाला है, ग्राहक-संग्राहक है। यह प्रत्यक्ष में भी दिखाई दे रहा है। अजीव का भोग-परिभोग करते हुए भी अपने आपको सिद्ध के समान अशरीरी, अकर्मक, अभोगी आदि मानना असत्य है।

एक सूत्र आता है तत्त्वार्थसूत्र में “विग्रहगतौ कर्मयोगः (2.26)” एक-गति से जीव दूसरी-गति तक शरीर रचना के लिए जाता है तो विग्रह गति होती है और उस समय मात्र कर्म की ही सत्ता चलती है। वहाँ मात्र कार्मण काययोग रहता है। अब यदि कोई ऐसा माने कि कर्म तो मात्र कर्म से बँधे हैं, आत्मा तो अलग ही रहता है तो इस स्थिति में कर्म, कर्म को ही खींचते चले जाना चाहिए और आत्मा को वहीं पर रह जाना चाहिए,

लेकिन ऐसा नहीं होता। उस आत्मा को भी कर्म के साथ नरक आदि गतियों में जाना पड़ता है और अधिकतम तीन समय तक अनाहारक भी रहना पड़ता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि कर्म के साथ आत्मा का गठबन्धन हुआ है, एक क्षेत्रावगाह सम्बन्ध हुआ है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

उत्तराध्ययनसूत्र के 28वें अध्याय की 15वीं गाथा में कहा-

तहियाणं तु भावाणं, सञ्भावे उवएसणं।

भावेण सद्वहंतस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं॥

जीवाजीवादि पदार्थों के सद्भाव में स्वभाव से या किसी के उपदेश से भावपूर्वक जो श्रद्धा की जाती है, उसे सम्यक्त्व कहते हैं।

जीव-अजीव के सम्बन्ध को अर्थात् बन्ध को जानने का प्रयास चल रहा है। सूत्रकृताङ्गसूत्र में कहा गया 'बंधणं परिजाणिया' - बन्धन को जानो, बन्धन क्या है? इसे समझने का प्रयास करें-

“अन्योन्यप्रदेशानुप्रवेशात्मको बंधः। कयोः? कर्मात्मनोः।” कर्म प्रदेशों का आत्मप्रदेशों में एक क्षेत्रावगाह हो जाना ही बंध है। कर्म और आत्मा का ऐसा संयोग होने के उपरान्त गठबन्धन हो जाता है और वे एक-दूसरे को स्थान दे देते हैं। दोनों के बीच बन्धन हो जाता है, एकमेकता हो जाती है, यही बंध है।

दो के बिना बंध नहीं होता, यह ध्यान रखना। एक हाथ से ताली जिस प्रकार नहीं बज सकती उसी प्रकार बंध तत्त्व भी एक के बीच में नहीं हो सकता। सांसारिक जो विषय सामग्री है वह और उसका जो भोक्ता है आत्मा, ये दोनों संयोग होते ही बंध जाते हैं। अब यह देखना है कि यह कैसा बंध हो जाता है? कैसा सम्बन्ध हो जाता है?

एक उदाहरण के माध्यम से समझ लें आप। स्कूल में एक बच्चा और बच्ची पढ़ते हैं, बाल्यकाल की बात है, निर्विकार भाव से पढ़ रहे हैं और भाई-बहन के

समान पढ़ रहे हैं। फिर जब पढ़ते-पढ़ते बड़े हो जाते हैं तो अपने-अपने बच्चों के ऊपर माता-पिता का ध्यान जाता है और विचार उत्पन्न होते हैं कि अब वे बड़े हो गये, इनकी शादी कर देनी चाहिए। अब देख लो- वह लड़की की माँ कह देती है अपने पति से। उसके साथ ही साथ लड़के की माँ है, वह कहती है, लड़का बड़ा हो गया, बहू नहीं लाओगे क्या? दोनों बच्चे अभी तो बचपन में खेलते थे, कूदते थे, साथ-साथ उठते-बैठते थे तो माँ-पिता ने सोचा कि प्रेम-भाव परस्पर है। दोनों श्रेष्ठ भी हैं इन्हीं का सम्बन्ध जोड़ दिया जाए तो बहुत अच्छा है और दोनों का सम्बन्ध/विवाह/लग्न हो जाता है। लग्न का अर्थ एक-दूसरे से मिल जाना, संलग्न हो जाना। 'समीचीन रूपेण लग्नः संलग्न' दोनों समीचीन रूप से एक विचार में एक आचार में बंध गये। बंध गये का अर्थ कोई रस्सी आदि से बंध दिया है, ऐसा नहीं है। सम्बन्ध हो गया, पाणिग्रहण हो गया, लेकिन दूरी दिखती है। दूरी होते हुए भी सम्बन्ध हो गया।

पहले जो साथ-साथ खेलते-कूदते थे, पढ़ते थे अब घूँघट आ गया, उस बच्ची के। यह घूँघट ही उस सम्बन्ध का प्रतीक हो गया। दोनों अलग-अलग हैं। प्रत्येक कार्य अलग-अलग करते हुए भी जुड़ गये हैं और जीवन में परिवर्तन आ गया है। यह वैवाहिक सम्बन्ध भी अपने आप में एक सिद्धान्त रखता है। जीव के आचार-विचार एकमेक हो जाते हैं अगर आचार एक नहीं रहेगा, विचार एक से नहीं रहेंगे तो विघटन आ जायेगा, वह सम्बन्ध विघटित हो जाएगा।

इससे यह फलित हुआ कि सम्बन्ध दो के बिना नहीं चलता और दोनों में एकमेकता भी होनी चाहिए। 'अन्योन्यप्रदेशानुप्रवेश' का अर्थ भी यह है कि एक-दूसरे में घुल मिल जाना। जैसे नट और बोल्ट हैं कि एक को खींचो तो दूसरा भी साथ में खिंचकर चला आता है। यह है बंध की प्रक्रिया। जिस व्यक्ति का विवाह सम्बन्ध संस्कार के साथ हुआ होता है वह जीवत्व के प्रति

वास्तविक वात्सल्य का प्रतीक है। जिनको संन्यास आश्रम में प्रविष्ट होने की अभी सामर्थ्य नहीं है वे कुछ दिन गृहस्थ आश्रम में रहकर देख लें, लेकिन उसके उपरान्त उसको भी पार करके निकल जायें तभी सार्थकता होगी। उन सांसारिक वैवाहिक बन्धनों के समान ही धार्मिक क्षेत्र में बंध-तत्त्व है।

इसका कोई न कर्ता हर्ता अमिट अनादि है,
जीव अरु पुद्गल नाचै यामें कर्म उपाधि है।

इस संसार को बनाने वाला या नष्ट करनेवाला कोई नहीं है। यह तो अनादिकाल से है और अनन्त काल तक रहेगा। जीव अपने परिणामों से पुद्गल कर्म के संयोग से इस लोक में भ्रमण करता रहता है। यह कर्मबंध ऐसा है कि अब एक निश्चित काल के लिए न तो पुद्गल पृथक् हो सकता है और न ही आत्मा पृथक् हो सकती है। दोनों के बीच एक क्षेत्रावगाह सम्बन्ध हो जाता है कि दोनों छूट नहीं सकते किसी अलौकिक रसायन के बिना।

आप पूछ सकते हैं कि महाराज! यदि आत्मा मूर्त कर्म के साथ सम्बन्ध करता है तो क्या वह भी मूर्त है। क्योंकि अमूर्त के साथ मूर्त का सम्बन्ध तो हो नहीं सकता। हाँ भइया, वर्तमान में संसारी जीव की आत्मा मूर्त है, लेकिन वह पुद्गल के समान मूर्त नहीं है, स्पर्श, रस, गन्ध, और रूप वाला वह तो चैतन्य है। जड़ तत्त्व की सङ्गत में आने से मूर्त बन गया है। मूर्त हुए बिना मूर्त के साथ सम्बन्ध होगा ही नहीं। लौकिक दृष्टि से भी जैनाचार्यों ने कहा है कि देवों के साथ मनुष्यों का व्यावहारिक काम सम्बन्ध नहीं हो सकता, क्योंकि देव वैक्रियिक शरीर वाले हैं और मनुष्य का शरीर औदारिक है।

इस मूर्त का मूर्त से सम्बन्ध समझाने के लिए कुछ लोग आकर कह देते हैं कि आत्मा तो अलग ही रह जाता है और कर्म कर्म के साथ बंध जाता है, किन्तु ऐसा नहीं है। विचार करें कि 'कर्म-कर्मणोः अन्योन्यप्रदेशानुप्रवेशात्मको बंधः' अथवा 'आत्मनोः अन्योन्य-प्रदेशानुप्रवेशात्मको बंधः।' ऐसा तो जैनाचार्यों ने लिखा

नहीं है। इसलिए यह प्रश्न तो ज्यों का त्यों बना रहता है कि अमूर्त के साथ मूर्त का सम्बन्ध कैसे होता है? इसी का समाधान देते हुए आचार्यों ने कहा है कि संसारी जीव के प्रति ऐसा एकान्त नहीं कि वह अमूर्त ही है।

'मूर्तोपि स्यात् संसारापेक्षया' अर्थात् संसारी जीव कथञ्चित् मूर्त होता है। संसार में इसका स्वभाव बिगड़ गया है। इसलिए यह मूर्त कर्म के साथ अनादिकाल से मूर्तपने का अनुभव कर रहा है, किन्तु वह चैतन्यमूर्त है। यदि अपनी आत्मा को वर्तमान में कथञ्चित् मूर्त मानेंगे तभी अमूर्त बनने का प्रयास भी होगा, अन्यथा नहीं होगा। साथ ही साथ वर्तमान में आत्मा मूर्त है लेकिन अमूर्तपना आ सकता है, इस प्रकार का जब विश्वास करेंगे आप, तभी बंध के यथार्थ श्रद्धानी कहलायेंगे, अन्यथा नहीं।

आत्मा में जो मूर्तपना आया है वह पुनः वापस अमूर्त में ढल सकता है, क्योंकि वह संयोगजन्य है, स्वभावजन्य नहीं। इस प्रकार एक अलग ही क्वालिटी का मूर्तपना इस जीव में आया है। इसे उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है। आप लोगों को यह विदित होगा कि बाजार में कई प्रकार की भस्में आती हैं, लोह भस्म है, स्वर्ण भस्म है, मोती भस्म है। ऐसी ही एक पारद भस्म (पारे की भस्म) आती है। पारे को जलाया जाता है बहुत घण्टों तक। तब वह पारा भस्म के रूप में परिवर्तित हो जाता है और औषधि इत्यादि के रूप में काम आता है। यदि पारा खा लोगे तो वह नुकसान कर जायेगा, शरीर में नहीं टिकेगा, शरीर सारा का सारा विकृत हो जायेगा। पारे को सामान्यतया कोई पकड़ भी नहीं सकता, क्योंकि वह शुद्ध तत्त्व है। विशुद्ध-तत्त्व हाथ से पकड़ में नहीं आता जैसे सिद्ध परमेष्ठी को आप पकड़ नहीं सकते। अर्हन्त परमेष्ठी संसार दशा में स्थित होने से अभी पकड़ में आते हैं क्योंकि मूर्त हैं।

इसका अर्थ यह हो गया कि वह पारा अपनी शुद्ध दशा में मूर्त होकर भी अभी पकड़ में नहीं आ रहा है,

किन्तु घण्टों जलते रहने के बाद जब भस्म के रूप परिणत हो जाता है तो पकड़ में आने लगता है और वैद्य लोग उसे औषधि के रूप में प्रयोग में लाते हैं। लेकिन एक बात और ध्यान में रखना कि इस पारे की भस्म की यह विशेषता है कि इसे खा लेने के उपरान्त यदि खटाई का प्रयोग हो गया तो पुनः वह अपनी सहज दशा में आ जायेगा और शरीर को विकृत कर देगा।

ठीक इसी प्रकार यह आत्मा राग-द्वेष रूपी अग्नि के माध्यम से यद्यपि पारे के भस्म के समान हो गया है, पकड़ में आने लगा है तथापि यदि चाहे तो वह अपनी शुद्ध अवस्था में भी पहुँच सकता है। वर्तमान में यदि

हम आत्मा को मूर्त नहीं मानेंगे तो बँध-तत्त्व की अवस्था नहीं हो सकेगी और 'बंधापेक्षः मोक्षः' -बंध की अपेक्षा से मुक्ति है तो मोक्ष तत्त्व भी सिद्ध नहीं हो पायेगा और मोक्ष तत्त्व के अभाव में संसार भी नहीं रहेगा, अन्य द्रव्य भी नहीं रहेंगे जो कि सम्भव नहीं है। अतः वर्तमान में अपने आत्मा को मूर्त मानना होगा और उसे अमूर्त बनाने के लिए निःशंक होकर मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होना होगा।

सबसे अधिक संसार सुख, सर्वार्थ सिद्ध देव लहे। निर्दोषता, निर्काक्षता, निर्मल मुनि इक वर्ष लँघे। अमृत प्रपा, गुरु की कृपा, मुदिता अनुपम और कहाँ॥

आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी में प्रकाश्य

जिनवाणी के 'जैन जीवनशैली' विशेषाङ्क हेतु बनें लाभार्थी

अध्यात्मयोगी, युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा-शताब्दी के अवसर पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका का 'जैन जीवनशैली' विशेषाङ्क प्रकाशित किया जा रहा है। इस विशेषाङ्क में आचार्यों एवं सन्तों के प्रवचन तथा विद्वानों एवं साधकों के आलेख प्रकाशित किए जायेंगे। कविताएँ तथा प्रेरक प्रसङ्ग भी यथाशक्य उपलब्ध रहेंगे। जैन जीवनशैली को समझने एवं उसके महत्त्व का मूल्याङ्कन करने की दृष्टि से यह विशेषाङ्क उपयोगी सिद्ध होगा।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के निष्ठावान्, उदारमना श्रावक-श्राविकाओं, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, श्राविका मण्डल तथा युवक परिषद् के पदाधिकारियों एवं सदस्यों तथा जिनवाणी के हितैषी पाठकों से निवेदन है कि वे शुभ मन से मुक्त हस्त से स्वयं अर्थसहयोग कर तथा आत्मीय जनों को प्रेरणा कर वृहदाकार में प्रकाश्य इस विशेषाङ्क के लाभार्थी बनें। अर्थसहयोग हेतु 11,000/- (ग्यारह हजार) या 5,000/- (पाँच हजार) की राशि प्रदान करने वालों के नाम विशेषाङ्क में प्रकाशित किए जायेंगे। आचार्य भगवन्त के प्रति श्रद्धा एवं विशेषाङ्क के महत्त्व को दृष्टिगत रखकर आप स्वेच्छा से 30 अक्टूबर 2020 तक जिनवाणी के निम्नांकित बैंक खाता में राशि जमा कर विवरण-नाम, पता, फोन नं. आदि मण्डल कार्यालय के फोन नं. 0141-2575997 पर सूचित करें।

Account Name :-JINWANI, Bank :-SBI, A/c No. :-51026632986, IFSC Code-SBIN0031843, Branch :-Bapu Bazar, Jaipur राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

सादर,
चंचलमल बच्छावत
अध्यक्ष

अशोक कुमार सेठ
मन्त्री

मुक्ति का आधार : समिति-गुप्ति

श्री अरूण मेहता

युगप्रधान आचार्य श्री हस्ती का दीक्षा शताब्दी वर्ष चल रहा है। उन आचार्य श्री हस्ती का शुद्ध समिति-गुप्ति युक्त दीर्घकाल का संयम (लगभग 71 वर्ष) हमें भी अपने जीवन में समिति-गुप्ति की यथाशक्य साधना-आराधना करने की प्रेरणा प्रदान कर रहा है।

प्रत्येक साधक का लक्ष्य है संसार से मुक्त होना, दुःखों से मुक्त होना, कर्मों से मुक्त होना। जीव का कर्मों के साथ योग होना संसार है तो जीव का कर्मों से पूर्ण निवृत्त होना, वियोग होना मुक्ति है। जीव के साथ कर्मों का योग कराने वाले तीन साधन हैं-1. मन, 2. वचन और 3. काया। मन-वचन-काया की प्रवृत्ति से ही जीव के साथ कर्मों का आकर्षण होता है, बन्ध होता है। हमें मन-वचन-काया के ये तीनों ही योग प्राप्त हैं, तो फिर हम कैसे इन योगों के रहते हुए भी कर्म-बन्धन से बच सकते हैं। समिति और गुप्ति का पाठ हमें यही शिक्षा देता है कि मन-वचन-काया के योग प्राप्त होते हुए भी अगर हम इनका दुरुपयोग नहीं करते हैं, इनका प्रयोग किसी जीव या प्राणी को मारने, ताड़ने, सताने, दुःख देने में नहीं करते हैं तो हम कर्म-बन्धन से बच सकते हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमें मन-वचन-काया का उपयोग सिर्फ और सिर्फ जीवों की रक्षा करने में, उनको साता पहुँचाने में, उनको सहयोग करने में, उनकी सेवा करने में ही करना चाहिए, इनका विपरीत रूप से दुरुपयोग कदापि नहीं करना चाहिए। जिससे कर्म-बन्धन से भी बचाव होगा और बद्ध कर्मों की निर्जरा भी होगी, यह दोहरा फायदा होगा। ऐसा करते-करते हम मुक्ति के अधिकारी बन सकते हैं।

प्रवचन माता

पाँच-समिति और तीन-गुप्ति इन आठों को आगमों में अनेक स्थानों पर अष्ट प्रवचन माता कहकर सम्बोधन किया गया है। प्रवचन यानी प्रधान वचन, प्रमुख वचन। साधक के लिए यह सभी आठ समिति-गुप्ति प्रधान वचन रूप, प्रमुख वचन रूप हैं। इनका स्मरण प्रत्येक साधक को हर समय, हरक्षण, आठों प्रहर, प्रतिदिन, प्रत्येक मास, प्रत्येक वर्ष, जीवनपर्यन्त रखना अनिवार्य है। स्मरण रखने से तात्पर्य यह है कि जीवन में, आचरण में, हर समय इनको स्मृति में रखकर इनके अनुसार ही जीवन को चलाना अनिवार्य होता है। इनके बिना साधक साधक ही नहीं रहता, असाधक बन जाता है, विराधक बन जाता है, जो उस साधक की दुर्गति का कारण बन सकता है। इस प्रकार ये आठ समिति-गुप्ति साधक को दुर्गति में जाने से बचाती हैं, रक्षा करती हैं इसलिए ये साधक की माता कही गई हैं। माता कभी भी अपनी सन्तान का बुरा नहीं चाहती है, बुरा नहीं होने देती है। इस अपेक्षा से इन आठ समिति-गुप्ति को माता की उपमा देना, 'अष्ट प्रवचन माता' कहना पूर्ण उचित ही है। यह प्रवचन माता साधक का रक्षण, पोषण और सम्बर्धन करती है। इनके बिना साधक का रक्षण नहीं हो सकता है। वह दुर्गति से नहीं बच सकता है। समिति-गुप्ति का आगम के अनुसार निरन्तर, प्रतिक्षण, प्रतिदिन पालन करते-करते साधक में कभी-कभी थकावट, शिथिलता आ सकती है, न्यूनता आ सकती है। लेकिन इन समिति-गुप्ति में निरन्तर सावधानी, सजगता, जागरूकता बनाये रखना ही साधक की प्रमुख साधना है। प्रवचन माता का आश्रय निरन्तर टिकाये रखना अनिवार्य है।

समिति-गुप्ति का पालन साधक को अपने हर कार्य में, हर समय में करना होता है। साधक की हर श्वास में, खून की हर बून्द में, शरीर की प्रत्येक हड्डी-हड्डी में, हड्डी की मज्जा-मज्जा में समिति-गुप्ति रूप इन अष्ट प्रवचन माता का निवास होना चाहिए। यह ऐसी माता है जिससे साधक को एक क्षण भी दूर नहीं रहना चाहिए, चाहे साधक सोया हो या जागा हुआ, दिन हो या रात, एकान्त में हो या समूह में, नगर में हो या गाँव में, इस माता की अनुपस्थिति में साधक की साधना नष्ट होना अवश्यम्भावी है। इसलिए साधक को अपनी प्रत्येक श्वास में इनको सज्जोकर रखना पड़ता है।

समिति-गुप्ति एक प्रकार से संयम का पर्याय है। समिति-गुप्ति का पालन प्रत्येक साधु-साध्वी के लिए अनिवार्य है, तो श्रावक-श्राविका के लिए भी इनके पालन का कहीं भी निषेध नहीं किया गया है। बल्कि प्रत्येक श्रावक-श्राविका को भी इन समिति-गुप्ति का यथासम्भव अपने जीवन में पालन करना ही चाहिए। इनकी पालना को अपने जीवन में उत्तरोत्तर बढ़ाते रहना चाहिए। अष्ट प्रवचन माता की शरण श्रावक-श्राविका के लिए भी समान रूप से रक्षक है, कर्मों के बन्धन से बचाने वाली है, दुर्गति में जाने से रोकने वाली है, देशविरति से सर्वविरति की ओर बढ़ाने वाली है।

जिस प्रकार से एक कछुआ अपने अङ्गों को गोपन करके अपनी सुरक्षा निश्चित कर लेता है, उसी तरह से मोक्ष मार्ग का साधक भी अपने मन-वचन-काया के योगों का गोपन करके संसार दावानल से अपनी सुरक्षा निश्चित कर लेता है। अपने आप का रक्षण कर लेता है।

समिति यानी सम्यक् प्रवृत्ति

समिति में सत्क्रिया यानी सम्यक् प्रवृत्ति की मुख्यता है, जबकि गुप्ति में असम्यक् प्रवृत्ति के निषेध की मुख्यता है। समिति और गुप्ति दोनों

चारित्र रूप हैं। समिति में नियमतः गुप्ति भी होती है, क्योंकि समिति में शुभ में प्रवृत्ति के साथ अशुभ से निवृत्ति रूप अंश नियमतः गुप्ति का ही अंश होता है। गुप्ति में प्रवृत्ति रूप समिति की भजना है, गुप्तियाँ एकान्त निवृत्तिरूप ही नहीं प्रवृत्तिरूप भी होती हैं। इसी कारण से इन आठों को कहीं-कहीं आठ समितियाँ भी कह दिया गया है।

गुप्ति में असत्क्रिया का निषेध मुख्य है, जबकि समिति में सत्क्रिया की प्रवृत्ति मुख्य है। समिति एवं गुप्ति संयम की विशुद्धि का कारण होती है। शुद्ध संयम पालन का प्रमुख अङ्ग होती है।

जीव अनादिकाल से प्रवृत्ति में रचा-पचा हुआ है। हमें प्रवृत्ति स्वाभाविक लगती है। परन्तु सिद्धों में कोई प्रवृत्ति नहीं होती है। अनादिकाल से चलते हुए प्रवृत्ति के प्रवाह के कारण से संसारी जीव में प्रवृत्ति का एकदम अभाव होना कठिन होता है। अतः अशुभ प्रवृत्ति का निषेध करने के साथ शुभ यानी सम्यक् प्रवृत्ति करने की आज्ञा समिति प्रदान करती है। दूसरा कारण है कि आयुष्य के लम्बे काल तक प्रवृत्ति का पूर्ण विराम करना जीव के लिए सम्भव नहीं हो सकता है। उसे आयुष्य पूर्ण करने के लिए शरीर को भी टिकाये रखना आवश्यक है और शरीर को टिकाए रखने के लिए आहार-पानी आदि की आवश्यकता होती है। आहार-पानी के लिए फिर निहार आदि के लिए प्रवृत्ति करना आवश्यक हो जाता है। अतः साधक को ये पाँच समितियाँ सम्यक् प्रवृत्ति करने की स्वीकृति प्रदान करती हैं और अशुभ प्रवृत्ति करने का निषेध करने के साथ-साथ प्रवृत्ति के मूल में रहे हुए प्रवृत्ति के अशुभ अंश को हटाते रहने की प्रेरणा करती हैं, जिससे हमारी प्रवृत्ति शुभ यानी सम्यक् होती जाती है। इसे ही समिति कहते हैं। समितियाँ पाँच हैं, जिनका संक्षिप्त विवेचन किया जा रहा है-

(1) ईर्या समिति-किसी भी जीव को कष्ट न हो, छहकाय के जीवों की यतना हो, सुरक्षा हो,

इसलिए सावधानीपूर्वक चलना ईर्या समिति है। चलने, फिरने, उठने, बैठने, सोने, जागने की निर्दोष प्रवृत्ति को ईर्या समिति कहते हैं। ईर्या समिति साधक को सिर्फ ऐसे आवश्यक कार्यों के लिए चलने आदि की अनुमति प्रदान करती है, जिससे कि ज्ञान-दर्शन-चारित्र की उपलब्धि या वृद्धि हो चलने आदि की प्रवृत्ति करते समय पूर्ण ध्यान सिर्फ ऐसी प्रवृत्ति पर ही होना आवश्यक है, अन्य किसी भी कार्य या बात पर ध्यान नहीं बँटना चाहिए।

(2) भाषा समिति—जो मधुर हो, जो सत्य हो, परिमित हो और सन्देह रहित हो ऐसे निरवद्य वचन को आवश्यकता पड़ने पर बोलना भाषा समिति है। छेदकारी, भेदकारी, मर्मकारी, पीड़ाकारी, निश्चयकारी, सावद्यकारी भाषा बोलने की अनुमति भाषा समिति प्रदान नहीं करती है। क्रोध-मान-माया-लोभ-हास्य-भय आदि के कारण किसी प्रकार का वचन बोलना भाषा समिति का उल्लंघन है। चलते हुए, खाते हुए आदि क्रियाओं के साथ बोलना भी भाषा समिति की मर्यादा के विपरीत है। गहन रात्रि में जब अधिकांश जीव विश्राम कर रहे होते हैं; तब जोर से बोलने की अनुमति भाषा समिति प्रदान नहीं करती है, जिससे कि उन सोये हुए जीवों को विघ्न उत्पन्न न हो।

(3) एषणा समिति—साधक की संयमयात्रा के लिए आवश्यक निर्दोष साधनों को जुटाने के लिए सावधानीपूर्वक निर्दोष प्रवृत्ति करना एषणा समिति है। बयालीस दोषों को टालकर भिक्षा आदि लेना तथा परिभोगैषणा के पाँच अन्य दोषों को मिलाकर कुल सैंतालीस दोषों को टालकर उनका भोग-उपभोग करना एषणा समिति का सन्देश है।

(4) आदान निक्षेपणा समिति—अपनी साधना के उपकरण आदि एवं आवश्यक वस्तुओं को भलिभाँति देखकर (प्रतिलेखन कर) व पूँजकर (प्रमार्जन कर) लेना, रखना इस समिति का उपदेश

है। कौनसी वस्तु किस स्थान पर रखना, किस प्रकार से रखना, किस समय रखना आदि ऐसी सभी सावधानियाँ निक्षेपणा समिति के अन्तर्गत ध्यान रखने योग्य होती हैं।

(5) परिष्ठापनिका समिति—अनुपयोगी वस्तुओं एवं मल-मूत्र आदि का जीवों से रहित क्षेत्र में पूर्ण यतनापूर्वक स्थान को प्रमार्जन करके विसर्जन करना (परठना) परिष्ठापनिका समिति है।

इस प्रकार से इन पाँच समितियों के माध्यम से साधक की समस्त प्रवृत्तियों को आवश्यकता पड़ने पर सम्पादित करने की निर्दोष विधि का निदर्शन किया गया है, जिससे कि साधना में कोई दोष न लगने पाए, निर्दोषता बनी रहे। साधना आगे से आगे नये-नये शिखर पर पहुँचाती रहे, मोक्ष सन्निकट करती रहे।

गुप्ति यानी गोपन या निवृत्ति

गुप्ति का अर्थ गोपन करना या रक्षण करना है। मन-वचन-काया के योगों का प्रशस्त रूप से निग्रह करना गुप्ति कहलाता है। मन-वचन-काया की स्वच्छन्द प्रवृत्ति को रोकना गुप्ति है। अशुभ कार्यों से योगों को रोकने को गुप्ति कहा गया है। संसार के कारणों से आत्मा का गोपन और रक्षण करना गुप्ति है। स्वरूप में परिणत होना या गुप्त होना ही गुप्ति कहलाती है। गुप्ति एक प्रकार से संवर भी है तो संयम भी है। अशुभ से निवृत्ति गुप्ति है तो कभी-कभी शुभ में प्रवृत्ति भी गुप्ति का ही एक रूप बन जाती है।

अनादिकालीन अभ्यास के कारण मन-वचन-काया में प्रवृत्ति करते हुए हमें अपने प्रवृत्त होते हुए मन को रोकना, वचन को विराम देना और काया को नियन्त्रण में रखना ही गुप्ति का स्वरूप है। श्री दशवैकालिक सूत्र का तीसरा अध्ययन हमें 'तिगुत्ता छसु संजया' का सूत्र प्रदान करता है। तीन गुप्तियों से गुप्त साधक ही छह जीवनिकाय में संयत होता है,

छहकाय के जीवों का रक्षक हो सकता है। जो छहकाय जीव निकाय में अपनी प्रवृत्ति में यतना बनाए रखता है वह जीव ही गुप्ति का अधिकारी होता है। यहाँ पर गुप्ति का आशय अशुभ प्रवृत्तियों से निवृत्त होना बतलाया गया है। गुप्तियाँ तीन हैं— 1. मनगुप्ति, 2. वचनगुप्ति, 3. कायगुप्ति। इनका संक्षिप्त विवेचन आगे किया जा रहा है—

(1) **मनगुप्ति**—राग-द्वेष के विकल्पों से, हिंसक तथा पीड़ाकारी मन के विकल्पों से निवृत्त होना मनोगुप्ति कहलाती है। एक प्रकार से धर्मध्यान भी मनगुप्ति का ही रूप है। मन गुप्ति का अर्थ हुआ अशुभ चिन्तन से मन हटाकर शुभ चिन्तन में स्थिर करना, शुभभावों में केन्द्रित या एकाग्र करना। इस तरह से मनगुप्ति के तीन चरण कहे जा सकते हैं—1. आर्त्त-रौद्र ध्यान के विचारों के चिन्तन से मुक्त होना, 2. माध्यस्थ भावों में स्थित होना तथा 3. शुभ-अशुभ सभी प्रकार की मनोवृत्ति का निरोध करके आत्म भावों में रमण करना। धर्म-ध्यान और शुक्ल-ध्यान में रमण करना। सिद्धान्त-सूत्र रूपी जिनवाणी का चिन्तन-मनन करना भी मनोगुप्ति में काफी सहायक सिद्ध हो सकता है।

मनगुप्ति का साक्षात् फल एकाग्रता हासिल करना है। एकाग्रता प्राप्त कर लेने पर साधक संयम की विशुद्ध-निर्दोष आराधना कर सकता है। बिखरा हुआ मन शक्तिहीन होता है और केन्द्रित मन, एकाग्र मन शक्ति का पुञ्ज बन जाता है।

(2) **वचनगुप्ति**—सर्वथा मौन रहना और आगामानुकूल संयत भाषा बोलना ये दोनों ही वचनगुप्ति के स्वरूप हैं। वचन गुप्ति से साधक निर्विकारता को प्राप्त करता है, कषायों को कुछ अपने वश में कर लेता है। फिर वह कषाय-नोकषाय के प्रवाहों में नहीं बहता है। विकारों से तो बुद्धि चञ्चल होती है। निर्विकार हो जाने पर मन शान्त रहता है। जब मन शान्त हो जाता है तब साधक की

प्रसन्नता व समाधि बनी रहती है और साधना उत्तरोत्तर उच्च शिखर पर चढ़ती जाती है।

(3) **कायगुप्ति**—शरीर की क्रियाओं से निवृत्त होना कायगुप्ति है। काया से छहकाय जीवों की हिंसा-प्राणातिपात से निवृत्त होना कायगुप्ति है। अनावश्यक आकुञ्चन-प्रसारण आदि कायिक क्रियाओं से निवृत्ति को कायगुप्ति कहा गया है। काया की स्वच्छन्दता को रोकना कायगुप्ति है। कायगुप्ति का तात्पर्य काया पर संयम रखना, नियन्त्रण करना है। काया से किसी को नहीं मारना, नहीं पीटना, नहीं सताना, नहीं पीड़ा देना तथा नहीं हिंसा करना कायगुप्ति का एक रूप है।

कायोत्सर्ग ही पूर्ण कायगुप्ति है। कायोत्सर्ग करना एक प्रकार की कायगुप्ति है, जिसका संयमी साधक दिन में अनेकबार, हर प्रवृत्ति के पश्चात् अभ्यास करते रहते हैं। इस अभ्यास का लक्ष्य सम्पूर्ण कायगुप्ति को प्राप्त करना ही होता है। यह उनकी कायगुप्ति रूप साधना ही समझनी चाहिए। चञ्चलतापूर्वक प्रवृत्ति, अविवेकपूर्वक प्रवृत्ति तथा अनावश्यक प्रवृत्तियों-चेष्टाओं को रोकना कायगुप्ति है। नियम-मर्यादा के अनुसार काया की प्रवृत्ति करना भी कायगुप्ति का ही रूप है।

कायगुप्ति से पापास्रवों से निवृत्ति एवं संवर की उपलब्धि होती है। मन एवं वचन स्थिर होने पर काया की स्थिरता आसान हो जाती है। फिर तीनों योग स्थिर होकर साधक की साधना तीव्र गति से आगे बढ़ती है। मन-वचन-काया की गुप्ति साधक को असंयम में भटकने से बचाती है।

सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक् चारित्र्य ये तीनों मिलकर मोक्ष का मार्ग बनते हैं। मोक्ष तक पहुँचने के लिए सम्यग्दर्शन तथा सम्यक् चारित्र्य की उत्कृष्ट आराधना चाहिए, परन्तु सम्यग्ज्ञान की जघन्य आराधना यानी मात्र नवतत्त्व, षट् द्रव्य तथा समिति-गुप्ति का ज्ञान होने पर भी जीव मोक्ष प्राप्त

कर सकता है। यह बात समिति-गुप्ति की उपयोगिता और उसके महत्त्व को प्रदर्शित करती है कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए समिति-गुप्ति का ज्ञान और उसका सम्यक् पालन सबसे आवश्यक है। अन्य अधिक ज्ञान नहीं भी हो तो भी जीव मोक्ष तक पहुँच सकता है, पर समिति-गुप्ति के ज्ञान के अभाव में मोक्ष सम्भव नहीं है।

इस प्रकार से देशविरति श्रावक-श्राविका

भी समिति-गुप्ति के पालन का यथाशक्य अभ्यास करते-करते, पूर्ण रूप से समिति-गुप्ति का पालन करने वाले सर्वविरति साधु-साध्वी बनकर अपनी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। मोक्ष मञ्जिल पहुँच सकते हैं।

-पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
467-ए, 7 वीं 'ए' रोड, सरदारपुरा,
जोधपुर-342003 (राज.)

मनीषियों की दृष्टि में आचार्य हस्ती

श्री सुरेशचन्द्र धींग (संकलन)

- ❁ 'पुरिसवरगंधहस्ती'-हाथियों में जिस प्रकार 'गन्धहस्ती' की श्रेष्ठता स्वीकृत है, उसी प्रकार वे पुरुषों में श्रेष्ठ थे। -आचार्य आत्मारामजी
- ❁ प्रथम दर्शन में ही मैं उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ। उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाएँ मेरे जीवन की अनमोल धाती बन गईं। -आचार्य देवेन्द्रमुनिजी
- ❁ विशुद्ध ज्ञान और निर्मल आचरण के पक्षधर आचार्य श्री हस्ती ने जिनशासन में जो सेवाएँ अर्पित की, वे सदा प्रेरक रहेंगी। -आचार्य नानालालजी
- ❁ ज्योतिर्धर आचार्यों की आठ गणिसम्पदाओं से युक्त त्याग, तप, स्वाध्याय, प्रवचन, प्रभावना एवं अनाग्रहवृत्ति के मूर्तिमन्त स्वरूप।
-आचार्य सुदर्शनलालजी
- ❁ छह दशक तक निरतिचार आचार्य पद निर्वहन तथा 13 दिवसीय तप-संधारा, पिछले 200 वर्षों के इतिहास में दोनों घटनाएँ अद्वितीय हैं।
-मुनि घेवरचन्द्रजी 'वीरपुत्र'
- ❁ जिनशासन की अमूल्य निधि, संयम-साधना के महास्रोत, ज्ञानसूर्य, महायशस्वी उपमातीत व्यक्तित्व। -प्रवर्तिनी साध्वी यशकँवरजी
- ❁ We are deeply grateful to the Acharya Shri

for the valuable and inspiring contribution to Jain history and philosophy.

-Padma Vibhushan Dr. Daulat Singh Kothari
(Scientist & Educationist)

- ❁ निर्भीक, तेजस्वी एवं फक्कड़ सन्त। उनकी दृष्टि में राजा-प्रजा, अमीर-गरीब, वर्ण-जाति का कोई भेद नहीं था। -पद्मभूषण देवेन्द्रराज मेहता
- ❁ वे अहिंसापरक एवं अनेकान्तवादी क्षमाशील श्रमण परम्परा के प्रामाणिक एवं मानक युगपुरुष थे।
-डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी (विधिवेत्ता एवं उच्च राजनयिक)
- ❁ उनके मुखारविन्द से निकला हर शब्द मन्त्र और हर कार्य चमत्कार था।
-रतनलाल सी. बाफना (समाजसेवी और अहिंसा-तीर्थ के संस्थापक)
- ❁ अप्रमत्तता, निर्लिप्तता और असाम्प्रदायिकता की प्रतिमूर्ति। उनकी कथनी और करनी में मैंने एक प्रतिशत भी अन्तर नहीं पाया।
-मोफतराज पी. मुणोत (समाजसेवी एवं उद्योगपति)
- ❁ विराट् मेधा, प्रज्ञा और दिव्य व्यक्तित्व की तेजस्विता से पूर्ण अलौकिक सदगुरु। धर्म के दस उत्तम लक्षणों के मूर्त रूप।
-प्रो. कल्याणमल लोढ़ा (साहित्यकार एवं शिक्षाविद्)
- ❁ -अरिहन्त गारमैदस, बम्बोर, उदयपुर (राज.)

चञ्चलता में उपलब्धि नहीं

नेहा चोरड़िया

ठाणांग सूत्र के तीसरे ठाणे में 'तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते' मण.... प्रणिधान तीन प्रकार का बताया-मन, वचन, काया का। प्रणिधान का सुन्दर विवेचन जीवन में प्रेरणा प्रदान करता है। प्रणिधान दो प्रकार के हैं- सुप्रणिधान, दुष्प्रणिधान। सुप्रणिधान निर्मलता है, समाधि है। समाधि से समाधान मिलता है। चञ्चलता में उपलब्धि नहीं। कोई भी अच्छी बात, उपलब्धि, ज्ञान समाधि की अवस्था में ही प्रस्फुटित होता है।

अवधान, समाधान, प्रणिधान-समाधि के सूचक है। अवधान अर्थात् जागृति। जो जागृत है उसे ही समाधान प्राप्त हो सकता है। जो सोता है उसे समाधान नहीं मिल सकता। सुप्तावस्था में कुछ भी पता नहीं चलता। जो प्रत्येक घटना के प्रति, प्रत्येक स्थिति के प्रति जागरूक है वही समाधि की दिशा में जा सकता है। समाधि में जाने वाला बाहरी वस्तुओं का भार नहीं ढोता। जिस व्यक्ति का अन्तःकरण, अन्तर्दृष्टि परम से जुड़ जाती है उसकी स्मृति में बाहरी बातें ज़्यादा नहीं रहतीं। जो सत्य की खोज में लग जाता है उसकी स्मृति का क्षेत्र भी भिन्न हो जाता है। वह जड़ की, वस्तु की स्मृति से अलगाव कर पाता है।

दूसरा शब्द है समाधान-जब तक स्वयं से समाधान नहीं तब तक समाधि नहीं। मैं कौन हूँ? कैसा हूँ? जब तक दूसरे से समाधान तब तक समाधान नहीं। स्वयं का परिचय स्वयं से हो।

सुप्रणिधान यानी चित्त की निर्मलता, समाधि की अवस्था है, एकाग्रता है। एकाग्रता दुष्प्रणिधान में भी है, जैसे उदाहरण से देखें-राम लक्ष्मण और सीता के साथ जा रहे थे। पम्पा सरोवर पर बगुला एक टाँग पर खड़ा था, तब राम ने लक्ष्मण से कहा-

पश्य लक्ष्मण! पंपायाम्, बकः परमधार्मिकः।
शनैः शनैः पदं धत्ते, जीवानां वधशंकया॥

देख लक्ष्मण! पम्पा सरोवर पर एक टाँग पर बगुला तपस्यारत खड़ा है, कितना धार्मिक हो गया है, चलता है तो इतनी सावधानी से कि कोई जीव कुचल न जाए साधु जैसे ईर्या समिति का पालन कर रहा है।

राम के कथन को सुनकर मछली ने प्रतिवाद किया-

बकः किं वर्ण्यते राम! येनाऽहं निष्कुलीकृता।
सहचारी विजानीते, चारित्रं सहवासिनाम्॥

हे राम! आप बगुले की प्रशंसा कर रहे हो, पर इसने मेरे कुल को नष्ट कर दिया है। आप इसके क्रियाकलाप से अनजान हो। सहचारी के चरित्र को सहवर्ती ही जान सकते हैं। अतः श्रेष्ठता को वही प्राप्त कर सकता है, जिसके मन, वचन और काया सुप्रणिधान युक्त हो।

काकचेष्टा बकध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थि-पंचलक्षणम्॥

विद्यार्थी के पाँच लक्षणों में भी बगुले का ध्यान एकाग्रता के लिए बताया। एकाग्रता साधना का पहला चरण है। शुभ में एकाग्र होना धर्मध्यान-शुक्लध्यान है और अशुभ में एकाग्र होना आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान है। एकाग्रता के बिना तो संसार का कोई कार्य नहीं हो सकता। कबूतर पर हमला करने के लिए बिल्ली एकाग्र हो जाती है। टी.वी. मैच देखते समय एकाग्रता, तल्लीनता रह सकती है, पर अध्यात्म की गहरायी में जाने के लिए जिसमें राग नहीं, द्वेष नहीं जगे ऐसे आलम्बन पर मन को एकाग्र कर समाधि को पुष्ट करना होता है। उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन की 54वीं पृच्छा से समाधान मिलता है।

मणगुत्तयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?
मणगुत्तयाए णं एगगं जणयइ। एगगचित्ते णं जीवे
मणगुत्ते संजमाराहए भवइ॥

अर्थात् मनोगुप्ति से जीव को क्या प्राप्त होता है? मनोगुप्ति से जीव एकाग्रता को प्राप्त करता है और एकाग्रचित्त वाला जीव संयम का आराधक होता है।

तथा मन समाधारणता से भी जीव क्या प्राप्त करता है? एगगं जणयइ, एगगं जणइत्ता णाणपज्जवे जणयइ, णाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ, मिच्छत्तं च णिज्जेइ॥ (उत्तराध्ययन सूत्र 29/57) मन को समाधि में स्थिर करने से एकाग्रता की प्राप्ति तथा एकाग्रता से ज्ञान-पर्याय अर्थात् ज्ञान की अपूर्व शक्ति प्राप्त होती है। जीव मनोगुप्ति, मन समाधारणता से एकाग्रता को प्राप्त करता है ध्यान तभी घटित हो सकता है।

आस्रव का निरोध किए बिना समाधि के क्षेत्र में प्रवेश नहीं हो सकता और समाधि के बिना प्रज्ञा के क्षेत्र में नहीं उतर सकते। धर्म की समीक्षा प्रज्ञा से ही सम्भव है। 'पण्णा समिक्खए धम्मं' की सार्थकता के लिए शील, समाधि और प्रज्ञा का पथ उपलब्ध होता है। आस्रव का निरोध करने के लिए उत्तराध्ययन सूत्र 30/2 कह रहा है-

पाणिवह-मुसावाया, अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ।
राईभोयण-विरओ, जीवो होइ अणासवो॥

जीव अनास्रवी कैसे बनता है? प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्त, मैथुन और परिग्रह इन पाँचों से विरत होने पर ही जीव अनास्रवी होता है। इससे अध्यात्म की गहराई में पहुँचने का रास्ता सुलभ हो जाता है। अरे! जहाँ पर हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन और परिग्रह की इतनी लहरें हों, इतनी तरंगें हों, इतनी उर्मियाँ हों वहाँ अध्यात्म का रास्ता ही नहीं दिख सकता। पूज्यपादजी ने लिखा-

रागद्वेषादि-कल्लोलैरलोलंयन्मनोजलम्।

स पश्यत्यात्मनस्तत्त्वं तत्तत्त्वं नेतरो जनः॥

एक शान्त समुद्र, एक तूफानी समुद्र है। कोई तूफानी समुद्र में मुँह देखना चाहे तो नहीं देख सकते। जहाँ तूफान नहीं, तरंग नहीं, उर्मियाँ नहीं, कल्लोलें नहीं जल शान्त हो गया, वहाँ आदमी अपना मुँह देख सकता है। आत्मा को समुद्र मारने और उसमें राग-द्वेष का इतना

बवण्डर हो तो भीतर देख नहीं सकते। तूफान शान्त हो तब आत्मा के दर्शन हो सकते हैं।

तूफान शान्त करने के, तरंगों को रोकने के तरीके बहुत सुन्दर, सूक्ष्म, गहन रहस्य भगवान महावीर की वाणी से प्राप्त होते हैं। सबसे पहले-

(1) सप्त कुव्यसन का त्याग।

(2) पाँच अणुव्रतों का पालन।

(3) पाँच महाव्रतों का पालन।

ये तीनों श्रेणियाँ हैं। जिस साधक की जितनी अपनी क्षमता है उतना पालन कर अपनी समता को विकसित कर सकते हैं। जैसे एक भेड़पालक बकरियों को रोज चराने के लिए ले जाता और शाम में पुनः एकत्रित कर घर लौटता। जंगल बहुत बड़ा था, अतः वह रोज थक जाता, परेशान हो गया तब उसने सोचा अब रोज की खटपट को मिटा दिया जाए, अतः उसने एक बाड़ा बना दिया (बाउण्डी वॉल) और उसकी थकान थोड़ी कम हुई। फिर सोचा यह बाड़ा भी बड़ा है और थोड़ा छोटा बाड़ा बना दिया फिर और छोटा कर दिया। फिर भी उसको घूमना पड़ रहा था तब एक-एक खूँटी लगा दी। ये कौन? बकरियाँ कौन? बाड़ा कैसा? खूँटी कैसी?

समझाया उपकारी गुरु भगवन्तों ने ये बकरियाँ हैं मन। केवल संकल्प-विकल्प में, विचारों में, कल्पनाओं में, स्मृतियों में भटकता रहता है और मानसिक अस्वास्थ्य को जन्म देता है। तब इसे सबसे पहले सप्त कुव्यसन के त्याग की बाड़ को बाँधा तो संकल्प-विकल्प कम हुए। मन का बाहर दौड़ना कम हुआ। तब पाँच अणुव्रतों से मर्यादा सहित जीवन जीने से और संकल्प-विकल्प, कामनाएँ कम हुई और पाँच महाव्रत में तो आवश्यक साधन सामग्री मात्र रहने से इच्छाओं पर रोक लगी, संकल्प-विकल्प और कम हो गए तब शील के पालन से समाधि पुष्ट करना सरल हुआ, क्योंकि मन भटकता है इच्छाओं के कारण, कामनाओं के कारण। समाधि खूँटी है, शील के पालन से नैतिक जीवन अच्छा

हुआ, संकल्प-विकल्प घटे। मन के बाहर भटकने के साधन कम हुए तो समाधि को साधना-आसान हुआ।

फिर एक आलम्बन पर अभ्यास प्रारम्भ होता है- श्वास का आलम्बन-एक पुद्गल पर दृष्टि को अनिमेष रखना। मन, वचन और काया को साधना। द्रव्य सामायिक की शुद्धि का अभ्यास होता है।

मन, वचन, काया और श्रोत्रेन्द्रिय आदि पाँच इन्द्रिय को वश में रखे तो संवर की साधना प्रारम्भ होती है। क्योंकि जिसे भवभ्रमण का अन्त करना है उसके लिए उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्याय की इस गाथा में कहा गया है-

जहा सुई ससुत्ता, पडिया वि न विणस्सइ।

तहा जीवे ससुत्ते, संसारे न विणस्सइ।।

अर्थात् जिस प्रकार सूत्र सहित सूई कहीं गिर जाने पर भी विनष्ट नहीं होती, उसी प्रकार ससूत्र (शास्त्र ज्ञान सहित) जीव संसार में विनष्ट नहीं होता।

सूई धागे में पिरोए जाने पर गुम नहीं होती, पर इसका गहन अर्थ क्या है? इस गाथा का रहस्य क्या है? सूई में धागा कब पिरोया जा सकता है? जब हाथ निष्कम्प हो, हाथ ही क्या पूरा शरीर अचल हो, अडोल हो और दृष्टि एकाग्र हो तब साधारण सी सूई में धागा पिरो सकते हैं तो जीव में श्रुत का धागा कब पिरो सकते हैं? साधारण-सी सूई के लिए भी तन स्थिर चाहिए, दृष्टि एकाग्र चाहिए तो जीव में श्रुत का धागा पिरोने के लिए मन, वचन, काया के परिस्पन्दनों का संवर हो जाए। काया के बारह दोषों से छुटकारा, वचन के दस दोषों और फिर मन का मौन घटित होकर मन के दोषों से छुटकारा हो जाए तब जीव में श्रुत का धागा पिरोया जा सकता है। अतः साधना में उपयुक्त सूत्र है- 'ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं' जिसका भावार्थ है-

अविचल तन है ठाणेणं, मौन है मोणेणं।
अचंचल मन है ज्ञाणेणं, रहस्य खुले गुरु चरणेणं।।

काया से स्थिर रहकर काया के दोष से छुटकारा, मौन से वचन के दोष से छुटकारा, पर मन के दोष से

छुटकारा पाने के लिए पहला दोष अविवेक से छुटकारा पाना अनिवार्य है। अविवेक के दोष से जड़ और चेतन का भेदविज्ञान होने पर छुटकारा होता है। क्योंकि मन चञ्चल होता है इच्छा के द्वारा। जड़ में जीवन बुद्धि एवं भोग में जीवन बुद्धि से मन चञ्चल होता है। हम पकड़ना चाहते हैं मन को। वह हाथ में कैसे आएगा?

एक पंखा तेजी से चल रहा था। एक ग्रामीण आया। उसे इतनी तेज हवा अच्छी नहीं लगी। उसने सोचा पंखे को बन्द कर दूँ। उसके हाथ में लाठी थी। वह उठा और लाठी को पंखे से अड़ा दिया। लाठी भी लड़खड़ायी और पंखे की ताड़ियाँ भी लड़खड़ायी। उसने यह सोचकर लाठी नीचे कर दी कि सम्भवतः पंखा रुक गया है। पंखा फिर चलने लग गया। फिर तेज हवा आई। वह घबरा गया। उसने पंखे पर लाठी से दो चार प्रहार किए। लाठी भी टूट गई और पंखा भी क्षतिग्रस्त हो गया। उसने सोचा पंखा जिद्दी है। इतना करने पर भी बन्द नहीं होता।

क्या हम भी ऐसा ही नहीं कर रहे हैं? मन का पंखा चल रहा है। हम उसे बन्द करना चाहते हैं, पर स्विच ऑफ करना नहीं चाहते। जिस प्रेरणा से मन का पंखा गतिशील हो रहा है, उस प्रेरणा को रोकना नहीं चाहते। पंखा चलता है बिजली के प्रवाह से। स्विच ऑन करते ही बिजली प्रवाहित होने लग जाती है। उसको रोके बिना पंखा नहीं रुक सकता। ताड़ियाँ स्वतः नहीं चलती। वे चलती हैं पीछे की प्रेरणा से। जब तक वह प्रेरणा रहेगी, पंखा चलता ही रहेगा। हम कह देते हैं-पंखा धूर्त है, चञ्चल है, बन्द नहीं होता। कैसे होगा बन्द?

हम अनपढ़ ग्रामीण की भाँति मन के साथ वही व्यवहार करते जा रहे हैं। सीधा मन को रोकने का प्रयत्न करते हैं। लाठी से, जोर जबर्दस्ती से उसे रोकना चाहते हैं, पर वह नहीं रुकता। मन का पंखा तब बन्द होगा जब उसको गति देने वाली प्रेरणा को रोक देंगे। वह प्रेरणा है- इच्छा। इच्छा का वेग मन को वेग दे रहा है। इच्छा की विद्युत् के आवेश आते हैं, उसकी तरङ्गे आती हैं और मन बेचारा घूमने लग जाता है। इच्छा दिखाई नहीं देती।

वह विद्युत् का आवेश दिखाई नहीं देता। ताड़ियाँ दिखाई देती हैं। आदमी दस वर्ष, पचास वर्ष या सौ वर्ष भी लड़ता चला जाए, कोई परिणाम नहीं आएगा। वह लड़ाई तब बन्द होती है जब इच्छा को पकड़ लिया जाता है। इच्छा है तो प्रमाद भी होगा, कषाय भी होगा, योग और चञ्चल भी होंगे। इसलिए इच्छा पर अनुशासन करना बहुत जरूरी है। कामना के वशीभूत होकर पग-पग पर व्यक्ति विषाद को प्राप्त करता है। दशवैकालिक सूत्र के दूसरे अध्ययन की पहली गाथा से स्पष्ट होता है-

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारणं।
पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ॥

अर्थात् जो कामनाओं का निवारण नहीं करता वह श्रमणधर्म का पालन कैसे कर सकेगा? वह तो संकल्प के वश होकर पद-पद पर विषाद को प्राप्त करता है।

आचारांग सूत्र 2/5 से स्पष्ट है-कामकामी खलु अयं पुरिसे, से सोयइ, जूरइ, तिप्पइ, परितप्पइ। आययचक्ख लो ग विपस्सी लो गस्स अहोभागं जाणइ, उड्ढं भागं जाणइ, तिरियं भागं जाणइ, गढ्दि ए अणुपरियट्टमाणे। संधिं विदित्ता इह मच्चिएहिं, एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए। अर्थात् जो पुरुष कामभोग की कामना रखता है, वह परितृप्त नहीं हो सकता। वह शोक करता है, शरीर से सूख जाता है, आँसू बहाता है, पीड़ा और परिताप से दुःखी होता रहता है। आयतचक्षु लोकदर्शी लोक के अद्योभाग को, ऊर्ध्वभाग को, तिरछे भाग को जानता है। कामभोग में गूढ़ हुआ आसक्त पुरुष संसार में पुनः चक्कर काटता रहता है। यहाँ मनुष्य मरणधर्मा शरीर की सन्धि को जानता है। वह वीर प्रशंसा के योग्य है जो बद्ध को मुक्त करता है।

कामना ही दुःख है। कामनाओं से ऊपर उठने के लिए पदार्थ जगत् की सच्चाई को जानना होगा, अनुभव करना होगा और उसके लिए वीतराग ध्यान साधना में श्वास का आलम्बन सबसे पहले लिया जाता है।

जिसमें कर्तृत्व, भोक्तृत्व भाव नहीं होता ऐसा शुद्ध आलम्बन है श्वास। जिसमें राग-द्वेष नहीं होता, अच्छे-बुरे, प्रियता-अप्रियता के भाव नहीं होते ऐसा शुद्ध आलम्बन है श्वास।

श्वास का थोकड़ा पढ़ना धर्म हो सकता है तो श्वास को देखना, श्वास का अनुभव कर कामनाओं से ऊपर उठ जाना क्या धर्म नहीं है?

धर्म एक व्यापक शब्द है। सन्त-सती भगवतियों पृच्छा करते हैं धर्मध्यान चल रहा है। नय-निक्षेप की शैली से देखें तो नैगम नय की अपेक्षा सप्त कुव्यसन का त्याग भी धर्मध्यान है तो जाप करना, तप (अनशन आदि) करना, सामायिक करना भी धर्मध्यान है, पर एवंभूत नय की अपेक्षा धर्म अर्थात् स्वभाव ध्यान अर्थात् एकाग्रता-स्वभाव में एकाग्र होना धर्मध्यान है।

द्विविध धर्म की बात से हम सुपरिचित हैं ही, पर उसी ठाणांग में त्रिविध धर्म की बात बतायी है।

तिविहे भगवया धम्मे पण्णत्ते तं जहा-सुअज्झाइए, सुज्झाइए, सुतवस्सिए। जया सुअहिज्झियं भवइ तथा सुज्झाइयं भवइ, जया सुज्झाइयं भवइ तथा सुतवस्सियं भवइ, से सुअहिज्झिए सुज्झाइए सुतवस्सिए णं भगवया धम्मे पण्णत्ते। अर्थात् भगवान ने तीन प्रकार का धर्म कहा-सु-अधीत-समीचीन रूप से अध्ययन किया गया, सु-ध्यान-समीचीन रूप से ध्यान किया हुआ और सुतपस्थित-सुआचरित-समीचीन रूप से आचरण में उतरा हुआ। जब धर्म सुअधीत होता है तब वह सुध्यात होता है, जब वह सुध्यात होता है तब वह सुतपस्थित होता है। उत्तराध्ययन सूत्र के 9वें अध्ययन में-

मासे-मासे उ जो बाले, कुसग्गेणं तु भुंजए।
न सो सुयक्खायधम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं॥

अर्थात् जो अज्ञानी जीव एक-एक माह में कुश के अग्रभाग जितना आहार करता है वह सु-आख्यात धर्म की सोलहवीं कला को भी स्पर्श नहीं करता है। तीन प्रकार का धर्म स्वाख्यात धर्म बताया है। जिसे भगवती

के माध्यम से

सवणे नाणे विण्णाणे

↓ ↓ ↓

श्रवण ज्ञान विज्ञान कह दिया है।

जिसे भव-भव के रोग का समूल नाश करना है उसे स्वाख्यात धर्म की आराधना करनी होगी। इतिहास स्पष्ट करता है-धन्ना सार्थवाह के भव में सम्यक्त्व प्राप्ति से नवम भव में ऋषभदेव भगवान का जीव सुविधि वैद्य के पुत्र के रूप में उत्पन्न हुआ तथा उनका नाम जीवानन्द रखा गया। बाल्यकाल से छह मित्र संग में बड़े हुए। वैद्य के रूप में सेवा करते हुए जीवानन्द अपने कार्य में निष्णात बने। एक प्रतिमाधारी सन्त वहाँ पहुँचे। उनके शरीर में कीड़े पड़ गए थे। उन्हें देख उन मित्रों ने वैद्य जीवानन्द को चिकित्सा करने की प्रेरणा दी। कीड़े त्वचा, मांस और हड्डी तक फैल चुके थे। जीवानन्द ने मित्रों के सहकार से उपचार की आवश्यक सामग्री लक्षपाक तेल, रत्नकम्बल और गोशीर्ष चन्दन जुटाई और उनके शरीर पर लक्षपाक तेल की मालिश की। मालिश करके शरीर पर रत्नकम्बल ढक दिया। तेल की गर्मी से त्वचा के कीड़े निकलकर बाहर आ गए और रत्नकम्बल पर लग गए। उस रत्नकम्बल को तिर्यञ्च के मृत कलेवर पर रखने से वे कीड़े उस कलेवर में चले गए। मुनि के शरीर पर गोशीर्ष चन्दन का लेप लगाने से उन्हें शान्ति मिल गयी। पुनः लक्षपाक तेल की मालिश से मांस के कीड़े निकल गए, रत्नकम्बल से कीड़ों को मृत कलेवर में छोड़ गोशीर्ष चन्दन की मालिश कर दी गई। तीसरी बार इसी प्रक्रिया से हड्डियों के कीड़े भी निकल गये और मुनि पूर्ण स्वस्थ हो गए।

यहाँ यह विचारणीय है कि क्या केवल त्वचा के कीड़े निकलने से मुनि स्वस्थ हो जाते? आंशिक स्वस्थता कुछ काल के लिए भले ही आ जाती, किन्तु अन्दर के कीड़े पुनः त्वचा को रोग ग्रस्त कर देते। क्या सीधे हड्डी के कीड़े निकाल कर बाहर वाले कीड़ों को निष्प्रभावी नहीं किया जा सकता? कदापि नहीं, क्रम से

ही कीड़े निकालना शक्य था। त्वचा के कीड़े निकलने से मांस एवं हड्डी के कीड़ों की शक्ति घटती है, मांस के कीड़े निकलने से त्वचा की स्वस्थता और परिपुष्ट होती है और हड्डी के कीड़ों की ताकत को भी आघात पहुँचता है। हड्डी के कीड़े निकलने से मांस और त्वचा को और पुष्टि मिलती है। रोग का समूल नाश हो जाता है।

यह अति प्राचीन घटना आध्यात्मिक क्षेत्र में आज भी प्रेरणा प्रदान करती है। अन्तर के रोग को निकालने के लिए भी मुख्यतः तीन स्तर के कीड़ों को निकालना अनिवार्य है। प्रथम स्तर है आजीविका के साधनों में अनैतिकता (दूषण), कायिक, वाचिक स्तर की दुष्प्रवृत्तियाँ। भीतरी दुर्भावना से ही ये सब दोष पैदा होते हैं, पर उस दुर्भावना के नाश के लिए पहले बाहरी स्तर का सुधार अनिवार्य है। बाहरी सुधार को शील के नाम से आगमकारों ने व्याख्यायित किया है। उस शील पर विचार करने के पश्चात् भीतरी कीड़ों के निकन्दन का उपाय भी देख लें। मांस के कीड़े मुख्यतः मानसिक प्रदूषण को द्योतित कर रहे हैं। जिसके उपचार के लिए अकुशल मन का निरोध, कुशल मन का उदीरण अनिवार्य है। मन को वश में करने के लिए सतत जागृति अत्यन्त अनिवार्य है। काया और मन की अशुद्धि कम होने पर जीव राग-द्वेष की ग्रन्थि तक पहुँच जाता है, मार्गानुसारी के बोल उसे पूरी तरह स्पष्ट कर ही रहे हैं। द्रव्य चारित्र का आराधक बन साधक नवग्रैवेयक तक भी चला जाता है। इसे सिद्धान्त की भाषा में श्रुत सामायिक कहा जाता है, श्रुतमयी प्रज्ञा है, चिन्तनमयी प्रज्ञा भी है, पर अनुभूतिपरक प्रज्ञा नहीं, भावित प्रज्ञा नहीं। त्वचा और मांस तक के कीड़े निकल गए, शील और समाधि की साधना हो गई, समाधि से शील परिपुष्ट हो गया, किन्तु प्रज्ञा के बिना, अनुभूति वाली प्रज्ञा, भावना वाली प्रज्ञा के बिना दुःख का आत्यन्तिक क्षय नहीं हुआ। अनन्त बार नवग्रैवेयक की यात्रा करने वाला, ऊँचे देवलोक में शुक्ल लेश्या, बाहर की अपेक्षा अल्प कषायी सुदीर्घकाल (शास्त्रीय भाषा में 31 सागर) तक

भी बाहर की समाधि सहित रहा, पर हड्डी के कीड़े निकले नहीं, राग-द्वेष की गाँठ खुली नहीं। रोग की जड़ कायम रही, पुनःमाँस और त्वचा में कीड़े उत्पन्न हो गए। वीतराग ध्यान की साधना गहराई में प्रवेश करने की साधना है। प्रज्ञा जागृति के पश्चात् शील और परिपुष्ट हो जाता है।

अणुव्रत, महाव्रत भी उसी शील में समाए हुए हैं।

तब समाधि भी सामान्य नहीं और विशिष्ट एवं विशिष्ट होती जाती है।

अतः वीतराग ध्यान साधना प्रायोगिक साधना है। जिसका अनुभव कर 'अप्पणा सच्चमेसेज्जा' अपने सत्य का अन्वेषण कर परम सत्य का साक्षात्कार किया जा सकता है।

-जलगाँव (महाराष्ट्र)

आगामी पर्व तिथि

द्वितीय आश्विन कृष्णा 14, गुरुवार	15.10.2020	चतुर्दशी
द्वितीय आश्विन कृष्णा अमावस, शुक्रवार	16.10.2020	पक्खी
द्वितीय आश्विन शुक्ला 7, शुक्रवार	23.10.2020	आयम्बिल ओली प्रारम्भ
द्वितीय आश्विन शुक्ला 8, शनिवार	24.10.2020	अष्टमी
द्वितीय आश्विन शुक्ला 10, सोमवार	26.10.2020	आचार्य पूज्य श्री भूधरमलजी म.सा. का स्मृति दिवस
द्वितीय आश्विन शुक्ला 14, शुक्रवार	30.10.2020	चतुर्दशी
द्वितीय आश्विन शुक्ला 15, शनिवार	31.10.2020	पक्खी, आयम्बिल ओली पूर्ण
कार्तिक कृष्णा 1, रविवार	01.11.2020	आचार्य पूज्य श्री हमीरमलजी म.सा. का 167वाँ स्मृति दिवस
कार्तिक कृष्णा 8, रविवार	08.11.2020	अष्टमी, आचार्य पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी म.सा. का 219वाँ स्मृति दिवस
कार्तिक कृष्णा 14, शनिवार	14.11.2020	चतुर्दशी पक्खी
कार्तिक कृष्णा अमावस, रविवार	15.11.2020	भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक
कार्तिक शुक्ला 1, सोमवार	16.11.2020	वीर निर्वाण सम्बत् 2547 प्रारम्भ एवं गौतम प्रतिपदा
कार्तिक शुक्ला 3, मंगलवार	17.11.2020	संघ समर्पण दिवस (संकल्प दिवस)
कार्तिक शुक्ला 5, गुरुवार	19.11.2020	ज्ञान पञ्चमी
कार्तिक शुक्ला 6, शुक्रवार	20.11.2020	आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 58वाँ दीक्षा दिवस
कार्तिक शुक्ला 8, रविवार	22.11.2020	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 14, रविवार	29.11.2020	चातुर्मास समापन (चातुर्मासिक पर्व)
कार्तिक शुक्ला 15, सोमवार	30.11.2020	वीर लोकाशाह जयन्ती

Applied Philosophy of Economics of Mahavira

Dr. Samani Shashi Prajna

Introduction

Today we are moving from mono utility to multi-utility. This has led us towards the burning problem of global warming and ever increasing number of psychosomatic diseases. It has also led social inequality. This Economic inequality and vast differences in the mode of consumption are the two curses of our age. Accumulation of wealth on the one side and the lust for worldly enjoyment on the other, are jointly responsible for the emergence of the present day materialistic consumer culture. The wide difference in material possession as well as in the modes of consumption has divided the human race into two categories of 'Haves' and 'Have notes.' At the dawn of human history also, undoubtedly, these classes were existent but never before the vices of jealousy and hatred were as alarming as these are today. Not only inappropriate distribution of wealth but luxurious life led by affluent people these days, is the main cause of jealousy and hatred in the hearts of the poor. That's why Acharya Mahāpragya rightly said, 'Hungry man is the biggest terrorist.' So the need of the hour is to incorporate the new model of Non-violent economics of Mahavira to establish a crimeless and problem free society of eco-friendly co-existence.

Human Centered Economics

Mahavira do believed in the utility of the wealth but at the same time he claimed wealth is always a means and it shouldn't be considered as an end. So Mahavira's Non-violent Economics aims at human centered economics rather than comfort centered economics. He added that while earning

wealth, human values shouldn't be sacrificed. Koutilya said, 'money rules everything.' In my opinion however economics rules everything, the main aim of Non-violent economics is to provide ways and means to fulfill the basic needs of every individual and not the desires. This is the basic difference between Mahavira's concept and the concepts of modern economics. Mahavira's Non-violent Economics emphasizes on the development of compassion and sensitivity along with the pace of economic development in an ethical manner.

Balanced Personality and *Anekāntic* Perspective

Non-violent Economics of Mahavira is potential enough to promote holistic and balanced personality through the development of *anekāntic* perspective. It is really a misbelief that mere money and the fulfillment of desires can bring about happiness. It should be very clear that happiness and contentment are not based on our possessions but upon the kind of attitude or mentality we possess towards materialistic objects. So Mahavira believed in the notion, 'Change your perspective and the world would be changed.' On the basis of this maxim, Non-violent Economics can explore the change of vision at the individual level, can develop the culture of tolerance at familial level, can establish peaceful co-existence at social level and universal brotherhood at national and the international level. It is *anekāntic* perspective which considers each and every thought, speech, action and the concept to be relative. This view of relativity of Mahavira can

awaken the spiritual consciousness along with the materialistic consciousness for the balanced and integrated development of the nation.

Planet, People and profit concern Economics

Let us analyze the applied philosophy of Non-violent Economics in the three fold principle of Mahavira i.e. limited desires, limited consumption and limited accumulation. To this, many persons claim that religious restraints, self-discipline are not productive and are impediment to development. In reality, however it is only when we think in terms of worldly pleasures that they appear to be obstacles. If we consider them from the point of view of human welfare; we would find that they are not obstructive but conducive to development. As Non-violent Economics of Mahavira asks for self profit to be moderated by the concern for others through the self imposed restraint over ones desires, accumulation and consumption which is the basis of eco-friendly social life.

During the process of analytical study of Non-violent Economics., I arrived at the remedy that the cause of entire social inequality lies in discontentment. It is greed which is the mother of all actions. On the one side, this greed is an effective motivator at the same time it can be a worst enemy of the self growth as well as of social development. When this basic instinct of greed overrules, the concern for others seems neglected then it becomes the main cause of social degradation in all walks of life. In I *Uttarādhyayana Sūtra*, 1.18 Mahavira rightly said that desires are endless as the sky. It is greed boosting economy that has brought about one-sided materialistic growth completely obliterating the role of spiritual growth. I believe that 'I

and 'Mine' these are two basic enemies of the self. Unless and until they are not universalized, the dream of peaceful coexistence can't be made real. In *Dasvaikālika Sūtra* १११ *Parigraha* is identified with (*murch* १) attachment. In *Tattvārtha Sūtra* 7.21, also Umasvati has emphatically pointed out that *parigraha* is attachment. For this, we have to apply multi-dimensional perspective rather than mono perspective in all the transactions of life. The notion of multi-dimensional perspective will show us the path towards the holistic solution for the prevailing burning problems of today. Economists especially are needed to brain-wash their entire thought process and decentralize this 'I' and 'Mine' instinct. The narrow centered view of satisfying ones ego, possessiveness and wishes to enjoy the maximum luxuries of the world at the personal level. Unless and until this notion is submitted or directed from one to many, self to society, the dream of Mahavira's Non-violent Economics can't be translated into reality.

Thus as an humanitarian and compassionate philosophy Mahavira's Non-violent Economics can prove to be relevant for shaping global human values in the right perspective and in right direction for sustainable inner and outer peace. The concept of Non-violent economics based on Mahavira's philosophy can act as a tool in establishing social equality. So *ahimsā* in conduct, *aparigraha* or limitation of desires in business, *anekānt* in thought and *Syādvāda* expression highlights the essence of Mahavira's sociological applied philosophy of Non-violent Economics in the world of experience.

-Jain Vishava Bharati, Ladnun (Rajasthan)



आत्म-अमरता के स्पन्दन : आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.

डॉ. मीनाक्षी डाग्रा

अप्रतिम ज्ञानमय, अनवरत क्रियाशील थे वे वरदायी।
श्रद्धेय आचार्य श्री हस्ती, गुरु हमारे प्रेरणादायी।।

‘गुरु’ दो अक्षर का लघुशब्द है, जो विराट्ता को अपने अन्दर समाहित किए हुए है। जो जीवन में अज्ञानरूपी अन्धकार को हटाकर ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं, वे ही गुरु होते हैं। सुनने में यह वाक्य बहुत ही सहज लगता है, लेकिन इसका अनुभव बहुत ही वृहद् और मर्मस्पर्शी होता है। गुरु के सान्निध्य की अनुभूति को शब्दों में अभिव्यक्त करना बहुत ही कठिन प्रतीत होता है। आज तक गुरु के सम्बन्ध में जितना पढ़ा-सुना वह सब उस अनुपम अलौकिक अनुभूति को व्यक्त करने में कम ही प्रतीत होता है। जैसा कि कबीरदास जी ने लिखा है-

“गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु देव को, गोविन्द दियो बताय।।”

सौभाग्य से ऐसे ही गुरुदेव मिले हमें ‘परमश्रद्धेय परमवन्दनीय आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.’ वे जैन धर्म के प्रतिरूप थे, यह कह दूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। वे कहते थे ‘खण निकम्मो नहीं रहणो।’ जैसी कथनी वैसी करनी। जीवन में एक क्षण भी कभी व्यर्थ नहीं गँवाते थे। माला तो सदैव हाथ में रहती थी। आत्मा के सजग प्रहरी थे। वे कठोर जैन आचार को सहज करते हुए, अपनी भक्ति, साधना, ध्यान, स्वाध्याय सभी क्रियाओं का अद्भुत समायोजन कर लेते थे। एक आत्मसाधक योगी और समाज के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ सक्षम आचार्य हर रूप में अनुपम थे। सशक्त अनुशासक और करुणासिन्धु के अद्भुत संगम थे। ज्ञान, क्रिया एवं भक्ति की रत्नत्रयी एक साथ झलकती थी। कठोर स्वानुशासन के साथ जीवन में सहज, सरल, करुणासागर का विरल व्यक्तित्व था। उनकी कार्यशैली

चमत्कृत करने वाली थी। यह तो उस लघुकाया में विराजित वह विराट् आत्मा ही कर सकती थी। उन्हें देखकर लगता था कि ऐसे ही व्यक्तित्व को देखकर मानव मन में अनेक हाथ और अनेक मुख वाले देवों की परिकल्पना उभरी होगी।

शान्त-सौम्य, प्रसन्नवदन, प्रखर तेजोमय छवि के धारक आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के दर्शनमात्र से ही जन-जन धन्य हो जाते थे। जैनधर्म की दिव्यता थी वहाँ, कोई बाध्यता नहीं। केवल अलौकिक दिव्यता का आकर्षण था, गुरुत्वाकर्षण था, जो अनुयायियों, भक्तों को उनके निर्देश मानने के लिए स्वतः स्फूर्त क्रियावान बनाता था। उन महान आत्मज्ञानी के दर्शनमात्र से भक्त निहाल हो जाते। सारे तर्क स्वतः ही निर्मूल हो जाते। केवलज्ञानी हुए होंगे इस बात पर विश्वास करना, श्रद्धा करना स्वतः सहज होता गया। सारी धार्मिक मान्यताएँ बचपन से माँ, दादी, नानी सबसे सुनते थे, कई व्याख्यानों में भी सुना, कई पुस्तकों में भी पढ़ा, कभी मान लेते, कभी बुद्धि तर्क कर बैठती और कोई उन्हें शान्त नहीं कर पाते। लेकिन गुरु मेरे जीवन में सम्यक् श्रद्धा, सम्यग्दर्शन के प्रणेता बने।

जीवन में कुछ ऐसे लम्हे आते हैं, जो जीवन की दशा और दिशा बदल देते हैं। कुछ ऐसी हृदयस्पर्शी अनुभूतियाँ होती हैं, जिन्हें केवल अनुभूत ही किया जा सकता है। उस आनन्द को, मिठास को, तृप्ति को एक अविस्मरणीय अनुभूति को पूर्णतः शब्दों में उकेर पाना तो नामुमकिन ही लगता है। फिर भी उन अविस्मरणीय पलों को साझा करने में भी एक अद्भुत आनन्द की अनुभूति हो रही है। आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब का रेनबो हाउस, जोधपुर में चातुर्मास था। मैं माँ के साथ उनका प्रवचन श्रवण करने गयी। प्रवचन के

पश्चात् प्रत्याख्यान करवाए गए। लोग बड़ी-बड़ी तपस्या के प्रत्याख्यान कर रहे थे। मुझे तो सिर्फ एकाशन के प्रत्याख्यान करने थे, सो बहुत हिचकिचाहट हो रही थी। मङ्गलपाठ के पश्चात् काफी भीड़ थी, फिर भी हिम्मत जुटाकर थोड़ी दूरी से ही आचार्य श्री को एकाशन प्रत्याख्यान करवाने का निवेदन किया। अब जो पल था, मेरे जीवन का वह अविस्मरणीय पल था। मैं हतप्रभ थी, निर्मिमेष उन्हें देखती रही। इतने बड़े आचार्य ने एक साधारण बालिका को सहर्ष प्रसन्नवदन छोटे से प्रत्याख्यान भी करा दिये। इतना ही नहीं मेरी तप की अक्षमता को भाँपते हुए, मुझे बुलाकर कहा, “स्वाध्याय भी एक तप है।” मेरी माँ को कहा-इसे स्वाध्याय की आदत डालो। मैं भावविभोर होकर अभिभूत थी। इतने बड़े आचार्य ने स्वयं मुझसे बात की, मेरा मार्गदर्शन किया। मेरे लिए ये बहुत बड़ी बात थी। घर आकर मैं इठलाते हुए सबको यह सब बता रही थी। मेरी माँ भी बहुत प्रसन्न थी, वे तो वर्षों से उनकी शिष्या हैं। इस पल ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी।

वह चातुर्मास काल मेरे लिए बहुत ही जिज्ञासापूर्ण, उत्सुकता भरा था। मैं अपने कॉलेज का पहला कालांश छोड़कर माँ के साथ व्याख्यान सुनने जाने लगी। आचार्य श्री व्याख्यान कभी-कभी ही देते थे, लेकिन उनके निरन्तर दर्शन करने और थोड़ा-थोड़ा सुनने का सुअवसर मिलने से तथा उनके द्वारा निरन्तर स्वाध्याय की प्रेरणा से धीरे-धीरे जीवन को नयी दिशा मिलने लगी। जीवन में आध्यात्मिकता का रस घुलने लगा, एक अद्भुत आनन्द से अभिभूत था हृदय।

जीवन की इस सरस मृदुलता के लिए मैं अन्तःहृदय से कृतज्ञ हूँ। अपनी माँ के प्रति, जिन्होंने मुझे हस्ती गुरु का सान्निध्य प्रदान किया। लाखों-करोड़ों धन्यवाद भी कम ही पड़ेंगे इसके लिए। वैसे भी जन्म और जीवन के प्रत्येक क्षण के लिए माता-पिता के ऋण से उन्मत्त होना सम्भव नहीं। लेकिन मैं इसे ऋण का नाम नहीं दूँगी। यह तो उनकी असीम कृपा थी, कि उन्होंने

मुझे हस्ती गुरु के रूप में शिक्षागुरु या धर्मगुरु नहीं वरन् आत्मगुरु दिए।

आत्मगुरु से मेरा तात्पर्य है कि उन्होंने मेरी आत्मा को पहचाना और मेरी आत्मक्षमता के अनुसार ही आत्मविकास के निर्देश दिए। यह कोई प्रभावशाली व्यक्तित्व या उच्च पदासीन व्यक्ति को महत्त्व या सम्मान देकर समाज का विकास करना नहीं था, वरन् यह उनका विराट् दृष्टिकोण था कि साधारण लोगों, छोटे बच्चों, युवाओं को प्रभावशाली तरीके से आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करके जैन संस्कृति का विकास करते हुए सामान्य लोगों का भी उत्थान हो सके। मेरे जैसे लाखों शिष्यों का उत्थान करके जैन संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया। अमीर-गरीब, छोटे-बड़े, जैन-अजैन सभी का सामान्य रूप से कृपा कर मार्गदर्शन करते थे। मैं तो बहुत ही सामान्य थी। विशाल धर्म समाज में मुझे कम ही लोग जानते थे और मैं भी सबसे अनभिज्ञ ही थी। यह तो गुरुकृपा ही थी, कि उन्होंने मेरी निष्काम श्रद्धा को स्वीकारा और मेरी भक्ति को पंख दिए। या यूँ कहूँ कि ये वे गुरु थे, जिन्हें स्वयं अपने शिष्यों को जानने का सामर्थ्य प्राप्त था। धर्मगुरु तो केवल धर्म की व्याख्या करते हैं, लेकिन पूज्यवर हस्तीगुरु तो अपने भक्तों की आत्मा में रही क्षमताओं को जानकर उनके अनुरूप ही उनका मार्गदर्शन करते थे। कौन तप कर सकता है, कौन ज्ञान में आगे बढ़ सकता है, कौन चारित्र की कठोरता को अपना सकता है अथवा कौन भक्ति-रस से ही मुक्तिमार्ग खोजने वाला है। इसीलिए तो उनके सान्निध्य में समाज में सम्पूर्ण रत्नत्रयी का समुचित विकास हो पाया। इसे हम उनके अनुयायी श्रमण-श्रमणियों एवं श्रावक-श्राविकाओं अर्थात् चतुर्विध संघ में प्रत्यक्ष देख सकते हैं।

आचार्य श्री तो अनन्त गुणों से विभूषित थे, उनको पूर्ण रूप से जानना और लिखना तो हममें से किसी की क्षमता में नहीं है। हाँ जिन्हें उनका सान्निध्य अधिक समय तक, अधिक निकटता से प्राप्त हुआ, वे

उन्हें अधिक जानने का सौभाग्य प्राप्त कर पाये। मुझे प्रत्यक्ष भौतिक जगत में तो कुछ 5-6 वर्ष ही उनका सान्निध्य प्राप्त हो पाया। सफल व्यक्ति भौतिक देह त्यागने के पश्चात् इतिहास बन जाते हैं, लेकिन 'हस्ती गुरु' का 'ओरा' इतना सशक्त और विराट है, कि वे आध्यात्मिक रूप से आज भी वर्तमान हैं। भौतिक द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की सीमाएँ उनकी हस्ती को न बाँध पायी, न मिटा पायी। आत्मा की अमरता को सैद्धान्तिक रूप में पढ़ा था। हस्ती गुरु ने इस सिद्धान्त को प्रायोगिक रूप से प्रमाणित कर दिया। उनकी आत्मा की अमरता का स्पन्दन हम आज भी अनुभूत कर सकते हैं, मार्गदर्शन पा सकते हैं। वह ज्ञानमय, भक्तिमय, करुणामय आत्मा आज भी विद्यमान है। हस्ती गुरु तो

बारहमासी बहने वाले अमृत निर्झर हैं। उनकी करुणा के निर्झर तक पहुँचने की शक्ति है, हमारी श्रद्धा में। श्रद्धा जितनी गहरी होती है, उतना ही अधिक जीवन प्रशस्त आनन्द के अमृत सागर में अभिषिक्त होता है। गुरु का सान्निध्य और मार्गदर्शन प्राप्त होता है। मैं तो हस्ती गुरु का शिष्यत्व पाकर धन्य हो गई। यह अनुभूति उनके लाखों शिष्यों के हृदय में विद्यमान है। यह अनुभव जीवन में एक अद्भुत विश्वास जगाता है। मेरे गुरुदेव सुख-दुःख में अनवरत होते हैं, मेरे साथ संजीवनी शक्ति के रूप में। उनके चरणों में बारम्बार कोटिशः नमन-वन्दन।

-एम.ए., एम.फिल., पी.एच.डी.,
पाली (राज.)

धर्म भावना

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

कहते हैं "धारण करे सो धर्म"

तात्त्विक बुद्धि से समझें हम इस का मर्म
सच्चा धर्म वही जो हो सत्य, पथ्य, हितकारी
उपदेशक हाश्र राग-द्वेष रहित अविकारी
मोक्ष मार्ग ही है सच्चा धर्म स्वरूप
पर को छोड़ स्व में रहना है श्रुत-चारित्र रूप
सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र में शुद्ध धर्म है समाहित
रत्नत्रय की आराधना करती मोक्ष समक्ष प्रवाहित
शान्ति और समाधि में ही है धर्म की उत्क्रान्ति
पुद्गल से सुख मिलेगा, ये तो बस एक भ्रान्ति
देव गुरु नवतत्त्व पर श्रद्धा रख करना श्रवण है धर्म
चितवन बार-बार कर उर को भरना है सुभक्ति
सुधर्म स्वच्छन्द हो चलने से अशुभ कर्म हैं बन्धते
मिथ्यात्व प्रमाद अधर्म से चारों गतियों में हैं रूलते
सम्यक् प्रयत्न से अब भवसागर है तरना
प्रत्येक क्षण धर्मोपयोग में आवे,
समय व्यर्थ न करना

मोह माया मृगतृष्णा के वन में न भटक जाना
शुद्ध धर्म जल से,
आत्म-कमल को नित विकसाना
चरम लक्ष्य है जीव का शाश्वत पद निर्वाण
बनें सदा हम विवेकी अप्रमत्त भारण्ड के समान
सच्चे धर्म ज्ञान बिना,
बढ़ रहा जड़ पुद्गल का वर्चस्व
भ्रम जाल से मोहित प्राणी लुटा रहा सर्वस्व
धर्म को सम्यक् समझकर अधर्म पर विराम लगाएँ
निज आत्मशक्ति को लिखकर,
घट में धर्म-ध्यान की ज्योति जगाएँ
हृदय हर्षित रहे धर्म में, निर्मल रहे विचार
धर्म पथ को कभी न भूलें, रहें आत्मार्थ अविकार
'धर्मरुचि' ने अप्रमत्त हो 'धर्म भावना' है भायी
अनुप्रेक्षा से आचरित कर त्वरित मुक्ति है पायी
'धर्म भावना' की अनुप्रेक्षा कर ले रे भवी प्राणी!
दिखला रही मुक्ति पथ हमको 'मुदित' जिनवाणी॥

-1101, वुड साइड, जी साउथ गोखले रोड,
प्रभादेवी, मुम्बई-400025 (महाराष्ट्र) 9892417640

बुजुर्ग धरोहर हैं, बोझ नहीं

श्री पदमचन्द गाँधी

भारत में बुजुर्गों के सम्मान की परम्परा रही है और हम इस बात पर गर्व करते रहे हैं कि हमारे देश में नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी की उपेक्षा नहीं करती, बल्कि उन्हें पूरा सम्मान देती है और उनके अनुभवों की कद्र भी करती है। लेकिन बढ़ते बाह्य प्रभावों, धुवीकरण, उदार अर्थव्यवस्था, पाश्चात्य प्रभाव ने आम आदमी की जिन्दगी को तेज बना दिया है। स्पर्द्धा के दौर में व्यक्ति तरक्की के फेर में बहुत कुछ भूलता जा रहा है। रिश्तों को सीमित कर रहा है। हमारे बुजुर्ग अपनी सूझबूझ एवं समझ तथा तजुबों से युवा पीढ़ी एवं घर परिवार को सार्थक दिशा देने वाले होते हैं, लेकिन आज व्यक्ति अपने आप में इतना खो गया है कि उसे अपने बुजुर्गों से मार्गदर्शन प्राप्त करने का समय ही नहीं है। हमें गर्व है कि आज भारत की युवा पीढ़ी पर भारत की कुल जनसंख्या की 10 प्रतिशत आबादी 60 वर्ष के ऊपर वाले बुजुर्गों की छाँव है जो वर्ष 2026 में 17 करोड़ तक हो जायेगी। भारत में रोजाना लगभग 17 हजार नये लोग 60 वर्ष के होकर जुड़ जाते हैं। ऐसे बुजुर्गों का अनुभव, संरक्षण हमारे लिए छत्र छाया का कार्य करता है। लेकिन विडम्बना यह है कि आज हमारे बुजुर्गों की परिवार एवं समाज में उपेक्षा एवं तिरस्कार की घटनाएँ बढ़ती जा रही है, इतना ही नहीं आज बुजुर्ग अपने ही परिवारजनों में बेगाने की जिन्दगी जी रहे हैं।

युवा पीढ़ी जो अपने को व्यस्त मान रही है, जो बुजुर्गों से वैचारिक मतभेद ही नहीं वरन् हर प्रकार की दूरियाँ रखती है, उन्हें सोचने की जरूरत है, क्योंकि कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। यदि परिजन स्वयं के स्वार्थ के लिए इन बुजुर्गों को थोड़ा सम्मान, थोड़ा प्यार, थोड़ा अपनापन तथा थोड़ा समय निकाल कर इनको दे दे तो परिजनों को वह तोहफा ये बुजुर्ग दे सकते हैं जो कभी

वे पैसे के बल पर नहीं खरीद सकते, बस थोड़ा सा त्याग करने की आवश्यकता है। बुजुर्ग हमारे लिए अतिमहत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं, उन्हें निम्नानुसार समझे- **बुजुर्ग हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं**

हमारी संस्कृति एवं पारस्परिक गतिविधियों की रक्षा इन बुजुर्गों के द्वारा ही होती है। खानदान एवं ठिकाने की पहचान इन बुजुर्गों से होती है, जो गुडविल या ख्याति हमारे बुजुर्गों ने, अभाव की जिन्दगी में रहकर कमाई है वह गुडविल आज हम लाखों रुपये कमा कर नहीं प्राप्त कर सकते। जो रिश्ते ये घर बैठे बना लेते थे वे रिश्ते आज हम मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक उपकरण या घूम-घूमकर नहीं बना सकते। जितनी विश्वसनीयता इन लोगों की थी आज हमारी नहीं है। आज परिवारों की नींव खोखली होने का कारण यही है कि हम हमारी संस्कृति को भूल गये हैं। परिवार की नींव को मजबूत करने और बच्चों को रिश्तों की गम्भीरता एवं उनका सम्मान करना सिखाने के लिए घर के बुजुर्गों के साथ समय बिताना जरूरी है। उनकी उपेक्षा के बजाय उन्हें सम्मान दें, उनके संरक्षण की छाँव में रहें तो निश्चित रूप से आप तनाव रहित रहेंगे। उनकी अवहेलना का अर्थ है जीवन के लिए उपयोगी ज्ञान और अनुभवों की अवहेलना। युवा इस बात को सदैव याद रखें कि एक दिन हम भी इस अवस्था को प्राप्त करेंगे और आपके बच्चे आपसे आगे ही होंगे। यदि आज के युवा इस बात को समझ लें तो आपका घर स्वर्ग बन जायेगा। क्योंकि सच्चे अर्थों में बुजुर्ग ही हमारी संस्कृति के रखवाले हैं। यदि बुजुर्गों के साथ बच्चे रहते हैं तो वे अपनी परम्पराओं और संस्कृति के साथ सहजता से ही जुड़ जाते हैं, इसके लिए उन्हें अलग से कोई प्रयास नहीं करना पड़ता।

बुजुर्गों की गोद उर्वरक भूमि की तरह

आज की भागमभाग की जिन्दगी में तथा खासतौर पर उन परिवारों में जहाँ पति-पत्नी दोनों सेवारत हों वहाँ पर बच्चों की देखभाल करने के लिए आया या क्रेच का सहारा लेना पड़ता है, क्योंकि ऐसे अभिभावक अपने बुजुर्गों को बोझ मानकर उनसे अलग रहते हैं, लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि घर के बुजुर्गों की गोद तो उर्वरक भूमि से ज्यादा उपजाऊ है, जहाँ पर बच्चों के संस्कार पल्लवित होते हैं। घर की सुरक्षा के साथ बच्चों की भी सुरक्षा होती है तथा उनका मानसिक विकास तीव्रगति से होता है, क्योंकि ये रिश्तों के बीच में एक पुल का काम करते हैं।

बुजुर्ग तो अपने अनुभवों के चलते-फिरते पुस्तकालय होते हैं। वे बच्चों को रोमाञ्चक, ज्ञानवर्धक, रोचक संस्मरण तथा कहानियाँ सुनाकर, पौराणिक बातें एवं परम्परागत रीति-रिवाज बताकर उन्हें ताजा एवं तर रखते हैं। 'जुग जुग-जिओ' तथा नाना प्रकार के आशीर्वाद के सिञ्चन से बचपन को मजबूत करते हैं। जिनसे बचपन बखूबी पनप सकता है। ऐसा बचपन सौभाग्यशाली है जिसे बुजुर्गों का समर्थ सम्बल मिलता है, जिनकी गोद में बच्चे सोते हैं। ऐसे व्यक्ति निश्चित रूप से जीवन पर्यन्त एक गहरी भावनात्मक सन्तुष्टि एवं दृढ़ता लिए होंगे और जीवन की चुनौतियों का आसानी से सामना करने की स्थिति में भी होंगे।

बुजुर्ग बच्चों के विकास में सहायक

घर में जितने भी बुजुर्ग होते हैं वे अधिकांश पढ़े लिखे होते हैं, अनुभवशील होते हैं। उनकी योग्यता बच्चों की मानसिकता पर अच्छा प्रभाव डालती है। वे सरल तरीके से उन्हें पढ़ा सकते हैं, होमवर्क करा सकते हैं, उनके साथ खेल सकते हैं, गार्डन में ले जा सकते हैं इतना ही नहीं करते हैं, मूल से ब्याज प्यारा होता है। दादा-पोतों की जोड़ी तो दोस्ती की तरह होती है, क्योंकि माता-पिता के समयभाव के कारण या उनके डर के कारण बच्चे सारी बातें दादा को आसानी से शेयर

करते हैं तथा दादा उनकी सभी समस्याओं का निराकरण कर देते हैं कठिन से कठिन बात का हल आसानी से समझा देते हैं। बुजुर्ग उनकी कोमल मानसिकता के कायल होते हैं। उन्हें डाँटते भी हैं तो भी प्यार भी करते हैं। ये सभी बातें बच्चों की मानसिकता पर भावी जीवन की नींव रखने में अपना उल्लेखनीय योगदान दे सकती हैं। बच्चों की शिक्षा एवं संस्कार में उनका अनुकरणीय योगदान रहता है। जो माता-पिता बुजुर्गों का सम्मान नहीं करते उन्हें अलग रखते हैं, वे इस सुख का अनुभव भी नहीं कर सकते। यदि वे ऐसा करते हैं उन्हें साथ रखते हैं तो उन्हें गहरी सन्तुष्टि एवं शान्ति मिलती है और साथ ही जीवन की आपा-धापी में खोए तनावग्रस्त माता-पिता के लिए भी वे एक बहुत बड़ा सम्बल साबित होते हैं।

अनुभवों की पाठशाला

जो व्यक्ति या युवा माता-पिता अपने बुजुर्गों का तिरस्कार करते हैं उन्हें नकारते हैं वे सहजता के लाभ से वञ्चित रह जाते हैं। उनको सिवाय कुण्ठा एवं घुटन के अलावा कुछ प्राप्त नहीं होता है। वे अशान्त तो होते ही हैं साथ में अपनी स्वयं की समस्याओं से घिरे रहते हैं तथा उनका समाधान भी वे नहीं निकाल पाते। कहते हैं बाल सफेद ऐसे ही नहीं होते हैं बड़ा तपना पड़ता है, जीवन को संघर्ष के साथ जीवन यापन करने वाले बुजुर्ग चौपाल पर समस्याओं का हल निकालते हुए पंचायत के बड़े-बड़े फैसले आसानी से कर लेते हैं। उनका अनुभव इतना परिपक्व होता है कि किसी भी समस्या हो बड़े धैर्य के साथ, उसका समाधान एवं तोड़ निकाल लेते हैं, जबकि आज के युवा जल्दबाजी में तथा हाजिर परिणाम के फेर में समस्या को और उलझा देते हैं। यदि ऐसे युवा माता-पिता अपने बुजुर्गों की छत्र-छाया में रहें तो उन्हें कोई समस्या नहीं आयेगी, क्योंकि सम्भालने के लिए बुजुर्ग हैं। यदि आ भी गयी तो उसका समाधान वे आसानी से निकाल कर समस्या का हल कर देते हैं।

परिवार के कुशल मार्गदर्शक

घर के बुजुर्ग अपने अनुभवों के आधार पर परिवार के कुशल मार्गदर्शक भी सिद्ध होते हैं। युवा पीढ़ी के लिए भले ही उन्हें बुजुर्ग नये जमाने के अनुसार ठीक नहीं लगते हों, लेकिन यह सच है जब युवा पटरी से उतर जाता है तो उन्हें लाइन पर लाने का कार्य ये आसानी से कर लेते हैं। बशर्ते कि उनका सम्मान हो, उनकी बात को समझने वाला हो। क्योंकि समय के थपेड़ों के बीच टूटते बिखरते परिवारों को प्रेम से जोड़ने का कार्य वे सहजता से सम्पन्न कर सकते हैं। अच्छी-बुरी बात, गुण-अवगुण की परख तथा अपने स्वयं के लम्बे अनुभव से बुजुर्ग हर प्रकार से परिवार के मार्गदर्शक बन सकते हैं।

बुजुर्ग घर परिवार की मुख्य धुरी होते हैं, घर की रीढ़ होते हैं। हमें वे न केवल अपना आशीष और दुलार देते हैं, बल्कि अपने जीवन के अनमोल अनुभव भी खोलकर लुटाते हैं जो कि मनुष्य के जीवन में बहुत सहायक होते हैं। वे हमारी झोली कई तरह के आशीर्वादों से भरते रहते हैं जैसे- 'दूदो नहावो पूतो फलो', 'फलो फूलो', 'दीर्घायु' हो इस प्रकार की दुआओं से व्यक्ति प्रफुल्लित रहता है।

विशाल वट वृक्ष की छाँव

आज हम भले ही भौतिकता की अन्धी दौड़ में आगे निकल गये हों, लेकिन रिश्तों की शालीनता में बहुत पिछड़ गये हैं। आदर, प्यार, कृतज्ञता, आज्ञा-कारिता, समर्पण के धागे से बन्धे रिश्ते जो हमारी विशेषता थी आज तार-तार हो रहे हैं। हमारे समाज का मूल आधार हमारे मधुर रिश्ते रहे हैं, लेकिन आज की तेज भागती जिन्दगी ने इन सभी को पीछे धकेल दिया है। पैसा बढ़ रहा है, जीवन स्तर बढ़ रहा है, संसाधन बढ़ रहे हैं, आलीशान मकान बढ़ रहे हैं, लेकिन 'वट वृक्ष' धराशायी हो रहा है। ये सभी संसाधन वट वृक्ष की छाँव में ही अच्छे लगते हैं। मनुष्य बहुत ताकतवर होता है, वह कितनी भी विपत्ति आ जाये अपने मन को मजबूत रखता है, लेकिन बुजुर्ग ही ऐसी थाती है जिसके सामने

कठोर से कठोर मनुष्य भी पिघल जाता है, फूट पड़ता है, रो पड़ता है और अपने बुजुर्ग के सामने यदि समर्पण भाव से बात बता देता है तो वह हल्का भी हो जाता है, क्योंकि धूप को सहने वाला बुजुर्ग घर में है तो परिजनों को शीतल छाँव अवश्य मिलती है। यदि आपने वट वृक्ष को ही हटा दिया तो छाँव के लिए भटकने के अतिरिक्त और कुछ भी शेष नहीं बचता। अतः अपनी विरासत को धराशायी मत होने दो, क्योंकि ये ही हमारे वट वृक्ष हैं जिनकी शीतल छाँव में हम और हमारा परिवार पल्लवित होता है।

बूढ़ा पेड़ फल दे या न दे, पर वह छाया अवश्य देता है। इतना ही नहीं इनकी जड़ें इतनी मजबूत होती हैं कि वे हर झंझावतों को झेल सकते हैं। अतः इनके ज्ञान के खजाने का हमें लाभ लेना है तो इन्हें दूर मत कीजिए। इनके साये में आप पूर्ण सुरक्षित हैं। लेकिन यह दुर्भाग्य पूर्ण है कि आज बुजुर्ग सुरक्षा और संरक्षण के लिए भटकने को मजबूर हैं। तिरस्कार और परायापन उन्हें द्रवित कर रहा है।

बुजुर्ग हमारी धरोहर है

हमारे बुजुर्ग हमारी धरोहर हैं, हमारी इज्जत हैं, इनका सम्मान करना तो हमारी संस्कृति है, हमारा नैतिक कर्तव्य है। क्योंकि उपर्युक्त सभी कारणों के साथ साथ इनका सदुपयोग कर हम लाभान्वित हो सकते हैं। इनके लम्बे अनुभवों से हम राष्ट्र की सांस्कृतिक दीवारों को मजबूत बना सकते हैं। वृद्ध एक सम्बल तथा जीवन को सँवारने का माध्यम होते हैं। खानदान और ठिकाने इन्हीं के त्याग, समर्पण तथा संघर्षों की सफलता पर टिके होते हैं जो आज धराशायी हो रहे हैं। यदि इनकी आप इज्जत करते हैं तो आपकी इज्जत में स्वतः ही चार चाँद लग जाते हैं। अतः इनके जीवन को सँवारें। जिस प्रकार से हम कीमती सामानों की, विशेष वस्तुओं की, काँच के बर्तनों की हिफाजत करते हैं ठीक उसी प्रकार हमारे बुजुर्ग हैं, जिनकी देखभाल हम कर सकते हैं। लेकिन देखने में आता है कि आज ये नौकरों के सहारे, या

वृद्धाश्रम में अपना दयनीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं, लाचार की जिन्दगी जी रहे हैं। इन्हें हासिये पर देखा जाता है। यह प्रश्न चिह्न क्या आपके मन मस्तिष्क में उठता है? जिस लाड़-प्यार से आपको पाल पोषकर योग्य बनाकर आपका परिवार बसाया, उसकी सजा क्या इन्हें अलग करना है? नहीं। इन्होंने अपनी जवानी को आपके भविष्य के लिए दाँव पर इसलिए लगा दिया, क्योंकि आपका जीवन आरामदायक बने। लेकिन आपने तो अपनों को ही पराया कर दिया। आप यही सोचेंगे कि हम भी हमारे बच्चों के लिए वही कर रहे हैं जो हमारे बुजुर्गों ने हमारे लिए किया है। यह बात शतप्रतिशत सही है, लेकिन आप एक भूल यहाँ पर कर रहे हैं। इन बुजुर्गों ने कभी अपने बुजुर्गों को अलग नहीं किया। सदैव अपना प्यार, सेवा एवं श्रद्धा से उनके साथ

निर्वाह किया, लेकिन आप इस बात को नहीं सोचते। यदि नहीं तो आपके लिए भी ऐसा ताना बाना बुनने वाले आपके ही नौनिहाल तैयार हैं, जिसे आपको वहीं 'दंश' झेलना पड़ेगा। अतः वक्त के साथ सम्भलने में समझदारी है।

आशा करता हूँ यह लेख बड़ा भावनात्मक है, मैं स्वयं लिखते-लिखते भावुक हो गया हूँ। बस पाठकों से इतना ही निवेदन करता हूँ कि कभी अपने बुजुर्गों को पराया मत समझना, इन्हें तो सिर्फ सम्मान और प्यार चाहिए, भले ही इसके लिए आपको अपनी स्वच्छन्दता छोड़नी पड़े। क्योंकि इतने सारे लाभों को देखते हुए आपकी स्वच्छन्दता नगण्य है, गौण है, उसका इतना अधिक महत्त्व नहीं है जितना उनका आदर करने में है।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी,
गोपालपुर बाईपास, जयपुर (राज.) 9414967294

झाड़ू वाली

श्रीमती टीना मुथा

कल रास्ते में आते हुए अचानक मेरी नज़र एक झाड़ू बेचने वाली महिला पर गई, मैंने उसे रोका और पूछा कि झाड़ू कैसे दिए? उसने कहा-एक के 80 रुपये लूँगी। मैंने कहा झाड़ू ज्यादा लूँगी मैं, आप सही लगा दो। वह बोली ज्यादा कितने, 10 लोगी क्या?

मैंने कहा-हाँ, ले लूँगी, जैसे ही मैंने ऐसा बोला, उसके चेहरे पर एक चमक सी आ गई और बहुत खुश हुई। मैंने कहा मेरा घर यहाँ से 5 मिनट की दूरी पर है। आप मेरे पीछे-पीछे आएँ, मैं आपके आगे-आगे चलती हूँ। वह मेरे पीछे-पीछे चल रही थी और मैं उसके आगे-आगे। घर पहुँचते ही उसने कहा-बहुत जल्दी-जल्दी चलकर आई हूँ मेरी साँस फूल गई, मुझे प्यास भी लग रही है। फिर वह झाड़ू की गठरी नीचे उतारकर मुझे झाड़ू देने लगी और साथ-साथ बोलती जा रही थी मेरी झाड़ू कि अमुक-अमुक खासियत है, जैसे-इसके तिनके नहीं निकलेंगे, हल्का-फुल्का है, हाथों में दर्द भी नहीं रहेगा। फिर

कहते-कहते कहने लगी बहुत गर्मी है, मेरी साँस भी फूल गई, मैं इतनी जल्दी-जल्दी आई।

पर मेरा ध्यान उसकी बातों में नहीं था। मेरा ध्यान पूरी तरह से झाड़ू खरीदने में लगा हुआ था। एक-एक झाड़ू को मैं अच्छी तरह देख परख कर खरीद रही थी और उसके जितने पैसे हुए, मैंने उसे दिए और वहाँ से चली गई। उसके जाने के बाद काफी देर तक मैं सोचती रही, कि उसे इतनी गर्मी लग रही थी। उसने दो-तीन बार कहा भी था, मेरी साँस फूल गई। गर्मी लग रही है और मैंने पानी पिलाना तो दूर, उसे पानी, का पूछा भी नहीं। घर आते समय मैं एकट्ठा पर थी और वह पैदल-पैदल।

कोरोना का डर मेरे अन्दर इतना हावी हो गया कि मैंने उसे यह भी नहीं कहा कि आप मेरे पीछे बैठ जाइए। मेरे अन्दर विचार का प्रवाह चलता रहा और सोचती रही कि मेरी मानवता कहाँ गई, और मेरे अन्दर के संस्कार दया, करुणा कहाँ चले गए, क्या यह सब कोरोना की भेंट चढ़ गए, या सिर्फ किताबों में ही रह गए?

-धर्मपत्नी-श्री गौतम जी मुथा (पीयाड़ वाले)
चोपासनी रोड, जोधपुर (राजस्थान)

हम जैसा बीज बोते हैं, वैसा ही फल प्राप्त करते हैं

श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.)

हम अपने कर्म बीज के अनुरूप ही फल प्राप्त करते हैं। हमें अपने पूर्व कृत कर्मों के अनुरूप ही फल प्राप्त होता है। रोनाल्ड ओपस ने आत्महत्या के उद्देश्य से दस मञ्जिला ऊँचे भवन की छत से नीचे छलाँग लगाई थी, किन्तु उसके शव परीक्षण में पाया गया कि उसकी मौत सिर में गोली लगने से हुयी। उसने आत्महत्या के पूर्व एक पर्ची में अपने जीवन से हताश होने की बात भी लिख छोड़ी थी। नीचे गिरते समय जब ओपस नौवीं मञ्जिल तक पहुँचा, तभी खिड़की से एक गोली सनसनाती हुई आई और उसके सिर में धँस गई, जिससे तुरन्त ही उसकी मौत हो गई। गोली चलाने वाले व्यक्ति और ओपस को पता नहीं था कि भवन में कार्यरत श्रमिकों को बचाने के लिए आठवीं मञ्जिल के ठीक नीचे एक सुरक्षा जाल बिछाया गया था। इस सुरक्षा जाल के कारण ओपस ने जिस तरीके से आत्महत्या का प्रयास किया उसमें वह सफल नहीं होता। लेकिन ओपस को जिस तरह से गोली लगी थी, उससे उसका मरना प्रायः निश्चित था, परिणामतः शव परीक्षक को लगा कि उसके हाथ में आत्मघाती हथियार था।

वास्तविक परिस्थितियाँ इसके बिल्कुल विपरीत थी। नौवीं मञ्जिल के जिस फ्लैट से गोली चली, वहाँ एक वृद्ध दम्पती रहते थे। उन दोनों के बीच जोरदार झगड़ा हो रहा था। वृद्ध पुरुष अपनी पत्नी को गोली से मारने की धमकी दे रहा था। अन्ततः उसने गुस्से में गोली चला दी और बन्दूक से निकली गोली पत्नी को न लगते हुये खिड़की के रास्ते ओपस के सिर में जा धँसी। विधि का यह सिद्धान्त है कि जब कोई व्यक्ति 'अ' की हत्या करना चाहता हो, किन्तु इस प्रयास में 'ब' की हत्या कर दे, तो उसे 'ब' की हत्या का दोषी माना जाता है।

जब उस वृद्ध पुरुष पर हत्या का प्रकरण चलाया गया तो उसने अपने बचाव में कहा कि सदैव की भाँति अपनी पुरानी आदत के अनुसार जब कभी वह खाली बन्दूक दिखाकर अपनी पत्नी को डराता था। उसे यह विश्वास था कि बन्दूक खाली है। हो सकता है कि किसी अनजाने कारण से बन्दूक भरी रह गई हो।

आगे जाँच करने पर वृद्ध दम्पती की नौकरानी ने बताया कि उसने वृद्ध दम्पती के पुत्र को इस घातक घटना के छह सप्ताह पूर्व बन्दूक में गोली भरते देखा था। जाँच से यह भी पता चला कि वृद्ध महिला ने अपने पुत्र को आर्थिक सहयोग देना बन्द कर दिया था और पुत्र यह बात जानता था कि उसके पिता बन्दूक लेकर प्रायः माँ को धमकाया करते हैं। उसने यह सोचकर बन्दूक में गोली भर दी कि इस तरह पिता कभी उसकी माँ की हत्या कर देंगे। परिणामतः उसे हत्या का दोषी पाया गया, यद्यपि उसने स्वयं गोली नहीं चलाई थी। केवल खाली बन्दूक में गोली भरी थी।

यहीं से इस प्रकरण में एक रोचक मोड़ आ गया। आगे की जाँच से पता चला कि उस वृद्ध दम्पती का पुत्र कोई और नहीं रोनाल्ड ओपस स्वयं था। उसने अपनी माँ की हत्या के लिये जो षड्यन्त्र रचा था, उसमें मिली असफलता से वह अत्यधिक निराश हो गया था और इसी निराशा वश उसने दस मञ्जिला इमारत की छत से छलाँग लगा दी। इस तरह पुत्र ने 'बन्दूक' में गोली भरकर स्वयं अपनी हत्या की। परिणामतः शव परीक्षक ने इसे आत्महत्या बताया और न्यायालय ने हत्या का प्रकरण बन्द कर दिया।

-30, निशात कॉलोनी, भोपाल 462003 (मध्यप्रदेश)

94250 10111

साधना का फल

श्री गौतम पारख

शाप और वरदान, आशीष और अभिशाप, मंगल और अमंगल, दुआ और हाय, शुभ और अशुभ, असफलता और सफलता ये सारे शब्द ही तो जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों के प्रसाद हैं। कसक और कसौटी के बीच ही तो जीवन का इम्तिहान है। शाप शब्द पर मेरा ध्यान आकर टिक गया। मैं सोचने लगा कि आखिर शाप क्या है? शाप कौन दे सकता है? क्या शाप का फलीभूत होना आवश्यक है? इन प्रश्नों के बीच ही मेरी आत्मा से आवाज़ आने लगी कि जो साधु होता है, जो साधक होता है, जो धर्म को समझता है वह कभी किसी को शाप नहीं देता है। शाप देने का मतलब है क्रोधाग्नि के वशीभूत होना, अप्रसन्न, नाराज़ होकर आक्रोशित होना। दूसरे शब्दों में अपनी साधना, तपस्या का सौदा दूसरों के अमंगल के लिये करना। मैं सोचने लगा कि क्या दूसरों का अमंगल चाहने वाला, स्वयं की इच्छा के विरुद्ध अवसर आने पर दूसरों को कारण मानकर, उससे बदला लेने के लिये उसे काले भविष्य की ओर धकेलने वाला क्या सच्चा साधु, साधक, तपस्वी हो सकता है? पुनः मेरी आत्मा से आवाज़ आने लगी कि नहीं, नहीं! साधुत्व, साधना, तपस्या, तो समता के बिना फलीभूत ही नहीं हो सकती है। समता ही तो साधुत्व का चरमोत्कर्ष है। इन आवाज़ों के बीच मैं ठिठक गया, रुक गया, मौन हो गया, आँखें उठाकर आकाश को देखने लगा।

कोरोना वायरस से बचाव के लिए देश भर में लागू लॉकडाउन के दिनों में मुझे घर में ही अधिकतर समय रहने को मिला। रामायण और महाभारत सीरियल दूरदर्शन में देखने, समझने का अवसर निकट से प्राप्त हुआ। धारावाहिकों में शाप देने वालों की लम्बी सूची है। मैं सोचने लगा कि सुकृत वरदान के रूप में आ सकते

हैं और दुष्कृत शाप के रूप में फल बनकर आ सकते हैं। कर्मदर्शन पर, कर्मसत्ता पर, विश्वास करने वाले समस्त दर्शनों, धर्मों का सार यही है कि न कोई शाप देता, न वरदान, न कोई उपहार, ये तो केवल स्वयं के किये गये कर्मों का ही प्रतिफल है। जब व्यक्ति द्वेष, ईर्ष्या, द्वन्द्व, बदला, कसक की भावना लिये हुये किसी का अमंगल चाहता है तो दूसरे का अमंगल हो या न हो उसका स्वयं का अमंगल अवश्य होता है। वह गाढ़े कर्मों का बन्धन करता है। व्यक्ति जब झूठे, अधर्मी, अन्यायी, स्वार्थी, महत्त्वाकांक्षी लोगों के लिए अमंगल सोचता है तब भी व्यक्ति को सावधान रहना चाहिये, अमंगल में उन्हें सदबुद्धि देने का भाव, उन्हें सन्मार्ग में लाने का भाव, 'सत्यमेव जयते' का शंखनाद करने के भाव की प्रमुखता होना चाहिये। अन्यथा, अमंगल, बदले या नफरत की जड़ बन जाएगी। वहीं दूसरी ओर मंगल कामनाएँ, शुभकामनाएँ, आशीर्वाद का भाव निस्पृह, निश्छल और निःस्वार्थता के धरातल पर दिया जाता है तो वहीं मंगल ऊर्जा का, शक्ति का स्रोत बन जाता है।

मेरा ध्यान पुनः साधना शब्द पर आकर टिक गया। कला की साधना, पूजा की साधना, संगीत की साधना, परमार्थ की साधना, सभी साधनाओं में सावधान रहने, सचेत रहने, निर्विकारी रहने, अलिप्त रहने, यश की कामना से विनिर्मुक्त होने, फल की चाह से कोसों दूर रहने की आहट, कानों में गूँजती रहनी चाहिये। यही तो साधना का चरमोत्कर्ष है। साधना का साधक प्रभु दरबार का पुजारी तभी बनता है जब साधना निष्काम भावों से, समर्पित भावों से, मैं और तू का भेद समाप्त करने के लिए की जाती है। जब संगीत, गीता का पाठ पढ़ाने लगता है और कला जीवन जीने की कला सिखाने लगती है तब समझना चाहिये कि हम सही संगीत तथा कला के पुजारी बन पायेंगे। साधना से प्राप्त

सिद्धि, बल, पराक्रम का उपयोग जब साधक साधना को जयवन्त बनाने के लिए करता है। कल्याण, शान्ति, अमन के लिए करता है तो साधना मुखर हो उठती है। साधना का अन्तिम लक्ष्य स्वयं की आत्मा में सन्निहित परमात्म तत्त्व का शोधन करना होता है। साधना का उपयोग जब शाप देने, वरदान देने में होने लगता है, तब साधना सिहरने लगती है।

स्वाध्याय के क्षणों में पढ़ा हुआ एक दृष्टान्त स्मृतिपटल पर उभरकर आ गया। बादशाह अकबर तानसेन के संगीत और वाद्य के बड़े प्रशंसक थे। एक दिन अकबर ने तानसेन के मनमोहक, आनन्दित करने वाले गायन सुनने के पश्चात् तानसेन से कहा कि तानसेन! जब तुम गाते हो तो सुनने वाला खो जाता है, मुग्ध हो जाता है। तुम इतना बढ़िया गाते हो, संगीत सुनाते हो तो तुम्हारे गुरु कितना शानदार, बढ़िया गाते होंगे, जिनके पास तुमने संगीत की शिक्षा प्राप्त की है। बादशाह अकबर ने पूछा क्या वे जीवित हैं? तानसेन ने कहा हाँ हुजूर! वे जीवित हैं। बादशाह अकबर ने कहा उन्हें एक दिन दरबार में लाओ हम उनका संगीत सुनेंगे। तानसेन ने कहा कि जहांपनाह वे कभी दरबार में नहीं आते। वे तो अब केवल अपने आनन्द के लिए गाते हैं। अपनी इच्छा से, एकान्त में अकेले ही गाते हैं। यहाँ तक कि कोई संगीत प्रेमी भी उनको गाते सुनकर उनके सामने पहुँच जाता है तो वे गायन बन्द कर देते हैं। आपकी उन्हें सुनने की तीव्र इच्छा है तो हम छुपकर एकान्त में उन्हें गाते हुये सुनेंगे। एक दिन अर्द्धरात्रि को बादशाह अकबर को लेकर तानसेन अपने गुरु की कुटिया के बाहर ले गये। वृद्ध संगीतकार तानसेन के गुरु स्वामी हरिदास उस समय अपनी मस्ती में गा रहे थे। दुनिया से बेफिक्र, स्वयं अपने ही रोम-रोम में समाकर गा रहे थे। बादशाह अकबर और तानसेन उन्हें सुनकर निःशब्द हो गये और वहाँ से लौट आए।

बादशाह अकबर तानसेन के गुरु के गायन से इतने भावविभोर हो गये कि उनकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। तानसेन से वे कहने लगे कि तानसेन! मैं आज तक

तुम्हारे गायन का दीवाना था, कायल था, लेकिन तुम्हारे गुरुजी को सुनने के बाद तुम्हारी गायन कला फीकी लगने लगी। ऐसा क्यों? तानसेन ने तनिक भी संकोच नहीं किया और कहने लगे कि बादशाह सलामत, जब वे गाते हैं तो स्वयं के लिए गाते हैं। आनन्दित, प्रमुदित और आह्लादित होकर गाते हैं। आत्मा की आवाज़ आने पर गाते हैं और गाते-गाते भाव-विभोर हो जाते हैं, किन्तु मैं आपके और अन्य व्यक्तियों, प्रजाजनों के कहने से गाता हूँ। जब मेरी प्रशंसा होने लगती है तो मैं आनन्दित हो जाता हूँ। मुझे पुरस्कार स्वरूप बहुत धन मिलता है। कुल मिलाकर मेरे गायन के पीछे यश, प्रतिष्ठा, कीर्ति, सराहना के साथ धन-प्राप्ति का भाव छिपा रहता है। दूसरे शब्दों में मेरे संगीत में प्रतिष्ठा, मान, प्रसिद्धि, अर्थ उपार्जन के भाव का विष छिपा रहता है। बादशाह अकबर, तानसेन के उत्तर को सुनकर चकित ही नहीं हुए, बल्कि नतमस्तक हो गये। उन्हें समझ में आ गया किसी भी क्रिया का, श्रम का, साधना का सच्चा फल तभी प्राप्त होता है जब हम फल की आकांक्षा से रहित, निर्लिप्त रहकर, निष्काम भाव से दृढ़ इच्छाशक्ति, कठोर पुरुषार्थ से उस क्रिया, या साधना को करते हैं। मैं सोचने लगा कि निष्काम व्यक्ति, निर्लोभी व्यक्ति, पद प्रतिष्ठा की दौड़ से दूरी रखने वाले व्यक्ति की साधना ही जीवन को जयवन्त बनाती है, परमात्मा के पथ का अनुगामी बनाती है।

प्रभु से प्रार्थना करें कि हे प्रभु! पुण्यवाणी से, भाग्योदय से, साधना से, तपस्या से प्राप्त शक्ति, क्षमता, सामर्थ्य का उपयोग हम कभी भी अपने स्वार्थ के लिए, दूसरों के अमंगल के लिए न करें। साधना, संयम, पुरुषार्थ और पुण्यवाणी से प्राप्त ऊर्जा का उपयोग सदैव आत्मकल्याण, परमार्थ, करुणा, दया, सेवा, सत्कार में करते रहें-लगाते रहें तभी हमारा यह मानव जीवन सार्थक हो सकेगा। हे प्रभो! हमें ऐसी सोच, चिन्तन और ऊर्जा देते रहना, देते रहना।

-गौतम भवन, भरकरा पारा, कमल टॉकिंग के पास, राजनादगाँव-491441 (छत्तीसगढ़)

अहं विलय का महामन्त्र : 'नमस्कार'

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

भारतीय संस्कृति में प्रमोदभाव से सम्मान-पूर्वक, विनयभाव प्रदर्शन के उत्कृष्ट स्वरूप की विशिष्ट क्रिया है- 'नमस्कार।'

'नमस्कार' शब्द नमः + कार से बना है। नमः अर्थात् विनयभाव- "मैं आपके अस्तित्व को स्वीकार करता हूँ। आप ही आप हो, मैं नहीं।" इस 'मैं नहीं हूँ' को प्रकट करने की कला है 'नमस्कार।' विनम्रता एवं गुणोत्कर्षता का विशुद्ध प्रतीक है नमस्कार। आत्मा को अध्यात्म भावों से जोड़ने वाला सेतु है नमस्कार। आत्मा के सत्चित् आनन्द के गुणों को नमस्कार किया जाता है, व्यक्ति को नहीं। नमस्कार एक साधना है। इसमें पूर्णतः तल्लीन होने से प्रशस्त-ध्यान की सिद्धि होती है।

नमस्कार के प्रकार

1. अर्थ नमस्कार-प्रयोजन से किया जाने वाला नमस्कार।
2. काय नमस्कार-शब्दादि विषयों के उद्देश्य से किया जाने वाला नमस्कार।
3. धर्म नमस्कार-लौकिक और नैतिक कर्तव्यों से प्रेरित नमस्कार।
4. लोकोत्तर नमस्कार-मोक्ष के उद्देश्य से किया जाने वाला नमस्कार, 'नमोक्कार महामन्त्र' लोकोत्तर नमस्कार है।

लोकोत्तर नमस्कार के भेद

1. द्रव्य नमस्कार-पूज्यजनों के स्वरूप को समझे बिना ही विधि और उपयोग से शून्य आत्मलक्ष्य रहित नमस्कार। इसमें कायिक, वाचिक क्रिया तथा यान्त्रिकता रहती है।
2. भाव नमस्कार-व्यवहार नमस्कार एवं निश्चय

नमस्कार में मन की समग्रतापूर्वक मानसिक क्रिया होती है, यह चिन्तन तथा भावना प्रधान होता है। निश्चय में नमस्कार ज्ञान को, परमात्मा को किया जाता है, प्रकट में वह सद्गुरु को होता है।

प्रकर्ष भाव से किया जाने वाला नमस्कार प्रणाम है। प्रणाम से परिणाम सुन्दर बन अहम् की बेड़ियाँ टूट जाती हैं। प्रणाम से प्रमाद चूर-चूर होता है। प्रणाम की अभिव्यक्ति वन्दन के रूप में फलित होती है।

वन्दन-अपने से अधिक सद्गुणों और विकसित आत्माओं को वन्दन-नमन करने से चित्त में प्रमोद भावना का आविर्भाव होता है। प्रमोद-भावना का अभ्यास करने से सद्गुणों की प्राप्ति होती है। ईर्ष्या, द्वेष और मत्सर आदि दुर्गुणों का समूल नाश हो जाता है। फलतः व्यक्तित्व विशालहृदय, उदात्त और उदार बनता है। वन्दन से जीव नीच गौत्र कर्म एवं ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय कर उच्च गोत्रकर्म का बन्ध करता है। तत्पश्चात् वह स्थिर, सौभाग्यशाली होकर लोकप्रियता प्राप्त कर लेता है।

निर्ग्रन्थ सद्गुरुओं, आचार्य, उपाध्याय एवं साधु-साध्वियों को दोनों हाथ जोड़कर, घुटने झुकाकर और मस्तक से धरती का स्पर्श कर सादर गुणगान सहित नमस्कार अहं विलय एवं विनय की अभिव्यक्ति है। प्रभु का अनुग्रह एवं प्रसाद सन्त-मुनिराजों के चरणों से प्रवाहित होता है। इसी कारण वन्दनीय गुरु के चरणों में दोनों हाथों से स्पर्श करते हुए उन पर मस्तक टिकाकर चरण-स्पर्श वन्दना और प्रणाम प्रसन्नता का द्योतक है।

गुरु वन्दना जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट तीन प्रकार से की जाती है।

1. जघन्य वन्दना-चलते-चलते, शीघ्रता में, संक्षेप में 'मत्थण वंदामि' द्वारा उच्चारित वन्दना।
2. मध्यम वन्दना-आदक्षिणा-प्रदक्षिणा यानी विधि सहित 'तिकुत्तो' के पाठ से पञ्चाङ्ग नमाकर की गई गुरु वन्दना शरणागति और विनय की प्रतीक रूप है।

3. उत्कृष्ट वन्दना-'इच्छामि खमासमणो' के पाठ से की गई विधिवत् आसन-वन्दना कोमलता एवं नम्रता का प्रतीक है।

जब तक जीवन-पुष्प में विनयभाव-प्रमोद भाव का पराग नहीं होगा तब तक यह जीवन-पुष्प परागहीन, सौरभहीन और मूल्यहीन बना रहेगा। दूसरे के मन को जीतने का सबसे बड़ा वशीकरण मन्त्र है-वन्दन नमस्कार।

- 'हुक्म', 5-ए/1, सुभाष नगर, पालरोड़,
जोधपुर-342008 (राज.), 94685-61640

जीवन सार सिखाने को

डॉ. रेजू सिरिया कुमुदिनी
शिक्षक बनकर आया कोरोना,
जीवन सार सिखाने को।
उड़ रहे थे जो अम्बर पर,
उन्हें ज़मीं पर लाने को
जीवन-अर्थ समझ में आया,
चन्द दिनों की ज़िन्दगानी
नाम प्रसिद्धि धन और दौलत,
छूटेगी सारी निशानी
नहीं रहा अमर कोई भी,
आये हैं सब जाने को॥
कोरोना है अजब पहेली,
सबको घर में बिठा दिया
राजा हो या रंक सभी को,
जीवन सत्य दिखा दिया॥
कुदरत ने भी खेल रचाया,
सबको संग मिलाने को॥
पवन सुगन्धित निर्मल है जल,
पथ शहरी शान्त हुए
घर में कैद सभी मानव,
पंछी सब आज़ाद हुए

इच्छाएँ सब मन में समाई,
चाह नहीं कुछ पाने को॥
परिवार के संग सभी हैं,
मतलब समझा प्यार का
प्रेम स्नेह से करें सामना,
कोरोना के वार का
सात्त्विक भोजन, सरल हुए मन,
भूले बाहर जाने को॥
घर में रहे सुरक्षित सब जन,
स्वस्थ और खुशहाल रहे
लॉकडाउन के नियम पाले,
हाथ स्वच्छ हो ख्याल रहे
मुख पे मास्क, हारे कोरोना,
संकल्प है इसे मिटाने को॥
महावीर के सिद्धान्तों पर दुनिया,
अब ये अमल करें
सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और
ब्रह्मचर्य पर मनन करे
लिखा कलम से गीत कुमुदिनी,
राह नई दिखलाने को॥

उदयपुर, राजस्थान 9782404115



कोरोना का पॉजिटिव प्रभाव

श्री मनीष मेहता

आज के समय में यदि कोई शब्द सबसे खतरनाक है, यदि कोई भी सुनना नहीं चाहता तो वह है कोरोना पॉजिटिव। जब भी किसी को संक्रमण होता है तो उसका कोरोना टेस्ट पॉजिटिव आता है। सम्पूर्ण विश्व थम सा गया है। लगातार मौतें हो रही हैं। डर हर ओर व्याप्त है। बचाव के उपायों के तहत लोग सीमित कार्यकलापों पर, सीमित संसाधनों के उपयोग पर, सीमित क्षमता के दोहन पर, सीमित सम्पर्कों तक अपनी जीवन शैली को बदल चुके हैं।

प्रभु करुणा के सागर श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने अपने जीवन से समस्त समस्याओं के समाधान हमें दिये हैं। पूरे विश्व में ऐसी कोई भी घटना या समस्या नहीं है जिसका समाधान उनके जीवन से नहीं मिलता हो। बस हमें उसे समझना होगा। महावीर स्वामी ने अनेकान्त के माध्यम से हमें हर स्थिति को विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में बताया है। उनका स्याद्वाद का सिद्धान्त हमें प्रेरित करता है कि हम इस विश्व विडम्बना की घटना को भी भय रहित होकर विचारें। देखें कि क्या ये वैश्विक महामारी मात्र नकारात्मक है या इसका कोई सकारात्मक पहलू भी है जो हमें अब तक दिखायी नहीं दे पाया है। चलिए विश्लेषण करते हैं अपनी क्षमता के अनुसार।

हमें सर्वप्रथम जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्त से शुरुआत करनी चाहिए। मानवमात्र का जीवन बहुत सारे संसाधनों पर निर्भर है जैसे हमें जिन्दा रहने के लिए भोजन, पानी, तन ढकने के लिए वस्त्र आदि चाहिए। हम जब इनका निर्धारण करते हैं तो सीमा भूल जाते हैं। आहार, जहाँ शरीर की आवश्यकता

है, वहाँ वह स्वाद की पूर्ति के चलते असीमित हो जाता है। विभिन्न प्रकार के भोज्य भी मन को सन्तुष्ट नहीं कर पाते। जो शरीर रोटी से चलता था वह अब डबल रोटी, पिज्जा, पास्ता, नूडल आदि से भी असन्तुष्ट है। इस कोरोना के चलते केक, पिज्जा, पास्ता छूट गया और हम वापस दाल रोटी पर आ गये। जरा सोचें क्या ये नियन्त्रण हमें विलासिता, भौतिकता से वापस अपने मूल स्वरूप में नहीं ला रहा। जहाँ हमें रोटी भाती ही नहीं थी, रोज बाहर का चटपटा चाहिए था, क्या वह नियन्त्रित नहीं हो गया। हम सभी जानते हैं कि भोजन के असंयम से ही अधिकांश बीमारियाँ थीं, पर हम विवश थे। क्या वह विवशता अब नियन्त्रित नहीं हो गई है? आप सभी मानेंगे कि अब लगभग सभी घर का बना सुपाच्य भोजन करने से लोगों की नियमित बीमारियाँ तक नियन्त्रण में हैं। क्या इसे हम कोरोना पॉजिटिव प्रभाव मानेंगे?

मानव की आवश्यकताएँ तो कम संसाधनों से पूर्ण हो सकती हैं, परन्तु इच्छाएँ तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के संसाधनों को पाकर भी अपूर्ण रहती हैं। हम सभी यह जानते हैं, पर मानते नहीं हैं। किन्तु इस कोविड के समय में हम सभी अपने घरों में बन्द हो गये और हमारी इच्छाएँ भी परिस्थितियों के चलते सीमित हो गईं। पहले जहाँ प्रतिक्षण कमाई की नई-नई दिशाएँ मन में निर्मित हो रही थीं वहाँ अब आवश्यकता पूर्ति तक केन्द्रित हो गई है। अपनी इच्छाएँ रोकना, नियन्त्रित अभी सभी के लिए सुलभ हो गया क्या हम इसे 'कोरोना' का प्रभाव नहीं मानेंगे।

पहले हर व्यक्ति अपने जीवन को व्यस्ततम

जी रहा था और सामान्य तौर पर कहता था कि अभी तो मरने की भी फुरसत नहीं है। निरन्तर क्षमता के दोहन से वह असाधारण गति से अपनी वृद्धावस्था को, बीमारियों को प्राप्त हो रहा था। मशीन तक निरन्तर चलने के लिए कुछ समय के लिए मरम्मत एवं रखरखाव चाहती है तो यह शरीर भी माँग रहा था। पर हम लालच के चलते नहीं दे पा रहे थे। इस कोविड काल में सभी को यह समय मिला है। हमारी क्षमताएँ पूर्ण जीवित या चार्ज हो गई हैं। क्या हम इसे 'कोरोना' का पॉजिटिव प्रभाव नहीं मानेंगे।

व्यस्ततम जीवन, आगे बढ़ने की भूख, सब कुछ पा लेने की चाहत ने हमें खुदगर्ज बना दिया था। इस कोविड के चलते हममें फिर से मानवता के जो बीज थे, वे पुष्पित एवं पल्लवित हुए हैं। लोगों ने मानवता के जखमों को सहलाया है। एक-दूसरे की सेवा एवं मदद की है। क्या इसे हम कोविड का सुन्दर, अनुपम उपकार नहीं मानें?

भागदौड़ भरे जीवन में हमें अपने तथा अपनों के लिए अवकाश ही कहाँ था। हम कहने को तो परिवार के लिए सभी कृत्य कर रहे थे, पर आप अपने से पूछें कि इसमें परिवार कहाँ था? सोचें, क्या हम परिवार के साथ बैठ भी पाए? क्या आपने उनको समझा, जाना? क्या वे आपको जानते थे, रिश्ते थे पर निकटता नहीं। आत्मीयता का रस नहीं था। शुक्र है इस कोविड का कि आपके बच्चे, जीवन-साथी, माता-पिता, भाई-बहन साथ में कुछ पल जी पाए। आपको उनकी विशेषताओं का पता चला। आपको अवसर मिला जानने का, कुछ वक्त साथ बिताकर कि वे क्या सोचते हैं? कैसा सोचते हैं? वे क्या चाहते हैं? साथ ही वे आपके बारे में जान पाए। यह है 'कोरोना' का प्रभाव।

सभी जानते हैं कि दुनिया एक ऐसी जगह है जहाँ से हमें समय पूर्ण होने पर जाना ही है। हर

जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी है। फिर भी भागमभाग है। जब कभी हमें सत्संग मिलता है, सन्त-सतीवृन्द का सान्निध्य मिलता है, जिनवाणी श्रवण का पुण्य उदय में आता है तो नश्वरता का अहसास फिर से होता है और अध्यात्म के बारे में विचार आने लगते हैं। पर यह क्षणिक होकर रह जाता है। हमारे उपकारी गुरु भगवन्त सदैव चेताते हैं, फिर भी हम चिकने घड़े के माफिक, परवाह नहीं करते हैं।

अपनी रुकी हुई साधना एवं ज्ञान को बढ़ाने का यह सुअवसर मिला है। इस अवधि में हमने अपनी साधना को शुद्ध करने का, उसे आगे बढ़ाने का पुरुषार्थ किया। स्वाध्याय किया, सामूहिक भजन गाये, अध्ययन किया, पाटियाँ याद कीं। यह असाध्य एवं असम्भव कार्य करके हमने समय को सार्थक किया। मेरी समझ में यह 'कोरोना' का सकारात्मक प्रभाव था।

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मानवता का, संघ का, समाज का हित चिन्तन करने वाला प्राणी अच्छे परिणामों को प्राप्त करता है। इस कोविड काल में सोशल डिस्टेंसिंग के चलते धार्मिक-स्थल उपासना केन्द्र बन्द हैं। हमारे सन्त-सतियों के दर्शन तक हमने छोड़े हैं, पर भाव उनकी सुरक्षा का था। सदैव यही चिन्तन रहा कि सन्त-सती किसी धर्म या सम्प्रदाय के नहीं होते वे राष्ट्रीय, वैश्विक धरोहर हैं सो उन्हें बचाना है। हमारी वजह से-दर्शन लोभ से वे संक्रमण के खतरे में न आ जाएँ, इसके लिए हम भाव-वन्दन का सहारा लेकर चलते रहे और दूरी बनाए रखी।

आपका यह शुभ भाव, उनका हित-चिन्तन वास्तव में आपकी पुण्यशालिता को बढ़ाने वाला है। मुक्ति को प्राप्त करने तक यह पुण्य ही हमारी ताकत है।

प्रकृति ने हमें यह काल दिया है। इस समय को सार्थक करना वर्तमान में जीना है जो सभी धर्मों

का मूल है। यदि हम वर्तमान में जीना सीख गये तो राग-द्वेष, लोभ-मोह को एक सीमा तक कम कर पाएँगे। अपने परिणाम सुधार पाएँगे। लोग अक्सर कहते सुने गए हैं “अरिहन्त देव मेरी सुनिये पुकार, अगला भव मिले तेरे दरबार” कुछ लोग इसको यूँ भी कहते हैं कि “वर्तमान में अरिहन्त देव महाविदेह क्षेत्र में हैं जहाँ पर आयुष्य बड़ी लम्बी है, सभी जीव वहाँ पर भी मोक्ष नहीं जाते, सो हमें अपनी वर्तमान की करणी पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि उनकी सन्निधि तो हम अनन्त बार पाकर भी मुक्ति नहीं पा सके, तो अबकी बार करणी ऐसी करो, पुरुषार्थ करो कि भव सुधर जाए, मुक्ति द्वार खोलने का प्रयास हो जाए।” इस कोविड काल में समय सार्थक करके, सीख लेकर आप वर्तमान में जीना सीख सकते हैं। यह है ‘कोरोना’ का पॉजिटिव

प्रभाव।

हम सभी अपनी क्षमता से इसके अन्य पहलू भी खोज सकते हैं जो अलग-अलग हो सकते हैं। मेरा प्रयास मात्र आपको अपनी क्षमता की याद दिलाना भर है। इसका सभी सकारात्मक उपयोग करें, आगे बढ़ें। अपनी बढ़ी हुई क्षमता, योग्यता और ऊर्जा का सही उपयोग करें। हर रात के बाद सुबह होती है, इसी प्रकार इस काल के बाद भी बड़ी सफलता आपका इन्तजार कर रही है। हम सभी वीर प्रभु को आधार बनाकर उनकी वाणी पर श्रद्धा रखकर वर्तमान समय को सार्थक करते हुए आगे बढ़ें। गुरु भगवन्त का सभी पर आशीर्वाद बना रहे। सभी स्वस्थ एवं मंगलमय रहें।

-अध्यक्ष, अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

चयन : कम नुकसान का

लाभ और हानि के बीच चयन करना हो तो हम लाभ का ही चयन करेंगे, इस बात में कोई सन्देह नहीं है, परन्तु अल्प हानि और अधिक हानि, इन दोनों के बीच किसी एक का चयन करना हो तब हम अधिक हानि की अपेक्षा कर देंगे, यह बात भी निःसन्देह ही है न ?

सामायिक में बैठने के बाद मन-वचन और काया, ये तीनों योग सामायिक में स्थिर हो जाएँ, यह तो उत्तम ही है।

परन्तु, किसी भी कारणवश सामायिक में मन स्थिर न होकर इधर-उधर भटकता हो तो भी सामायिक को तो पकड़कर ही रखना है।

कारण ? सामायिक में मन ही बाहर भटकता है न ? वचन-काया तो सामायिक में ही होते हैं न ? यह भी कोई कम लाभ नहीं ही है। सामायिक न करने से तो अच्छा ही है न ?

पाप में आनन्द : विष का बघार

संयोगवश शराब पीने से पहले युवक उत्साहित हो, शराब पीते समय उत्तेजित हो और शराब पी लेने के बाद झूमने लगता हो तो केवल इससे वह शराब उसके लिए हानिकारक बनी ही रहेगी यह जरूरी नहीं है।

परन्तु, आन्तरिक पाप भले ही बिल्कुल छोटा है, उसके आचरण के समय मन अत्यन्त उत्तेजित है और उसके आचरण के पश्चात् मन यदि मत्त बना रहता है तो ये तीनों अवस्थाएँ आत्मा के लिए जिस हद तक नुकसानकारी और अनर्थकारी बनी रहती हैं, उसकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती।

याद रखना, पाप में आनन्द अर्थात् विष का बघार ! हालत खराब कर देगा।

-आचार्य श्री विजय रत्नसुन्दर सूरि
एक यात्रा भीतर की ओर पुस्तक के साभार से

सीधी बात..... कोरोना के साथ

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

आज सुबह से मन बहुत उत्सुक है ...हो भी क्यों न ...आज एक बहुत महत्वपूर्ण इण्टरव्यू (साक्षात्कार) जो है ...कोरोना के साथ ...जी हाँ ...बिल्कुल सही पढ़ा ..कोरोना के साथ....वैसे तो उनके साक्षात्कार के लिए अनेक पत्रकार उत्सुक भी हैं और बेचैन भी ...लेकिन कोरोना ने सिर्फ मुझे ही स्वीकृति दी ...वो भी अनेक शर्तों के साथ ...जिसमें मुख्य शर्त यह कि ...यह उनका पहला साक्षात्कार है ...और अन्तिम भी यही होगा । खैर इन्तजार की घड़ियाँ बीती और नियत समय पर कोरोनाजी पधार गएअहा !...इतना छोटा सा व्यक्तित्व, किन्तु ...पूरे विश्व के अस्तित्व पर भारी ...इस विराट् विश्व का तख्तापलट करने में सक्षम !

कोरोनाजी, मेरे विनम्र निवेदन पर आप साक्षात्कार हेतु पधारे ... 'सीधी बात' में आपका बहुत बहुत स्वागत है।

कोरोना : जी ...धन्यवाद

कोरोनाजी सबसे पहले हर कोई आपका परिचय जानने को उत्सुक है आपका परिचय क्या है ? औरआप यह भी बताइये कि....

कोरोना : (बीच में ही मेरी बात काटते हुए) 'आप मेरे परिचय के बारे में कुछ भी नहीं पूछेंगे' ...इसी शर्त पर मैंने साक्षात्कार हेतु स्वीकृति दी है ...और भाई साहब आपके कार्यक्रम का नाम ही सीधी बात है ...तो आप भी सीधी बात ही कीजिये नायानी पॉइण्ट टू पॉइण्ट ही बात कीजिये।

ठीक है...कोरोनाजी ...ये सब क्या चल रहा है ?

कोरोना : क्या? क्या चल रहा है ?

यही जो आपका विनाश ताण्डव चल रहा है ...

पूरे विश्व मेंआपके कारण लाखों लोग मर गए ...करोड़ों लोग अभी भी संक्रमित हैं ...इन नौ-दस महीनों से भी कम समय में आपने पूरे विश्व को झुका दिया ...आप क्या चाहते हैं? आप कहाँ से आये ? ...और कब जाओगे ?

कोरोना : यहाँ कोई भी अमर रह पायेगा क्या ? ...जो जन्मा है वो अवश्य मरेगा ...मेरी किसी को मारने की कोई इच्छा ...न थी ...न है ...परन्तु कोई यदि मेरे भय से मर जाए ...तो इसमें मेरा क्या दोष? न तो मैं अपनी मर्जी से आया हूँ ...न अपनी मर्जी से जाऊँगा ...समय के साथ सबको सबकुछ पता चल जायेगा ...इंसान ने अब तक अणु और परमाणु धमाकों से आतंक मचाया है ...अब वो एक विषाणु की ताकत देखेगाऔर रही बात विश्व को झुकाने की ...तो मेरी या मेरे टीम के किसी सदस्य की ऐसी कोई मंशा नहीं है।

लेकिन इस खुशहाल संसार के लोगों ने आपका या ...किसी का क्या बिगाड़ा है ? संसार के सभी लोगों की ज़िन्दगी अच्छी खासी चल रही थी ...हर कोई अपनी जिंदगी से खुश था ...और अचानक दहशत फैला दी ... कहर बरसा दियाआपने लाखों लोगों को मारा हैऔर अभी भी आपके जुल्म खत्म नहीं हुए हैं ...आप यह मौत का खेल क्यों खेल रहे हैं? ऐसे तो हर इंसान को मरना पड़ेगा ...कोरोनाजी ...आप सभी इंसानों को संक्रमित करके मार देंगे ...तो ... पृथ्वी ही खाली हो गई तो ? और विशेषकर आपने आर्याव्रत यानी पुण्यभूमि भारतवर्ष को भी नहीं छोड़ा ...ऋषि मुनियों से पावन इस धर्म धरा पर भी यह आक्रमण क्यों ? आखिर क्यों ?

कोरोना : आपने बहुत भारी आरोप लगाये हैं मुझ पर ...फिर भी मुझे अपनी सफाई में कुछ नहीं कहना

है ...लेकिन मैं अपने व्यावहारिक दृष्टिकोण के माध्यम से अपने प्रश्नों को आपसे पूछूँगा...हो सकता है मेरे प्रश्नों से ही ...आपके प्रश्नों का ..समाधान हो जाए ...विशेषकर आपके द्वारा मुझ पर लगाये गए आरोपों का निराकरण हो जाए! हाँ , पहले तो ये बताइये कि....किस खुशहाल संसार की बात कर रहे हैं आप? वो संसार ...जिसमें इंसान ही इंसान के खून का प्यासा बना हुआ है? या वो संसार जिसमें मानव दानव बन चुका है? भाईसाहब ...मेरी बात पर कुछ भी संशय हो तो ...तसल्ली के लिए विश्व की सरकारों द्वारा जारी आधिकारिक आंकड़ों को देखो ...यह वो संसार है ...जिसमें हर दिन हजारों हत्याएँ होती हैं, हजारों बच्चियों के साथ दुष्कर्म होता है, हजारों मासूमों का अपहरण किया जाता है ...हजारों शिशु गर्भ में ही मार दिए जाते हैं ...बताओ ...क्यों हर दिन करोड़ों पशु पक्षियों का क़त्ल होता है? किसलिए? यानी इंसान अपनी खुशी के लिए अपने सुख के वास्ते ...दूसरों के प्राण कैसे ले सकता है? आखिर क्यों?

आपने कहा कि ऋषि मुनियों से पावन इस धर्मधरा पर भी यह आक्रमण क्यों? तो भाईसाहब अपनी आँखें पूरी तरह से खोलिए ...और देखिये सोने की चिड़िया के नाम से प्रसिद्ध भारत ...आज माँस की चिड़िया बन चुका है ...माँस निर्यात में भारत पूरे विश्व में पहले नम्बर पर आने की तैयारी में है ...जहाँ दूध की नदियाँ बहती थी ...वहाँ रक्त की नदियाँ बह रही हैं ...भारत के हजारों कत्लखानों में हर सुबह छोटे-बड़े लाखों पशुओं को निर्ममता से क़त्ल कर दिया जाता है ...पिछले दस वर्षों में भारतमाता की धरती पर एक लाख से भी ज्यादा धरतीपुत्रों (किसानों) ने आत्महत्या की है ...राजनीति एक भ्रष्टाचार के कीचड़ से भरे गन्दे नाले सी हो गई है, जिसमें अनेक नेता डूबे हुए हैं ...सब की पोल मैंने खोली है ...कुछ गिने-चुने नेता ही देश की निःस्वार्थ सेवा के लिए डटे हुए हैं ...जिस देश में संसद को लोकतन्त्र का मन्दिर कहा जाता हैवहाँ पर भी कुछ नेताओं को गुण्डागर्दी एवं हाथापाई करते शर्म क्यों

नहीं आती? अभी मेरे कोरोना काल को ही ले लो... जब जनता को प्रशासन की जरूरत सबसे ज्यादा थी ...उस समय भी खुद को जनता के सेवक कहने वाले अनेक नेता फाइव स्टार होटल की बाड़ाबन्दी में ...जनता के खून पसीने के करोड़ों रुपयों के खर्च पर ...मुफ्त सुविधाओं का मजा लूट रहे थे ...अनेक लुटेरे नेता ...कुर्सी की खातिर अपना ईमान तक भी बेचकर जनता को लूटते हैं ...आखिर क्यों?

सदियों से पूरे विश्व में अहिंसा और शाकाहार का डंका बजाने वालेइसी भारतवर्ष ..की सरकार ने तोएक अप्रैल 2020 से देश भर की राशन दुकानों में चिकन एवं अण्डों से माँसाहार वितरण की कार्य योजना को अन्तिम रूप भी दे चुकी थी ...उसके लिए हर वर्ष करोड़ों मुर्गियों को मारा जाता, अरबों अण्डों को प्राणरहित कर दिया जाता ...लेकिन आज मेरे प्रकोप और बढ़ते संक्रमण से सरकार ने इसे स्थगित किया है ..वो भी शायद कुछ ही महीनों के लिए ...इससे ज्यादा शर्म की बात क्या होगी कि नशामुक्त भारत का नारा लगाने वाली सरकार ...खुद शराब को निरन्तर बढ़ावा देती है, क्योंकि शराब बिक्री से प्राप्त टैक्स से अत्यन्त भारी मात्रा में सरकारी आय होती है ...कभी सोचा है?...कि जिस देश की अर्थव्यवस्था का विकास शराब और शराबियों पर निर्भर है ...उस देश का भविष्य कितना अन्धकारमय हो सकता है ? आखिर क्यों ?

इलाज के नाम पर स्वास्थ्य के साथ खतरनाक खिलवाड़ किया जा रहा है ...और पाश्चात्य विकृतियों केभारतीय शिक्षाप्रणाली पर कड़े प्रहार से भारतीय संस्कृति घायल सी हो चुकी है ... भारत पहले अंग्रेजों का गुलाम था और अब अंग्रेजी भाषा का गुलाम बनता जा रहा है ...देश के अस्पताल विदेशी दवाओं का व्यापार बढ़ा रहे हैं और देश की स्कूलें विदेशी संस्थाओं का विज्ञापन फैला रही हैं ...अधिकतम अस्पताल और स्कूल ...मोटी कमाई के साधन बन चुके हैं ...शिक्षा और चिकित्सा व्यापार कैसे बन गए? जिस भारत में शिक्षा और चिकित्सा को सेवा का श्रेष्ठ पर्याय माना

जाता रहा ...उसी भारत में करोड़ों लोगपर्याप्त शिक्षा और आवश्यक चिकित्सा से वञ्चित क्यों...? आखिर क्यों?

भारत की जनता हर साल फ़िल्में देखने पर ही अरबों रुपए खर्च करके बदले में ...मनोरञ्जन के नाम पर अश्लीलता और हिंसा के कुसंस्कार खरीदती हैफ़िल्मों में हिंसा और दुष्कर्म इस हद तक बताये जा रहे हैं ... जिससे लोगों की हिंसा और अन्याय के प्रति संवेदना ही मृतप्रायः सी हो चुकी हैनशे की गुलाम बन चुकी ...फ़िल्मी दुनिया के नायक नायिका फूहड़ प्रदर्शन करके भी करोड़ों कमाते हैं ...और क्यों गरीब मेहनत मजदूरी करके भी दो समय का भोजन नहीं जुटा पा रहे? ... अम्बानी और अड़ानी जैसे अमीर लोग और ज्यादा अमीर बनते जा रहे हैं ...और क्यों गरीब और ज्यादा गरीब बनते जा रहे हैं? ...मुठ्ठी भर लोग... पैसे के दम पर मजबूत बनकर करोड़ों को मजबूर बनाकर ...क्यों हुकूमत करते हैं? क्यों हर रात हजारों बच्चे भूखे ही सो जाते हैं उनमें से कई तो अगले दिन का सूरज भी नहीं देख पाते ...आखिर क्यों?

और तो और ...तुम इंसानों ने तो धर्म की आड़ में भी राजनीति की शुरुआत कर दी ...अन्धी परम्पराओं के नाम पर ...अहंकार और आडम्बर खुल कर सामने आ चुके हैं ...सिर्फ थोड़े से सन्त-सती ही बेदाग बचे हैं ...जो आज भी स्वकल्याण की साधना के साथ साथ परकल्याण हेतु महान योगदान दे रहे हैं ...ऐसे महापुरुषों के दम पर हीआज भी संसार में ...कुछ अच्छाई और सच्चाई जीवित है ...इंसान ने अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का शोषण किया ...उसके नापाक इरादों पर लगाम अत्यन्त आवश्यक थी ...शायद इसीलिए मेरी क्रान्ति का आगाज हुआ है ...इस कोरोनाकाल के लॉकडाउन में कत्लखानों के बन्द होने से करोड़ों पशु पक्षियों के प्राण बच गए ...मछली बाजारों के बन्द होने से अरबों मछलियों को ...कोई उनके प्राण यानी पानी से जुदा नहीं कर सकाअनेक दुर्घटनाओं में हर महीने लाखों मनुष्य मरते हैं ... लॉकडाउन में उनकी भी जान

बची ...जानलेवा प्रदूषण में साँस लेना दूभर हो गया था, ...लेकिन लॉकडाउन के कारण वातावरण साफ़ होने से प्रकृति भी खुल कर मुस्कुरा रही है ...

और हाँ ...अब आपके मुख्य इल्जाम का जवाब (थोड़ा आक्रोशित होकर) ...जब इंसान खून की होली खेल सकता है ...तो मैं क्यों नहीं? इंसान के इस खूनी प्रहार का प्रतिकार तो करना ही पड़ेगा ...आज प्रतिकार मेरे माध्यम से हो रहा है ...कल किसी और के माध्यम से होगा ...और वैसे भी निर्दोष प्राणियों की हाय व्यर्थ कैसे जायेगी? जो दुःख दे रहा है उसे भी दुःख मिलेगा ...हाँ, यह जरूरी नहीं कि निर्बल को सताने वाले सबल को.... दण्ड उसी निर्बल से मिले ...उसे दण्ड और भी किसी माध्यम से मिल सकता है ...इस दण्डवितरण की व्यवस्था को ... दण्डदाता कानून को ...व्यावहारिक न्याय समझो अथवा सामाजिक न्याय ...मर्जी आपकी है ! समाज, राष्ट्र और विश्व में अनेक कार्य अन्यायपूर्ण तरीके से होते हैं ...पद के मद और धन के बल परदुर्जन लोग अन्याय करते हैं और अधिकतम लोग स्वयं को निर्बल समझकर अन्याय को सहते हैं ...सक्षम लोगों द्वारा शक्ति होते हुए भी सहन करना ...दुर्जन लोगों के अन्याय की अग्नि को और ज्यादा विकराल बना देता हैऔर परिणाम स्वरूप इस सर्वभक्षी अग्नि में सभी दोषी समाज, राष्ट्र और विश्व झुलसते ही रहते हैं ...और जब अन्याय की अति होती है तब घायल प्रकृतिमेरे जैसे अनेक माध्यमों से रक्षात्मक प्रतिकार करती है ...और प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अन्याय में भागीदार समाज, राष्ट्र और विश्व को सामूहिक दण्ड देती है ।

कोरोना जी ..आपकी इस विस्तृत जानकारी से मैं अत्यन्त हैरान हूँ ...औरपेशान भी हूँ आपके दर्दयुक्त चिन्तन से ...आपके सभी तर्क अकाट्य भी हैं और न्यायसंगत भी ...आपके सभी प्रश्नों के सामने मैं निरुत्तर भी हूँ और शर्मिंदा भीक्योंकि दुर्भाग्य से मैं भी इसी विश्व की अन्यायपूर्ण अव्यवस्था का एक हिस्सा हूँआपका कहना शत-प्रतिशत सही है ...कुछ कुछ

समझ में आ रहा है ...किन्तु दण्ड वितरण का मापदण्ड क्या है? क्यों अनेक बेईमान भी सुखी दिखते हैंऔर क्यों अनेक ईमानदार भी दुःखी दिखते हैं? दुःख प्राप्ति का यह कैसा गणित है कोरोनाजी?

कोरोना : भाईसाहब ...यह गणित से ज्यादा इतिहास का विषय है ...जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के अतीत की क्रिया पर ही ...उसके वर्तमान दुःख अथवा सुख का निर्धारण होता है ...और वर्तमान में दुःख अथवा सुख पर व्यक्ति की प्रतिक्रिया हीउसके भविष्य के दुःख अथवा सुख का निर्धारण करती है। इस पूरे क्रम मेंगणित के साथ साथ विज्ञान का भी महत्त्व है ...और इसके लिए मुझे आपको वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही समझाना पड़ेगा! जैसे कि विज्ञान यह मानता है कि हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है ...वैसे ही इंसान द्वारा दुःख दिए जाने की क्रिया की प्रतिक्रिया है ...दुःख-प्राप्ति। विशेष रूप से समझना है तो ...जैसे न्यूटन के सिद्धान्त के अनुसार ...भारी वस्तु नीचे की तरफ ही गिरेगी, क्योंकि पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति उसे नीचे की तरफ खींचेगी ...वैसे ही जो भी प्राणी पाप के बोझ से भारी बना हुआ है ...वह अवश्य दुःखों के पाताल की तरफ गिरेगा औरइसके विपरीत जो पाप के बोझ से हल्का होगा ...वह हल्का होते होते सुखों के आकाश की ओर उड़ेगा! विज्ञान कहता है कि नाइट्रोजन गैस यदि सीमित मात्रा में वाहन के टायरों में भरी जाए तो सफ़र आरामदायक होगाऔर जरूरत से ज्यादा भर दी जाएगी तो वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो सकता है ...वैसे ही आवश्यकताओं के अनुसार ही सीमित इच्छाएँ होंगीतो जीवन का सफ़र आरामदायक होगा ...एवं आवश्यकताओं से ज्यादा इच्छाएँ होंगी तो जीवन का विध्वंस हो जायेगा ..., आज का इंसान यही गलती कर रहा है ...असीमित इच्छाओं की पूर्ति के लिए भटक रहा है ...जो मिला है उसमें सन्तुष्ट नहीं है ...संसार में स्वयं के सीमित सुख के लिए कोशिश करना, व्यवहार में गलत प्रतीत नहीं होता... किन्तु स्वयं के सुख के लिए दूसरों को दुःख पहुँचाना सरासर गलत है ..अन्याय है।

कोरोना जी ...मैं आपके इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी पूर्ण सहमत हूँ ..किन्तु किसको सुख मिलेगा और किसको दुःखइसका न्याय कौन करेगा?

कोरोना : इस तथ्य को आप दार्शनिक दृष्टिकोण से समझिये ...अच्छा ...सामने जो आम का पेड़ है ...उसमें आप क्या क्या देख सकते हैं ...?

जी बिल्कुल...वो बहुत ही घना आम का पेड़ है ..जिसमें हजारों पत्ते और कुछ फल दिखाई दे रहे हैं ..और पेड़ करीब 10 मीटर चौड़ा और 50 फुट लम्बा होगा ...पर ये कैसा उदाहरण है...? मैंने न्याय के बारे में पूछा है ...तो इससे इस पेड़ का क्या सम्बन्ध है भला?

कोरोना : आपने बताया कि वो पेड़ इतना लम्बा और इतना चौड़ा है ...अच्छा उस पेड़ की जड़ कितनी लम्बी चौड़ी है?

अजीब सवाल है ...जड़ तो धरती के अन्दर छिपी हुई है ...उसे मैं कैसे देख सकता हूँ ?

कोरोना : यानी आप मानते हैं कि पेड़ की जड़ तो है ...किन्तु आप नहीं देख पा रहे...

जी बिल्कुल ...पेड़ की जड़ है तभी तो यह फल फूल रहा है ...

कोरोना : बस यही न्यायसार....मैं आपको समझाना चाहता हूँ ...पेड़ के पत्ते और फल प्रत्यक्ष दिखाई दे रहे हैंऔर पेड़ की जड़ परोक्ष है इसलिए दिखाई नहीं दे रही है ...वैसे ही आपको सिर्फ प्रत्यक्ष परिस्थिति दिखाई दे रही है कि कोरोना की वजह से करोड़ों बीमार हैं ...लाखों मर चुके हैं ...जीवन अस्त-व्यस्त हो चुका है इत्यादि इत्यादि ...लेकिन परोक्ष स्थिति बहुत अलग हैजिनके पाप की जड़ें हरी हैंउनको दुःख की फसल ही प्राप्त हो रही है और प्राप्त होगी ...जिसके पुण्य की पूँजी समाप्त हुई उसको असाता का उदय हुआ भी है और होगा भी ...और कुछ मरण को प्राप्त हुए ...अनेक संक्रमित हुए ...! अच्छा ...आप इतिहास को देखें और बतायें ...कि पूर्व में दोनों विश्व युद्ध के समय कितने लोग मारे गए ?

जीमेरे हिसाब से लगभग पाँच-छह करोड़ लोग मारे गए

कोरोना : तो उस युद्ध में मरने वाले सभी करोड़ों लोग दोषी थे क्या ?

जी नहीं...अनेक निर्दोष भी मारे गए ...युद्ध ही नहीं, बल्कि बम धमाकों में...आतंकी हमलों में अनेक निर्दोष जनता भी मारी जाती है...और तो और ...सड़क दुर्घटनाओं में कई बार वाहनों की टक्कर में कई बार पैदल चलते लोग भी चपेट में आकर मर जाते हैं।

कोरोना : तो निर्दोष इंसानों के साथ ये अन्याय कैसे हो जाता है ? ...कौन करता है ?

यही तो नहीं पता

कोरोना : अब बिल्कुल सही समय है आपको आध्यात्मिक दृष्टिकोण समझाने के लिएक्योंकि व्यावहारिक या सामाजिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक आदि दृष्टिकोण तो समय के साथ परिवर्तित भी हो सकते हैं ...लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण के सिद्धान्त त्रिकाल सिद्ध होते हैंअब मैं आपसे पूछता हूँ ...आप को क्या पसन्द है ...पूर्ण न्याय, आंशिक न्याय या अन्याय ?

कोरोनाजी ये कैसा सवाल है ? सिर्फ मुझे क्याबल्कि हर किसी को न्याय ही पसन्द है ...हर कोई चाहता है कि न्याय ही हो ...और वह भी पूर्ण न्याय।

कोरोना : तो पूर्ण न्याय ही तो हो रहा है ... इसमें दिक्कत क्या है ?

इतने इंसान बीमार हो रहे हैं ...तकलीफ पा रहे हैं ...मर रहे हैं ...और आप बोल रहे हो कि न्याय हो रहा है ..ये कैसा न्याय है ? कभी कभी तो लगता है कि आप अन्याय कर रहे हो ...बल्कि पूरा दोष ही आपका है।

कोरोना : (हँसते हुए) ...अच्छा आप तो फिर मुझे ही दोषी ठहराने लगे!...करेले के बीज बोने वाला ...केसर कैसे पायेगा ? संसार की अदालत में अपराध करने वाले अपराधी कभी कभी छूट भी जाते हैंकिन्तु कर्मसत्ता की अदालत में अपराधी को सजा अवश्य ही मिलती है। अच्छा यह बताओ कि....कानून

के नियमों के अनुसारन्यायाधीश के आदेश परपुलिसकर्मीकैद में एक अपराधी को दण्ड दे रहा है ...तो दोषी कौन ? न्यायाधीश, कानून, पुलिसकर्मी या अपराधी ?

मेरे हिसाब से तो ..अपराधी ने स्वयं के कर्तव्य की सीमा को लाँघकर अपराध किया हैतो सिर्फ अपराधी ही दोषी है ...बाकी सभी तो अपने अपने कर्तव्य का पालन ही तो कर रहे हैं ...

कोरोना : तो मैं भी तो उस पुलिसकर्मी की तरह अपने कर्तव्य का पालन ही तो कर रहा हूँ ना ...मेरा कार्य सिर्फ दण्ड देना है ...दण्ड किसे देना, कहाँ देना, कितना देना, कब देना ? ...यह सब मेरा कार्यक्षेत्र नहीं हैबल्कि कर्म, नियति, स्वभाव, समय जैसे न्यायाधीशों की सामूहिक टीम हैजो व्यक्ति के पुरुषार्थ के मापदण्ड पर ...उसकी गलतियों पर दण्ड का फैसला सुनाती है और उसके सद्कार्यों पर अभिनन्दन का फैसला ...किसी को उपहार ..तो किसी को सजाउन्होंने जिनके लिए मौत की सजा लिखी उनको मौत और जिनको जितनी तकलीफों की सजा लिखी उनको उतनी तकलीफें मिलेंगी ही ...और वो सजा देने वाला कोई भी माध्यम अथवा निमित्तयानी कोई भी ...व्यक्ति, वस्तु अथवा परिस्थिति भी हो सकती हैवो मैं कोरोना भी हो सकता हूँ या और भी कोईकैंसर, शुगर, हार्ट सम्बन्धी, मलेरिया, डेंगू या अन्य कोई बीमारी भी हो सकती है ...या फिर ...किसी भी तरह की दुर्घटना, युद्ध, दुष्काल या अन्य कोई प्राकृतिक आपदा ...इत्यादि कोई भी माध्यम अथवा कोई भी व्यक्ति, पशु या अस्त्र-शस्त्र भी हो सकता है ...अब बताओ कि ... दोष किसका ?

जी..??....जी ...दोष तो ...यानीजिनके पाप का उदय है ...उन्हें बीमारी से कोई भी नहीं बचा सकता और जिनके पास पुण्य का पूर्ण सुरक्षा चक्र है ...कोई भी बीमारी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती ...

कोरोना : यानी अब आप मानते हैं कि दोष

व्यक्ति के स्वयं के पाप का है ?

जी बिल्कुल ...

कोरोना : अगर...व्यक्ति का पाप ही दोषी है तो ...इल्जाम मुझ पर क्यों? या किसी और पर भी क्यों? आप गहराई से चिन्तन कीजियेदुःख आना अलग बात है ...और उसमें दुःखी होना अलग बातयाद कीजिये सनत्कुमार मुनि के जीवन को ... अनेक वर्षों तक महारोगों से घिरे रहे...किन्तु लेशमात्र भी दुःखी नहीं हुए ...वो गजसुकुमाल मुनि ...सिर पर धधकते अङ्गारे ...किन्तु फिर भी किसी को दोष नहीं दिया ...प्रभु महावीर के जीवन में अनेक वर्षों तक कष्टों ने कोहराम मचा दिया ...फिर भी कोई प्रतिकार नहीं... प्राकृतिक न्याय को सहजता से स्वीकार किया ... स्वदोष का निराकरण कर शाश्वत सुखों के नाथ बन गए ...कहने का तात्पर्य यही है कि...वेदना उसे ही होती है ...जिसने शरीर को अपना माना है ...संसार को अपना माना हैऔर संसार में पाप का स्वागत करने वाले को ...पीड़ा को स्वीकार करना ही पड़ेगा!

बिल्कुल सही फ़रमाया आपने ...यानी दुःख देकर सुख की चाहततो यह तो बहुत मुश्किल है फिर ?

कोरोना : मुश्किल नहीं ...बल्कि असम्भव है ...दुःख के बदले सुखतीन काल में नहीं मिल सकता ... इतने सालों तक इंसानों ने पशु-पक्षियों को तकलीफें दी ...उन्हें तड़पा तड़पा कर मारा ...अनेक धनवान इंसानों ने गरीबों का शोषण किया ...कत्लेआम किया ...ये सब करके वास्तव में सिर्फ स्वयं का ही नुकसान किया जो बोया ..वही तो मिलेगा ...दुःख देकर कोई सुख कैसे प्राप्त कर सकता है? यही तो प्राकृतिक न्याय है भाईसाहब ...शत-प्रतिशत सही ही होता है।

लेकिन अब इस महामारी की समस्या का समाधान क्या है? क्या वैक्सीन से इसका समाधान होगा ?

कोरोना : अभी तक तो संसार मुझे समझ ही नहीं पायाकोई महीनों तक बड़े अस्पतालों में भर्ती रहकर भी ठीक नहीं हो पा रहा ...तो कोई काढ़ा पीकर भी ठीक हो जाता है ...कोई गिलोय और हल्दी लेकर भी ठीक नहीं होता ...तो कोई एकान्त में रहकर या आहार का त्याग करके भी स्वस्थ हो जाता है ...यह सब कैसे? यही तो पुण्य और पाप का खेल है भाईसाहबऔर वैक्सीन ...वैक्सीन-निर्माण के प्रयोगों मेंलाखों पशु-पक्षियों की घात करके ...इंसान फिर गलती कर रहा है ...खून से सने वस्त्र को खून से ही साफ़ करना चाहता है ...हिंसा का समाधान हिंसा कभी नहीं हो सकता ...अहिंसा ही एकमात्र साधन भी है और समाधान भीसाथ हीपरिस्थिति को कोसना बन्द करें ... दुःख नहीं चाहिए तो पहले दुःख देना बन्द करना पड़ेगा ...पाप के बीज से सिर्फ दुःख का पेड़ ही उगेगा और उसपर सिर्फ असाता के ही फल लगेंगे ...उसे जड़ से उखाड़ना होगा ...धर्म के बीज पर ही पुण्य रूपी सुख का पेड़ फलता है ..जिस पर साता के फल प्राप्त होते हैं।

आपका बहुत बहुत आभार ...कोरोना जी ...सभी प्रश्नों का आपने व्यावहारिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अपने विचारों को विस्तृत रूप से रखालेकिन यह क्या ...अरे कोरोनाजीआप कहाँ चले गए ...? ...दरवाजा तो अन्दर से बन्द ही है ...फिर आप कैसे चले गए? न तो आप दिखाई दे रहे हैंऔर न ही ...और कुछ दिखाई दे रहा है ...सिवाय अन्धेरे केपरन्तु हर तरफ यह अन्धेरा क्यूँ?

मैंने आँखें खोली ...उठकर दरवाजा खोला ... सूर्य की सीधी रोशनी कमरे के भीतर आईअभी अभी हुआ सूर्योदय ...आकाश में भी और मेरे जीवन में भीसूर्य नींद से जगाने के लिए आया है ...और विचारों का यह सूर्योदयजैसे मुझे अज्ञान के अन्धकार से जगाने के लिए आया हैऔर कोरोना

...कितना सटीक चिन्तन है कोरोना का ...सोचा तो मैंने यह था कि ..कोरोना के साथ साक्षात्कार से सत्य सामने आएगालेकिन यह कभी नहीं सोचा था कि ...कोरोना मेरा ही साक्षात्कार सत्य के साथ करा देगा ...दुःख-समाप्ति और सुख-प्राप्ति का ...शाश्वत

सत्य ...और काश इस शाश्वत सत्योदय से अहिंसा का वो शंखनाद होजो इस विश्व के पावन आर्यक्षेत्र कोफिर से पवित्र तीर्थ बना सके।

- "JINSHASAN", B-102, Veetrag City, Jaisalmer bypass Road, Jodhpur-342008 (Raj.)

मेरी कीमत 20 लाख

अनुश्री

प्रिय बहिनों!

खुली आँखों के सपने अक्सर झूठे होते हैं, बन्द आँखों के सपने अपने कब होते हैं? जिन्दगी एक सपना है प्यारी बहनों, विवेक की आँख से देखो तो सच होते हैं। मैं अपने बॉयफ्रेंड के साथ भाग गई। हम दोनों ने बहुत सारे सपने सजाए। घूमते हुए एक शहर में स्वास्थ्य खराब होने पर एक लेडी डॉक्टर को दिखाया। बातों ही बातों में हमने अपनी सारी बात बतला दी। उन्होंने मुझे एक मार्केट से कुछ लाने को कहा। मैं गई तो वह मार्केट 'मीट' का था। मैं वहाँ की बदबू और दृश्य को देख न सकी। उनका समान लेकर तो आ गई, किन्तु जी मिचलाने लगा। डॉक्टर को बताया तो बोली- 'ये तो तुम्हारे जीवन का कर्म बनने वाला है। तो हमने कहा-नहीं मैं शाकाहारी हूँ, ऐसे दृश्य तो मैं देख भी नहीं सकती हूँ।' वह बोली-देखना तो छोड़ो, खाना भी पड़ेगा। चाहो तो आप अपने बनने वाले हसबैण्ड से पूछ लेना।

तब मैंने होटल में हनीफ से पूछा क्या तुम्हारे घर में मुझे मीट, खून, कटे जानवर देखने पड़ेंगे, तो हनीफ बोला देखने ही नहीं बनाना भी पड़ेगा क्योंकि हम

मुसलमान हैं और फिर वे खाने की चीज है। हम खायेंगे भी। मैंने कहा- 'मैं तो नहीं खा पाऊँगी। मैं उसे देख भी नहीं पाऊँगी। मैं बीमार पड़ जाऊँगी।'

तो हनीफ ने बड़े ही प्यार से समझाया। देखो धीरे-धीरे सब सहज हो जाएगा। तुम मुझे प्यार करती हो न, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। तुम मुझे प्यार से जो भी खिलाओगी, मैं खाऊँगा और मैं तुम्हें प्यार से जो खिलाऊँगा वह तुम खाना। प्यार में कुछ भी पता नहीं चलेगा। मेरी अम्मीजान प्यार से तुम्हें सब कुछ करना सिखा देगी।

रात भर मैं सोच-सोचकर रोती रही। मैं यह हिंसा कैसे देख/कर पाऊँगी? मीट, अण्डे, मछली कैसे सेवन कर पाऊँगी? रात में दो-तीन बार उल्टियाँ भी हुईं। सुबह हमने घर जाने की इच्छा ज़ाहिर की तो बोला कौनसा घर, कैसा घर, अब तो जो मैं कहूँ वैसा करते जाओ; इसी में तुम्हारी भलाई है। चुपके से मैंने पापा को फोन किया। पापा आ गए तब हनीफ ने 20 लाख की डिमाण्ड रखी, साथ में धमकियाँ भी दीं। 20 लाख देकर पापा ने मुझे बचाया। किन्तु मैं तो अपना सब कुछ खो चुकी हूँ।

सब कुछ खोकर, विवेक की आँखें खुलीं।

प्यारी बहिनों, चेतो, विवेक की आँखें खोलो।

- 'लव केमिस्ट्री' पुस्तक के साभार से

आवश्यकसूत्र के नमूना प्रश्नपत्र में संशोधन

जिनवाणी, सितम्बर 2020 में प्रकाशित आवश्यकसूत्र के नमूना प्रश्नपत्र में पृष्ठ 87 पर (1) में 'इक्कम' को 'वइक्कम' पढ़ा जाए।

-आ. शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

आओ मिलकर कर्मों को समझें (8) (ज्ञानावरणीय कर्म)

श्री धर्मचन्द्र जैन

जिज्ञासा- ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध कब तक होता है?

समाधान- जब तक मोहनीय कर्म का उदय रहता है, तब तक ज्ञानावरणीय कर्म निरन्तर हर जीव के बँधता रहता है। दूसरे शब्दों में जब तक कषायों का उदय चलता है, तब तक ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध होता ही है। इतना अवश्य है कि जो जीव जिस गुणस्थान में है तथा जितना अधिक सजग एवं सावधान है, उदय में आने वाले कषायों से जितना कम जुड़ता है, जितना कम प्रभावित होता है, उतना ही उस जीव के ज्ञानावरणीय कर्म कम बँधता है। यह कर्म ध्रुवबन्धी स्वभाव वाला होने के कारण कषायोदय में अवश्य ही बँधता है।

जिज्ञासा- ज्ञानावरणीय कर्म कितनी स्थिति का बँधता है?

समाधान- ज्ञानावरणीय कर्म कम से कम अन्तर्मुहूर्त्त की स्थिति का तथा अधिक से अधिक 30 कोटाकोटि सागरोपम की स्थिति का बँधता है। इन दोनों के बीच की स्थिति का बन्ध मध्यम स्थिति का कहलाता है। जीवों में जितना-जितना संक्लेश भाव अधिक रहता है, उतना-उतना ही अधिक स्थिति का बन्ध होता है तथा जितना-जितना विशुद्धि का भाव रहता है, उतना-उतना कम स्थिति का बन्ध होता है।

जिज्ञासा- किन-किन गुणस्थानों में जीवों के ज्ञानावरणीय कर्म की कितनी-कितनी स्थिति का बन्ध होता है?

समाधान- पहले गुणस्थान में एकेन्द्रिय की अपेक्षा एक सागरोपम के सात भागों में से तीन भाग तथा उसमें भी पत्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम जितनी स्थिति का जघन्य बन्ध होता है तथा अधिक से अधिक 30

कोटाकोटि सागरोपम का सन्नी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक की अपेक्षा बन्ध हो सकता है। दूसरे गुणस्थान से लेकर आठवें गुणस्थान तक के जीवों में जघन्य तथा उत्कृष्ट अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की स्थिति का बन्ध होता है। इतना अवश्य है कि जघन्य से उत्कृष्ट में संख्यात गुणा अन्तर होता है। साथ ही यह भी समझना कि चौथे, पाँचवें, छठे, सातवें, आठवें गुणस्थानों में जैसे-जैसे विशुद्धि बढ़ती जाती है तो अन्तःकोटाकोटि सागरोपम का काल भी छोटा बन्धता है।

उदाहरणार्थ- पहले गुणस्थान में अन्तःकोटा-कोटि सागरोपम को समझने के लिए एक करोड़ वर्ष प्रमाण मान लें तो चौथे गुणस्थान में 50 लाख वर्ष, पाँचवें में 25 लाख वर्ष, छठे में 12.5 लाख वर्ष, सातवें में 6.25 लाख वर्ष तथा आठवें में 3.12 लाख वर्ष के लगभग स्थिति का ही ज्ञानावरणीय कर्म बँधता है।

एक करोड़ सागरोपम से एक समय अधिक से लेकर एक कोटाकोटि सागरोपम से एक समय कम तक की स्थिति का बन्ध अन्तःकोटाकोटि सागरोपम में गिना जाता है।

नवम गुणस्थान के प्रारम्भ में भी अन्तःकोटाकोटि सागरोपम का ही बन्ध होता है, किन्तु आठवें गुणस्थान में होने वाले अन्तःकोटाकोटि के बन्ध से असंख्यात गुण हीन अर्थात् असंख्यात भाग प्रमाण स्थिति का होता है। इसे उपशमनाकरण में अन्तःकोटाकोटि सागरोपम अर्थात् एक करोड़ सागरोपम से कुछ कम का बतलाया है।

नवम गुणस्थान में यह अन्तःकोटाकोटि सागरोपम का बन्ध कम होते-होते अन्त में एक दिन-रात प्रमाण स्थिति का बन्ध होता है। दसवें गुणस्थान में

ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध अन्तर्मुहूर्त्त प्रमाण होता है। ग्यारहवें से चौदहवें गुणस्थान में कषायों का, मोहनीय कर्म का लेश मात्र भी उदय नहीं होने से ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध नहीं होता है।

जिज्ञासा— कौन-कौन से जीवों के ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध कितना-कितना होता है ?

समाधान— एकेन्द्रिय जीवों के ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध जघन्य एक सागरोपम के सात भागों में से तीन भाग तथा उसमें भी पत्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम जितनी स्थिति का होता है तथा अधिक से अधिक एक सागरोपम के सात भागों में से तीन भाग के बराबर स्थिति का होता है। जितना एकेन्द्रिय जीवों के ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध होता है, उससे 25 गुणा बेइन्द्रिय जीवों के, 50 गुणा तेइन्द्रिय जीवों के, 100 गुणा चौरैन्द्रिय जीवों के तथा 1000 गुणा असन्नी पञ्चेन्द्रिय जीवों के होता है। दूसरे शब्दों में इसे तालिका के रूप में इस प्रकार समझ सकते हैं—

जीव	जघन्य बन्ध
एकेन्द्रिय	एक सागरोपम का 3/7 भाग में पत्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम
बेइन्द्रिय	25 सागरोपम का 3/7 भाग में पत्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम
तेइन्द्रिय	50 सागरोपम का 3/7 भाग में पत्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम
चौरैन्द्रिय	100 सागरोपम का 3/7 भाग में पत्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम
असन्नी पञ्चेन्द्रिय	1000 सागरोपम का 3/7 भाग में पत्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम
सन्नी पञ्चेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त्त
जीव	उत्कृष्ट बन्ध
एकेन्द्रिय	एक सागरोपम का 3/7 भाग
बेइन्द्रिय	25 सागरोपम का 3/7 भाग अर्थात् 75/7 भाग
तेइन्द्रिय	50 सागरोपम का 3/7 भाग

अर्थात् 150/7 भाग

चौरैन्द्रिय 100 सागरोपम का 3/7 भाग

अर्थात् 300/7 भाग

असन्नी पञ्चेन्द्रिय 1000 सागरोपम का 3/7 भाग

अर्थात् 3000/7 भाग

सन्नी पञ्चेन्द्रिय 30 कोटाकोटि सागरोपम

जिज्ञासा— सन्नी पञ्चेन्द्रिय में अन्तर्मुहूर्त्त की ज्ञानावरणीय कर्म की स्थिति कब बँधती है ?

समाधान— सन्नी पञ्चेन्द्रिय में जो कर्मभूमिज मनुष्य होते हैं, उनमें जो संयम अङ्गीकार करके दसवें गुणस्थान को प्राप्त कर लेते हैं, तब उनमें दसवें गुणस्थान के अन्त में ज्ञानावरणीय कर्म का जो बन्ध होता है, वह मात्र अन्तर्मुहूर्त्त की स्थिति का होता है। उसके बाद उनके ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध रुक जाता है।

सन्नी पञ्चेन्द्रिय में नारकी-देवता अधिकतम चौथे गुणस्थान तक वाले होते हैं तथा तिर्यञ्चों में अधिकतम पाँचवें गुणस्थान तक वाले होते हैं, युगलिकों में अधिकतम चौथे गुणस्थान तक वाले होते हैं, इसलिए उनके तो ज्ञानावरणीय कर्म का जघन्य तथा उत्कृष्ट बन्ध अन्तःकोटाकोटि सागरोपम का ही होता है। जघन्य से उत्कृष्ट बन्ध कुछ अधिक (संख्यात गुणा तक) होता है। **जिज्ञासा**— ज्ञानावरणीय कर्म का जघन्य स्थिति बन्ध उपशम श्रेणि वालों के होता है अथवा क्षपक श्रेणि वालों के ?

समाधान— प्रज्ञापना सूत्र के 23वें पद के अनुसार उपशमक अथवा क्षपक दोनों में से किसी के भी दसवें गुणस्थान के अन्त में ज्ञानावरणीय कर्म का जघन्य स्थिति बन्ध माना गया है। जैसाकि कहा है—

णाणावरणिज्जस्स णं भन्ते! कम्मस्स जहण्णठिति बन्धए के ?

गोयमा! अण्णयरे सुहुम संपराए उवसामए वा खवए वा एस णं गोयमा! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स जहण्ण ठिति बन्धए, तव्वइरित्ते अजहण्णे।

अर्थात् हे भगवन्! ज्ञानावरणीय कर्म की जघन्य

स्थिति का बन्धक कौन है ?

गौतम! वह अन्यतर (कोई एक) सूक्ष्मसम्पराय उपशामक (उपशम श्रेणि वाला) या क्षपक (क्षपक श्रेणि वाला) होता है। हे गौतम! यही ज्ञानावरणीय कर्म का जघन्य स्थिति का बन्धक होता है, इसके अतिरिक्ति अजघन्य स्थिति का बन्धक होता है।

इस प्रकार से आगम के अनुसार तो उपशम श्रेणि वाले और क्षपक श्रेणि वाले दोनों को दसवें गुणस्थान के अन्त में ज्ञानावरणीय कर्म की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त का बन्धक माना गया है।

कर्म-साहित्य के अनुसार जो क्षपक श्रेणि वाले होते हैं, उनकी विशुद्धि अधिक होने के कारण उन्हीं के जघन्य स्थिति बन्ध माना जाता है। उपशम श्रेणि वालों के क्षपक की तुलना में विशुद्धि कम होने से, उनके क्षपक श्रेणि वालों से दुगुना अर्थात् दो अन्तर्मुहूर्त्त के बराबर ज्ञानावरणीय कर्म का जघन्य स्थिति बन्ध माना जाता है।

आगम और कर्म-साहित्य दोनों में क्षपक श्रेणि वाले को तो जघन्य स्थिति का बन्धक माना ही है, किन्तु जहाँ आगम में उपशम श्रेणि वाले को भी जघन्य

स्थिति का बन्धक माना वह नीचे के गुणस्थानों में अर्थात् 1 से 9 तक के गुणस्थानों में जितना ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध होता है उससे तो दसवें गुणस्थान में कम ही होता है, इस अपेक्षा से समझा जा सकता है। विशेष तो ज्ञानी कहे वही प्रमाण मानना चाहिए।

जिज्ञासा— ज्ञानावरणीय कर्म का उत्कृष्ट स्थिति बन्ध कौनसा जीव करता है ?

समाधान— ज्ञानावरणीय कर्म का उत्कृष्ट स्थिति बन्ध चारों गति के सन्नी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक मिथ्यादृष्टि जीव तीव्र संक्लेश परिणामों में करते हैं। उत्कृष्ट योग तथा उत्कृष्ट संक्लेश दोनों होने पर ही ज्ञानावरणीय कर्म का उत्कृष्ट स्थिति बन्ध हो सकता है। आठवें देवलोक से ऊपर के देवता, युगलिक तिर्यञ्च तथा युगलिक मनुष्य इनमें उत्कृष्ट संक्लेश के परिणाम नहीं पाये जाने के कारण ये उत्कृष्ट स्थिति का बन्ध नहीं करते हैं।

(क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न
आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

जिनवाणी पर अभिमत

सितम्बर, 2020 की जिनवाणी पढ़ने का सौभाग्य मिला, मैंने जैनधर्म से सम्बन्धित जितनी भी पत्रिकाएँ पढ़ी हैं, उनमें मेरे मत में जिनवाणी सर्वश्रेष्ठ है।

सितम्बर, 2020 के अंक में सम्पादकीय 'कर्त्तव्य का अभिमान कैसे मिटे अन्तर को छू लेने वाला है। उसे बार-बार पढ़ा जाना चाहिये। हम कोई छोटा-सा परोपकार का, धर्म का कार्य कर लेते हैं, उसका गुणगान करते नहीं थकते, अपेक्षा रहती है सब हमारी प्रशंसा करें। डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने बहुत ही सरल भाषा में उससे निकलने का उपाय दिया है।

'संघोन्नति के तीन सूत्र' प्रवचन श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने सरल भाषा में समझाया, अनुकरणीय है, श्री अरुणजी मेहता का 'बन्धन से मुक्ति का मार्ग' भी प्रेरक है। 'रासायनिक कृषि के अभिशाप' ज्ञान वर्धक है।

सभी लेख आत्मोन्नति करने वाले तथा ज्ञानवर्धक है। इसी कलेवर की भविष्य में भी अपेक्षा है। साधुवाद, शुभकामनाएँ?

-राजेन्द्र नाहर, भोपाल

आवश्यक सूचना— 'आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी के अवसर पर 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका का दिसम्बर 2020 का अंक 'जैन जीवनशैली' विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा, उसके पूर्व नवम्बर, 2020 का अंक पाठकों की सेवा में प्रेषित नहीं हो सकेगा।

-मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द जैन

आचाराङ्गसूत्र की अनुप्रेक्षा-सम्पादक : डॉ. धर्मचन्द जैन, **प्रकाशक**-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, सुबोध बॉयज सीनियर सैकेण्डरी के स्कूल के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 0141-2575997, **अध्यक्ष** **प्राप्ति-स्थल**-श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर, फोन 0291-2624891 (2) संस्कार प्रकाशन, जोधपुर, फोन. 0291-2753718 (3) श्री नवरतनजी भंसाली, बेंगलोर, फोन 080-22265957 (4) श्री पदमचन्दजी कोठारी, अहमदाबाद, फोन 9429303088 (5) श्री मनोजजी संचेती, जलगाँव, 9422591423, **प्रथम संस्कारण**-आचार्य श्री हस्ती दीक्षा-शताब्दी विक्रम सम्बत् 2077 (वर्ष 2020), **पृष्ठ**-138 + 14 = 152, **मूल्य**-50 रुपये। पोस्टेज अतिरिक्त देय।

आचाराङ्गसूत्र के नवनीत रूप में यह पुस्तक स्वागत योग्य है। पुस्तक में परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के सुशिष्य रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के चेन्नई चातुर्मास में 11-12 अक्टूबर, 2011 को 'आचाराङ्गसूत्र' पर आयोजित स्वाध्याय-कार्यशाला (संगोष्ठी) में विद्वानों एवं महासतियों द्वारा प्रस्तुत आलेख-प्रवचनों का संकलन प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही कुछ अन्य सन्तों एवं विद्वज्जनों के आलेख भी योजित किये गये हैं। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के विचार तथा विद्वानों में प्रो. सागरमलजी जैन, प्रो. कमलचन्दजी सोगानी आदि के आलेख विशेष उल्लेखनीय हैं।

द्वादशाङ्गी में आचाराङ्गसूत्र का प्रथम स्थान है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध में 9 अध्ययन

हैं, जिनमें से 7वाँ अध्ययन 'महापरिज्ञा' का लोप हो गया है। इस आगम में श्रमणों के आचार की शिक्षा दी गई है जो सामान्य गृहस्थों के लिए भी उपयोगी है। आचाराङ्गसूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध में 16 अध्ययन हैं। कुल गाथा प्रमाण 2,500 है। द्वितीय श्रुतस्कन्ध में ज्ञानाचार आदि पाँच आचारों का विस्तृत वर्णन किया गया है। पंचमहाव्रतों की चर्चा की गई है। आचाराङ्ग में आत्मवाद, कर्मवाद, क्रियावाद और लोकवाद का निरूपण करते हुए आत्मा एवं पुनर्जन्म की अवधारणा को पुष्ट किया गया है। इसमें ध्यान-साधना की भी प्रचुर सामग्री उपलब्ध है। इसमें प्रथम श्रुतस्कन्ध में आभ्यन्तर साधना के सूत्र उपलब्ध हैं और द्वितीय श्रुतस्कन्ध में बाह्य-साधना के स्वरूप के सूत्र उपलब्ध हैं। ये सूत्र साधक के जीवन के उन्नयन और परिष्कार से सम्बन्धित प्रेरक सूत्रों की निधि हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में जो आलेख-प्रवचन प्रस्तुत किये गये हैं, वे सभी विद्वज्जनों एवं सन्त-सतियों के द्वारा आचाराङ्गसूत्र के स्वाध्याय के पश्चात् गहन-चिन्तन मनन करके लिखे गये हैं, इसलिये प्रस्तुत ग्रन्थ का नाम 'आचाराङ्गसूत्र की अनुप्रेक्षा' सार्थक है।

प्रस्तुत पुस्तक में आचाराङ्गसूत्र से सम्बन्धित 18 आलेख-प्रवचन प्रकाशित हैं, जिनमें से 6 प्रवचन सन्त-मुनिराजों एवं महासतियों के और शेष 12 आलेख प्रख्यात विद्वज्जनों के संकलित हैं। सभी आलेख और प्रवचन आचाराङ्गसूत्र की अलग-अलग विशिष्टताओं को लेकर विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किये गये हैं जो सम्पूर्ण रूप से आचाराङ्गसूत्र को पढ़कर समझने के लिए अतीव उपयोगी, ज्ञानवर्धक प्रेरणादायी एवं जीवन में ग्रहण करने योग्य हैं। आचाराङ्गसूत्र में सूत्र रूप में विषय को प्रकट किया गया है जिसे विद्वानों के द्वारा विशद रूप से स्पष्ट समझाया गया है। सभी आलेख और प्रवचनों में साधक की जीवनशैली, आचरण, साधना, जीवन-पद्धति, दुःख-मुक्ति, अहिंसा, आत्मिक-सुख, ध्यान-साधना और अप्रमत्त-जीवन आदि की प्रेरणा प्रदान की गई है।

प्रस्तुत पुस्तक में सार-रूप में विभिन्न आलेखों एवं प्रवचनों के माध्यम से 'आचाराङ्गसूत्र' का सार नवनीत के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। जिसका अध्ययन करके पाठक 'आचाराङ्गसूत्र' के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकता है। यह पुस्तक उन सभी पाठकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी जिनको मूल आगम की अर्धमागधी प्राकृत भाषा को पढ़ना एवं समझना कठिन लगता है। स्वाध्यायियों एवं जिज्ञासुओं के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

आचार्य श्री हस्ती के विशिष्ट कीर्तिमान-लेखक : नौरतनमल मेहता, **प्रकाशक पुस्तक प्राप्ति स्थल-**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, सुबोध बाँयज सीनियर सैकेण्डरी के स्कूल के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 0141-2575997, **अव्य प्राप्ति-स्थल-**पूर्वोक्त पुस्तक में प्रकाशित के अनुसार, **प्रथम संस्करण-**आचार्य श्री हस्ती दीक्षा-शताब्दी, विक्रम सम्वत् 2077 (वर्ष 2020), **पृष्ठ-101 + 27 = 128, मूल्य-40** रुपये। पोस्टेज अतिरिक्त देय।

यह पुस्तक अध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के प्रेरक जीवन का संक्षेप में सजीव चित्रण करती है। लेखक ने 'नमो पुरिसवरगन्ध-हृत्थीणं' सहित अनेक पुस्तकों के साथ अपने अनुभव का आलम्बन लेकर इसे सुन्दर रूप प्रदान किया है। प्रारम्भ में लेखक ने आचार्यश्री हस्ती की जीवनरेखा अंकित की है जो आचार्यश्री के जीवन का सम्पूर्ण बोध कराने में सक्षम है। इस जीवन रेखा में ही उनके सम्पूर्ण विशिष्ट कीर्तिमानों का भी उल्लेख है। उनकी प्रेरणा से स्थापित संस्थाओं का भी संक्षिप्त परिचय के रूप में नामोल्लेख किया गया है। आचार्यश्री के विशिष्ट गुणों और उनके तेजस्वी प्रेरक व्यक्तित्व की जानकारी भी इससे प्राप्त होती है। इसके साथ ही उनके कृतित्व, नेतृत्व, चातुर्मास तथा उनके द्वारा दीक्षित सन्त-सतियों की जानकारी भी इस जीवन-रेखा के अध्याय से ही हो जाती है।

प्रस्तुत रचना का महत्त्वपूर्ण अध्याय आचार्यश्री

हस्ती के विशिष्ट कीर्तिमानों से सम्बन्धित है, जिसमें 108 शीर्षकों से उनके जीवन से सम्बन्धित विभिन्न विषयों का संक्षिप्त एवं सारगर्भित वर्णन किया गया है। इन शीर्षकों में आचार्यश्री हस्ती के जन्म से लेकर संथारे तक की सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओं एवं ऐतिहासिक तथा क्रान्तिकारी कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत की गई है। विषय-वस्तु का लेखन इतना धाराप्रवाह एवं स्पष्ट तथा सहज-सुबोध शैली में प्रस्तुत किया गया है कि पाठक पुस्तक का निरन्तर स्वाध्याय करता रहेगा। पुस्तक के आद्योपान्त पठन करने से पाठक को आचार्यश्री के सम्पूर्ण जीवन एवं मृत्युमहोत्सव तथा उनके कृतित्व का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। पाठक को ज्ञात होता है कि आचार्यश्री हस्ती का तो सम्पूर्ण जीवन ही विशिष्ट कीर्तिमान है और मृत्युमहोत्सव में तेरह दिवसीय संथारा भी एक विशिष्ट कीर्तिमान है।

प्रस्तुत पुस्तक के अन्य अध्याय में लेखक ने स्थानकवासी जैन परम्परा में गौरवशाली आचार्यों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है, जो प्रासङ्गिक भी है। पुस्तक के एक अध्याय में रत्न संघ के आचार्यों का प्रेरणादायी परिचय प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का भी संक्षिप्त परिचय जीवन-रेखा सहित प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत रचना के अन्तिम भाग में आचार्यश्री हस्ती के प्रिय भजनों को प्रस्तुत किया गया है। सभी भजन आध्यात्मिक प्रेरणादायी और आत्मा को भाव-विभोर कर देने वाले हैं और प्रतिदिन गाये जाने योग्य हैं।

लेखक ने यह पुस्तक रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर जिनशासन गौरव पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को सविनय समर्पित की है तथा पुस्तक के प्रारम्भ में संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक एवं रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के शुभकामना सन्देश भी प्रकाशित हैं। यह रचना आबालवृद्ध सभी के लिए पठनीय एवं प्रेरणादायी है।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महाराजगी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

समाचार विविधा

कोसाणा में पारस्परिक दूरी के साथ तपाराधन एवं ज्ञानाराधन

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग एवं व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा कोसाणा में सुख-साता पूर्वक विराज रहे हैं। स्वास्थ्य में समाधि है तथा आचार्य भगवन्त सतत स्वाध्याय एवं आत्म साधना में लीन रहते हैं। महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा नियमित रूप से भगवतीसूत्र की वाचना, विवेचन, जिज्ञासा-समाधान प्रातः 9.15 से 10.15 बजे तक किया जा रहा है। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आगत श्रद्धालुओं की जिज्ञासा, पृच्छाओं का समाधान करते हुए धर्माचरण की प्रेरणा करते हैं। श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. दोपहर पश्चात् 2 से 3 बजे सामायिक के पाठों का उच्चारण, अर्थ, भावार्थ सिखा रहे हैं। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. के छह की तपस्या सम्पन्न हुयी है।

सरकार के आदेश एवं संघ के निर्देश-नियमावली के अनुसार कोसाणा श्रीसंघ सुव्यवस्था रखते हुए सोशियल डिस्टेंसिंग का पालन कर रहा है।

तपाराधिका सुश्राविका श्रीमती मंजूदेवी जी धर्मपत्नी श्री अनोपचन्द्रजी बाघमार ने मासखमण की तपस्या पूर्ण की है। प्रतिवर्ष आचार्य भगवन्त की सेवा में दीर्घ तपस्या करने वाले तपस्वी श्री मोहनलालजी जैन पोरवाल ने 36 उपवास की तपस्या सम्पन्न की है। तप अनुमोदना में सभी ने कोई न कोई नियम ग्रहण कर तपस्वियों का बहुमान किया है। जोधपुर से तपाराधिका श्रीमती सन्तोषदेवीजी धर्मसहायिका श्री बहादुरमलजी डोसी ने सपरिवार पूज्य गुरुदेव के दर्शन-वन्दन कर 70 उपवास की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। अरटिया कलों के सुश्रावक श्री लूणकरणजी कर्णावट ने अठाई तथा अशोकजी कर्णावट ने 25 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. की सांसारिक सुपौत्री सुश्री वृद्धिजी बोहरा ने अठाई तप एवं सुपुत्र पवनजी ने 5 उपवास की तपस्या की। अरटिया कलों के नौ युवक-युवतियों ने तेले की तपस्या के प्रत्याख्यान किये।

आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी में यहाँ आठ से बारह वर्ष के 10 बच्चे प्रतिक्रमण सीख रहे हैं। बालवय ज्ञानार्थी श्री डुगूजी उपासकदशाङ्गसूत्र सीखने में पुरुषार्थरत हैं। पूर्व सरपंच श्री भँवरलालजी के सुपुत्र श्री सुनीलजी सारस्वत एवं श्री कालूजी के सुपुत्र केशूजी सारस्वत ने आजीवन गुटखा त्याग का नियम ग्रहण किया।

सांत्सरिक क्षमा-याचना की दृष्टि से अनेक ग्राम-नगरों के श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हुआ तथा व्रत-नियम अङ्गीकार किये। कोसाणा श्रीसंघ के अतिरिक्त श्री पदमचन्द्रजी कोठारी निमाज वाले सपरिवार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्री बीनाजी मेहता सपरिवार, श्रावकरत्न श्री सुभाषजी धोका, मैसूर सपत्नी सेवा-भक्ति, साधना, धर्माराधना का लाभ ले रहे हैं। कोसाणा संघ के जैन-जैनेतर श्रद्धालु उत्साह से तत्पर हैं।

-गिरिज जैन

सूरत में भव्य चातुर्मास निरन्तर गतिमान

डॉयमण्ड और टैक्सटाइल नगरी सूरत में संघनायक पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का चातुर्मास श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन में गतिमान है। संघ आज्ञा एवं सभी सरकारी निर्देशों का पालन करते

हुए प्रातः 9 से 9.30 बजे तक श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा उपस्थित सभी श्रावक-श्राविकाओं को सामायिकसूत्र से लेकर प्रतिक्रमणसूत्र और पच्चीस बोल का अध्ययन करवाया जाता है और 9.30 से 10.15 बजे तक जिज्ञासा-समाधान आगमानुसार किया जाता है। इस जिज्ञासा-समाधान वाले समय में सभी श्रावक-श्राविका अपने समय का आतुरता से इन्तजार करते हैं और अपनी जिज्ञासा का बहुत ही सरल समाधान पाकर अपने आपको धन्य महसूस करते हैं। प्रातः 10.15 बजे से श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. युवा की कक्षा में पधारते हैं और उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को मंगल पाठ श्रवण कराते हैं।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के 8 दिवस में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 8.30 से 9.15 बजे तक अन्तगडदसासूत्र का वाचन किया गया और बहुत ही सुन्दर उदाहरणों द्वारा समझाया गया, जिससे सभी श्रावक-श्राविकाओं में आनन्द की अनुभूति रही। दोपहर में 3 से 4 बजे ज्ञानचर्चा एवं रात्रि 8 से 9 बजे आगमानुसार जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। संवत्सरी महापर्व के दिन प्रवचन के पश्चात् कुछ समय श्रावक-श्राविकाओं को अपनी भावना व्यक्त करने के लिए दिया गया और अन्त में संघ के महामन्त्री श्री सुनीलजी नाहर द्वारा सन्त भगवन्तों के श्री चरणों में संघ की ओर से क्षमायाचना की गयी।

पर्युषण दिवस में 2 मासखमण, 09 उपवास की 1 तपस्या, अठाई की 7 तपस्या, 5 उपवास की 1 एक तपस्या और अनेक तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न हुयी।

पर्युषण के पश्चात् प्रतिदिन सुबह 9 बजे से पुच्छिसु णं और सुखविपाकसूत्र का स्वाध्याय किया जाता है। 6 सितम्बर से दोपहर 2 से 3 बजे तक बच्चों के लिए रविवारीय पाठशाला प्रारम्भ हुई है। सूरत के सभी गुरुभक्त अपने आपको धन्य-धन्य मानते हुए धर्म-आराधना में आगे बढ़ रहे हैं, साथ ही आनन्द भरे इन क्षणों में पूज्य सन्त-मुनिराजों के विराजने से शहर के सभी गुरुभक्त पुलकित हैं। चातुर्मास के पूर्व श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 एवं श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 की विहार सेवा का सूरत संघ ने उत्साहपूर्वक लाभ लिया। 23 जून को नन्दीषेणमुनिजी म.सा. के दोनों घुटनों का डॉ. अशोकजी सूर्यवंशी ने ऑपरेशन किया। 27 जून को मुनिश्री को संघ सदस्य डोली में 5 किलोमीटर नाहर भवन स्थानक में लेकर आए।

सवाईमाधोपुर में साधना-आराधना में निरन्तरता

पोरवाल क्षेत्र की प्रबल पुण्यवानी से प्रातः स्मरणीय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के पट्टधर संघनायक, जिनशासन गौरव, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 का चातुर्मास धर्म आराधना-साधना की निरन्तरता के साथ नये आयाम स्थापित कर रहा है। इस कोरोना काल में भी सवाईमाधोपुर निवासियों के अन्तरहृदय से सन्तों के प्रति अपूर्व सम्मान का भाव देखने को मिलता है। कोरोना-काल के चलते हुए धर्म-क्रियाओं में इतना भाग नहीं ले पाते हैं, किन्तु दर्शन-वन्दन में कोई पीछे नहीं रहता है, तो व्रत-नियमों को अङ्गीकार करने वाले भी दो कदम आगे रहते हैं। प्रातःकालीन सन्त-दर्शन करने वालों का ताँता लगा रहता है, तो प्रातःकाल सामायिक करने वालों की अलग संख्या होती है। सुबह 9 बजे से 10 बजे के बीच जब दशवैकालिकसूत्र की सन्तों की वाचनी होती है, उसका आनन्द लेने लोग आ ही जाते हैं और जिज्ञासा-समाधान के माध्यम से अपने ज्ञान का सम्बर्धन कर उत्साह का अनुभव करते हैं। मध्याह्न काल में बालिकाएँ और महिलाएँ सोशियल डिस्टेंस का पालन करते हुए ज्ञान सीखने की गहरी प्यास रखती हैं और तत्त्वों को समझने का प्रयास भी करती हैं। कुछ लोग सायंकाल प्रतिक्रमण के बाद सन्तों की सन्निधि में बैठकर भजन, कथा एवं ज्ञान-चर्चा में भाग लेकर सन्तों के सान्निध्य का लाभ उठाते हैं। सम्पूर्ण सवाईमाधोपुर क्षेत्र के नये युवा जुड़कर समय का पूर्ण सदुपयोग कर रहे हैं।

प्रत्येक शनिवार को कोविड-19 की गाइड लाइन का पालन करते हुए सोशल डिस्टेंस के साथ अलग-अलग विषयों पर कक्षा होती है, जिसमें श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. तो कभी श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. बहुत सुन्दर मार्गदर्शन फरमाते हैं जिसे सुनकर लोग प्रसन्नता से भर जाते हैं। रविवार को लॉक डाउन होने के कारण बिना किसी सूचना और प्रेरणा के भी लोग हर धर्म-क्रिया में भाग लेते हैं और दिन भर सन्तों के दर्शन-वन्दन का कोई न कोई लाभ लेता रहता है।

26 अगस्त और 6 सितम्बर को सोलह सतियों के जीवन-परिचय पर परीक्षा सम्पन्न हुई थी, उसका 20 सितम्बर, 2020 को परीक्षा-परिणाम सुनाया गया। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने अपने उद्बोधन में बालिकाओं के संस्कारों को लेकर के आगाह किया कि आप अपने संस्कारों को सुरक्षित रखें। आप जगेंगे तो समाज जगेगा, सुन्दर समाज की रचना होगी। प्रेरणा की गई कि आदर्श बालिकाओं की कहानियाँ सामने रखते हुए अपने जीवन को भी आदर्श बनाने का संकल्प लें। साथ ही महिला शक्ति की व्याख्या करते हुए फरमाया कि 'म' शब्द में ममता, 'हि' शब्द में हिम्मत और 'ला' शब्द से लाज अर्थात् जो ममता, हिम्मत एवं लाज से समन्वित होती है वही महिला समाज का नाम रोशन करती है। 20 सितम्बर को सीमित संख्या में लोगों ने दया कर गुरु एवं संघ के प्रति गहरी निष्ठा का परिचय दिया। उस दिन लोगों ने पुस्तकालय की धार्मिक पुस्तकों और उपकरणों की प्रतिलेखना कर ज्ञान-सम्पदा के प्रति आदर भाव प्रकट किया।

पर्युषण पर्व के पश्चात् आस-पास के गाँवों और उपनगरों में सीमित संख्या में लोगों ने आकर सांत्वसरिक क्षमायाचना की तथा क्षेत्र फरसने की भावभरी विनति की।

-मुकेश जैन (करेल्ला वाले), मन्त्री

जयपुर में रत्नसंघ के पाँच चातुर्मासों में शान्ति पूर्वक धर्मसाधना

जिनशासन गौरव, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, आगम मर्मज्ञ, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 महावीर नगर में, साध्वी प्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-9, महारानी फार्म (दुर्गापुरा) में, व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा-9 महावीर नगर में, व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 नित्यानन्द नगर में, व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा-4 मालवीयनगर में चातुर्मासार्थ सुख-साता पूर्वक विराज रहे हैं। जयपुर में रत्नसंघ के पाँचों स्थानों पर चल रहे चातुर्मास में धर्म-ध्यान का राजकीय नियमों के अनुसार पालना करते हुए जिज्ञासु श्रावक-श्राविका एवं बच्चों हेतु पठन-पाठन का कार्य किया जा रहा है। महावीर नगर स्थित सामयिक स्वाध्याय भवन में तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. महासती वृन्द को, मुमुक्षु भाइयों को, गुरुजनों को और प्रबुद्ध श्रावक-श्राविकाओं को निरन्तर 2 घण्टे सुबह एवं 2 घण्टे दोपहर में क्रमशः भगवतीसूत्र एवं अनुयोगद्वारसूत्र का वाचन-विवेचन करा रहे हैं। सभी सन्त-सतियों के स्वास्थ्य में समाधि है। व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 1 सितम्बर को पाँच्यावाला से नित्यानन्द नगर पधार गए हैं।

-सुरेशचन्द्र कोठारी, मन्त्री-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

जोधपुर-परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी महाराज साहब के शिष्य श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 सुखसाता पूर्वक जोधपुर सामयिक-स्वाध्याय भवन पावटा में विराजमान हैं। धर्म-ध्यान की अच्छी लहर चल रही है। कोविड-19 की वजह से वर्तमान में सभी धार्मिक स्थलों पर सामूहिक रूप से कार्यक्रमों का निषेध किया गया है इसलिए बड़े कार्यक्रम नहीं हो पा रहे हैं, परन्तु फिर भी गुरु भगवन्तों की प्रेरणा से जोधपुर संघ के

श्रावक-श्राविका चातुर्मास काल के प्रारम्भ से ही अपने घर पर रहते हुए साधना-आराधना में लगे हुए हैं। श्रद्धेय श्री जितेन्द्र मुनि जी म.सा. रसनेन्द्रिय पर विजय प्राप्त कर तपस्या करके जिनशासन की शोभा बढ़ा रहे हैं, पहले 15 उपवास करके पारणा किया तो एक बार फिर से 7 उपवास कर लिए। श्रद्धेय श्री अभयमुनि जी म.सा वयोवृद्ध अवस्था होते हुए निरन्तर एकान्तर आदि तपस्या के साथ स्वाध्याय में तल्लीन रहते हैं। युवा वर्ग को हमेशा विशेष प्रेरणा करते हुए उन्हें सामायिक की महत्ता समझाने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में कई युवा साथी प्रतिक्रमणसूत्र कण्ठस्थ करने का प्रयास कर रहे हैं। श्रावक-श्राविकाओं द्वारा घर पर रहते हुए धर्मारोधन का आनन्द लिया जा रहा है। साथ ही सरकारी निर्देशानुसार एवं संघ की गाइडलाइन को ध्यान में रखते हुए सीमित संख्या में श्रावक-श्राविका, युवक-युवती सन्तों के सान्निध्य में ज्ञान-ध्यान सीखने का भी लक्ष्य रखते हैं। 7 सितम्बर को जोधपुर की सुश्राविका श्रीमती सन्तोषजी धर्मपत्नी श्री बहादुरचन्दजी डोसी ने सन्त भगवन्तों के मुखारविन्द से 71 की तपस्या के पञ्चकखाण किए।

व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा 7 दिग्विजय नगर विराजमान है। वहाँ भी संघ गाइडलाइन के अनुसार श्रावक-श्राविका एवं युवा साथी सीमित संख्या में धर्म ध्यान एवं तप आराधना का आनन्द ले रहे हैं। महासती मण्डल द्वारा निरन्तर श्रावक-श्राविकाओं एवं युवाओं को प्रतिक्रमण सीखने की प्रेरणा की जा रही है।

- नवरत्न गिड़िया, सचिव

अरटिया कलाँ-व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-7 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अरटिया कलाँ में धर्मारोधन और तपस्या का ठाट लगा हुआ है। वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए सरकार एवं संघ के दिशा-निर्देशों की पालना करते हुए धर्मारोधन का कार्यक्रम निरन्तर रूप से चल रहा है।

चातुर्मास प्रारम्भ से नवकार मन्त्र का प्रतिदिन 2 घण्टे जाप चल रहा है। पर्युषण पर्व के आठों दिन अखण्ड नवकार मन्त्र जाप एवं कई धार्मिक कार्यक्रम के साथ पचरंगी दया का आयोजन किया गया। 18 जुलाई को 40 श्रावक-श्राविकाओं ने दयाव्रत कर कर्म-निर्जरा की। 19 जुलाई को 45 श्रावक-श्राविकाओं ने एकाशन किए। 20 जुलाई को 9-9 सामायिक का आयोजन किया गया, जिसमें 42 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। 19 अगस्त को धार्मिक क्रिकेट प्रतियोगिता में आस-पास के गाँवों के कई श्रावक-श्राविकाओं एवं बच्चों ने भाग लेकर चातुर्मास माहौल को ऐतिहासिक बनाया।

अब तक चातुर्मास में श्रीमती शारदादेवीजी धर्मसहायिका श्री बादलचन्दजी कर्णावट ने 31 की तपस्या, श्रीमती अन्जुजी धर्मसहायिका दिलीपचन्दजी कर्णावट ने 31 की तपस्या, श्री अशोक कुमारजी सुपुत्र श्री उगमचन्दजी कर्णावट ने 19 की तपस्या की एवं मासखमण की ओर अग्रसर है तथा श्री लूणकरणजी सुपुत्र स्व. श्री माणकचन्दजी कर्णावट ने 15 उपवास की तपस्या सानन्द सम्पन्न की। इनके अतिरिक्त 11 की तपस्या दो, 9 की तपस्या 3, 8 की तपस्या 3, 5 की तपस्या पाँच, 4 की तपस्या एक, तेले 20, सिद्धि तप 4, दो की 3, उपवास 101 एवं एकाशन 150 तथा बेला, उपवास, एकाशन एवं दया आदि की कई तपस्याएँ हुईं।

-अम्बालाल कर्णावट, मन्त्री

चेन्नई-श्रद्धेय पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा., महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-7 के जैनभवन, अयनावरम् में चातुर्मास के प्रारम्भ से ही ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की आराधना चल रही है। महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. के वीरपिता श्री रिखबचन्दजी बागमार ने पन्द्रह उपवास की तपस्या की, अनेक भाई-बहन सोशियल डिस्टेन्स के साथ दैनिक धर्मारोधन कर रहे हैं।

पर्युषण पर्व में प्रथम और द्वितीय मञ्जिल में सीमित उपस्थिति में भाई-बहनों की उपस्थिति में महासती-मण्डल ने प्रथम प्रहर में दो-दो बार अन्तगडदसासूत्र का वाचन किया। वर्तमान में प्रातःकाल नौ से दस बजे तक महासती श्री अंजनाजी म.सा. और महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. द्वारा आगम वाचनी चल रही है। समय-समय पर युवाओं, बालकों और श्राविका वर्ग के ज्ञानार्जन हेतु शिविर के आयोजन श्री एस.एस. जैन संघ अयनावरम् के तत्त्वावधान में हुए।

चिन्तादरीपेट जैन स्थानक में महासती श्री देवागंजाजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में प्रातःकालीन प्रार्थना, ज्ञान चर्चा और आवश्यकसूत्र आगम पर विवेचन दैनिक रूप से श्री एस.एस. जैन संघ, चिन्तादरीपेट के तत्त्वावधान में चल रहा है। मध्याह्न में समय-समय पर श्राविकाएँ ज्ञानार्जन कर रही हैं और बालक-बालिकाओं को महासती मण्डल ज्ञानार्जन करवा रहे हैं। श्राविकाएँ पौषध-संवर कर रही हैं।

-अर. नरेन्द्र कांकरिया

राजाजी नगर-बेंगलुरु-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) के एच. उत्तमचन्द प्रमिला भण्डारी सामायिक-स्वाध्याय भवन में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-6 चातुर्मासार्थ सुखसाता से विराज रहे हैं। स्वाध्याय भवन में दैनिक प्रार्थना, दिन में वाचनी और स्वाध्याय-साधना का क्रम भी विविध तप आदि के साथ श्रावक-श्राविका वर्ग की न्यूनतम उपस्थिति में निरन्तर गतिमान है। प्रवचन, प्रतिक्रमण आदि सामूहिक आयोजन संघ आज्ञा और सरकारी निर्देशानुसार चातुर्मास प्रारम्भ से बन्द है। पर्युषण पर्व पर कम से कम उपस्थिति में अन्तगडदसासूत्र, कल्पसूत्र, वृहदालोयणा आदि का वाचन भी सुरक्षा सहित किया गया।

-गौतमचन्द अरोस्तवाल, मन्त्री

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक आमसभा का आयोजन 01 नवम्बर को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की वार्षिक साधारण सभा 01 नवम्बर, 2020 को ऑनलाइन माध्यम से रखी गई है, जिसमें आप सभी संघ सदस्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है। वार्षिक साधारण सभा प्रातः 10.30 बजे प्रारम्भ होगी। वार्षिक साधारण सभा के विचारणीय विषयों की सूची इस प्रकार है-

(1) मंगलाचरण (2) स्वागत, उद्बोधन, राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय द्वारा (3) गत बैठक की कार्यवाही का पठन, अनुमोदन तथा प्रगति की जानकारी (4) संचालन समिति/कार्यकारिणी की बैठक में लिए गये निर्णयों की जानकारी। (5) आचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी में सम्पन्न कार्यक्रमों तथा आगामी कार्यक्रमों की जानकारी। (6) संघ और संघ की संस्थाओं की कार्यकारिणियों द्वारा स्वीकृत वर्ष 2019-2020 के अंकेक्षित वास्तविक आय-व्यय एवं वर्ष 2020-2021 के प्रस्तावित बजट का अनुमोदन। (7) अंकेक्षक की नियुक्ति। (8) संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षगणों एवं संयोजकों द्वारा अभिव्यक्ति। (9) संघ शासन-सेवा समिति संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति। (10) संघ संरक्षक-मण्डल संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति। (11) राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा अभिव्यक्ति। (12) अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से। (13) धन्यवाद।

नोट-(1) संघ के सभी सदस्यों से विशेष अनुरोध है कि आप वार्षिक आमसभा में अवश्य भाग लें और संघहित में कोई सुझाव बैठक में रखना चाहें तो अपने सुझाव लिखित में 15 अक्टूबर, 2020 तक कार्यालय में भेजने की कृपा करें। संघहित और उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार और निर्णय करने का हमारा प्रयास रहेगा। (2) ऑनलाइन बैठक में भाग लेने हेतु सॉफ्टवेयर सम्बन्धी सूचना आमसभा से पूर्व समयानुसार आपको प्रेषित करने का प्रयास रहेगा।

-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा आयोजित 'आचार्य हस्ती की दृष्टि-सम्पन्नता एवं मेरे जीवन पर प्रभाव' विषयक वेबिनार में श्री पी.

मोफतराजजी मुणोत का प्रेरक वक्तव्य

जयपुर-सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्मयोगी, परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा-शताब्दी के अवसर पर रविवार 6 सितम्बर, 2020 को आयोजित चतुर्थ वेबिनार में 'आचार्य हस्ती की दृष्टि-सम्पन्नता एवं मेरे जीवन पर प्रभाव' विषय पर श्री पी. मोफतराजजी मुणोत का प्रेरक वक्तव्य हुआ। यह आयोजन अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संस्था सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर के द्वारा यूट्यूब एवं साइनोविड.इन (YouTube & synovid.in) पर किया गया।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत, कोलकाता ने प्रमुखवक्ता एवं इस कार्यक्रम से जुड़े सभी लोगों का हार्दिक स्वागत किया। कार्यक्रम संयोजक एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा ने मुख्यवक्ता का परिचय दिया।

प्रमुख वक्ता संघसेवा शिरोमणि श्री पी. मोफतराजजी मुणोत, मुम्बई ने पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्ती के सान्निध्य में एवं संघसेवा में व्यतीत अपने समय का स्मरण कर शान्तचित्त से अत्यन्त प्रभावी वक्तव्य दिया। उन्होंने पूज्य आचार्यश्री की दृष्टि सम्पन्नता पर प्रकाश डालते हुए संघ में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, स्वाध्याय संघ, इतिहास समिति, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ जैसी विभिन्न संस्थाओं का उल्लेख किया तथा पूज्य आचार्यश्री के द्वारा प्रेरित डॉ. डी. आर. मेहता जैसे विशिष्ट व्यक्तित्वों का भी उल्लेख किया जो मानवता की सेवा में लगे हैं। पूज्य आचार्यप्रवर ने संघ-समाज में जिन कमियों पर दृष्टिपात किया, उन्हें दूर करने की साधुमर्यादा के अनुरूप प्रेरणा भी की। वे आत्म-साधना एवं समाज-कल्याण दोनों दृष्टियों से सम्पन्न थे।

प्रमुख वक्ता श्री मुणोत सा. ने अपने जीवन पर प्रभाव का उल्लेख करते हुए कहा कि पहले तो मैं गुरुदेव के दर्शनों के लिए पिताजी (श्री पुखराजजी मुणोत) की प्रेरणा से यदाकदा जाया करता था, किन्तु सन् 1982 के जलगाँव चातुर्मास से विशेष जुड़ाव बढ़ा। श्री सुमेरसिंहजी बोथरा का भी इसमें योगदान रहा। गुरुदेव के पीपाड़ चातुर्मास में सन् 1986 में मैं लगभग 55 दिन पीपाड़ में रहा। उस समय धर्मपत्नी ने अठाई की तपस्या की थी। मैंने उनकी तपस्या में साथ देने की भावना व्यक्त की, किन्तु धर्मपत्नी ने कहा-“साथ देना है तो आप सिगरेट छोड़ दो।” मैं शाम को गुरुदेव के दर्शन के लिए गया तो गुरुदेव ने स्वतः कहा-आपके कोई व्यसन तो नहीं है? मैंने कहा-“गुरुदेव! अन्य कोई व्यसन नहीं है, बस सिगरेट की आदत है।” गुरुदेव ने कहा-“तो छोड़ दो।” उस दिन से मेरी सिगरेट छूट गई। मैं धर्मपत्नी (शरदचन्द्रिका मुणोत) की तपस्या के अवसर भोज करना चाहता था। भगवन्त को पता चला तो फरमाया-“आप लोगों ने शादी-ब्याह महंगे कर दिए, जीवन-मरण महंगा कर दिया, तपस्या को तो महंगा मत करो।” जीवन में इस प्रकार की प्रेरणा ने मेरे जीवन को दिशा दी। संघसेवा में जुड़ने हेतु आचार्यश्री से महती प्रेरणा मिली। उन्होंने कहा-“संघ-सेवा से कर्म-निर्जरा होती है। संघ को आप अपना मित्र समझें। सच्चा मित्र अपने मित्र का हित सोचता है एवं बुराइयों से बचाता है।” मैंने कहा-“भगवन्! मैं धर्म के सम्बन्ध में बहुत पीछे हूँ।” गुरुदेव ने कहा-“जे कम्मे सूरू ते, धम्मे सूरू।” उनकी कृपा का ही फल है कि मैं अपने जीवन को सन्मार्ग में लगा पाया।

मुणोत सा ने अनेक अनुभव सुनाए। अजमेर के एक प्रसङ्ग से उन्हें ज्ञात हुआ कि पूज्य आचार्यप्रवर के प्रभाव का उपयोग संघ की सम्पत्तियों के मामले में नहीं किया जा सकता। आचार्यप्रवर इससे कोसों दूर थे। निमाज में जब पूज्य गुरुदेव ने तीन दिन की तपस्या के साथ संधारा स्वीकार कर लिया तब उन्होंने भोलावण देते हुए मुझे कहा-“मैंने तो इस संघ का संचालन मात्र मामूली संकेतों से बगैर कोई टंटा लगाये कर लिया। मेरे श्रावक भी इतने श्रद्धालु

थे कि मुझे कभी कहने का अवसर नहीं दिया। आगे भी श्रावक अपना धर्म खुद निभायेंगे और सन्तों को श्रावकों के कार्यों में नहीं डालेंगे तो ही संघ की गरिमा कायम रहेगी।” उनका सन्देश मुझे सदैव स्मृति में रहता है। पूज्य गुरुदेव के सम्बन्ध में जितना कहा जाए कम है। वर्तमान आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की भी महती कृपा है, उन्होंने भी मुझे संघसेवा से जोड़े रखा है।

वक्तव्य के पश्चात् हुए प्रश्नोत्तर में श्री मुदित जैन के प्रश्न के उत्तर में श्री मुणोत सा ने कहा कि संघ-सेवा के कार्य को महत्त्व देने पर अपनी व्यस्ता में से भी समय निकाला जा सकता है।

डॉ. धर्मचन्द्र जैन ने आदरणीय श्री मुणोत सा. के सन्तुलित एवं प्रभावी वक्तव्य का उपसंहार करने के साथ कहा कि पूज्य आचार्यप्रवर दृष्टिसम्पन्न थे। हममें से अधिकतर लोग इन्द्रियदृष्टि वाले हैं, जो इन्द्रियों से होने वाले ज्ञान को ही सही समझते हैं। किन्तु बुद्धिदृष्टि से इन्द्रियज्ञान कई बार निरस्त हो जाता है। इन्द्रिय से जिसमें हमें सुख नज़र आता है, बुद्धि उसे स्वास्थ्य के लिए अहितकर बता देती है। कभी बुद्धि भी विकृत हो जाती है। उससे भी बढ़कर है विवेकदृष्टि। पूज्य आचार्यप्रवर विवेकदृष्टि से सम्पन्न थे। वे संघ-समाज एवं लोककल्याण के प्रति भी सजग थे तो आत्म-साधना के प्रति भी सदैव जागरूक रहते थे। ध्यान, मौन के साथ में उनमें आब्जर्वेशन की महती दृष्टि थी। यही कारण है कि संघ-समाज में अनेक संस्थाओं का निर्माण हुआ। सवाईमाधोपुर में जब उन्होंने चातुर्मास का विचार बनाया तो वहाँ सशुल्क चौका-व्यवस्था रखी गई। उन्हें सवाईमाधोपुर क्षेत्र में धर्म एवं भक्ति की उर्वराभूमि नज़र आ रही थी, ऐसे क्षेत्रों में सशुल्क चौके की व्यवस्था रखने पर ही चातुर्मास सम्भव था। आचार्यश्री की दृष्टिसम्पन्नता ही थी कि उन्होंने मोफतराजजी जैसे कर्मशूर को संघ में जोड़ा। वे भी दृष्टिसम्पन्न हैं। यदि वे संघ की ओर अधिक समय निकालें, ध्यान दें तो संघ में बहुत से महत्त्वपूर्ण कार्य सम्भव है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ ने प्रमुखवक्ता संघसेवा शिरोमणि श्री मोफतराजजी मुणोत के वक्तव्य को अद्भुत बताया तथा उन्हें एवं समस्त श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस कार्यक्रम का सञ्चालन मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा (सी.ए.) ने मङ्गलाचरण से लेकर समापन तक सुन्दर शब्दावली में किया।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी पर द्वितीय वेबिनार सम्पन्न

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल-प्रेरक, इतिहास मार्त्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्मयोगी, परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा शताब्दी के अवसर पर गुरुवार 24 सितम्बर 2020 को “श्राविका संस्कार एवं गौरव दिवस पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संघीय संस्था अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा द्वितीय वेबिनार आयोजित किया गया।

वेबिनार का शुभारम्भ संघीय गीत “जहाँ ज्ञान-क्रिया और श्रद्धा की बहती निर्मल धारा, वो पावन संघ हमारा” के साथ श्राविका मण्डल की सह-सचिव श्रीमती विनीताजी कांकरिया के मंगलाचरण से हुआ। वेबिनार में श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया ने श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी दी और वेबिनार की प्रमुख वक्ता श्राविका मण्डल की पूर्व अध्यक्ष डॉ. मंजुलाजी बम्ब-जयपुर का परिचय दिया।

श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मंजूजी भण्डारी ने कहा कि 24 सितम्बर का दिन श्राविका मण्डल की स्थापना का दिवस होने के कारण हम सबके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने अपनी बात रखते हुए कहा-

“नारी देहली के दीपक की तरह अन्दर-बारह प्रकाश फैलाती है।
माँ के रूप में जो, देशभक्त वीर एवं उद्धारक महावीर बनाती है।
संस्कारों का रोपण कर चलाती है, धर्म की कश्ती वह।

अति आवश्यक है, नारी उत्थान, वरना हो जाएगी दरिन्दों की बस्ती यह।”

प्रमुख वक्ता अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व अध्यक्ष और शासन सेवा समिति की सदस्य डॉ. मंजुलाजी बम्ब-जयपुर ने पूज्य आचार्यप्रवर गुरु हस्ती के प्रेरक जीवन के प्रभावी दुर्लभ प्रसङ्गों की चर्चा की और उन्होंने आचार्यप्रवर के चारित्रिक एवं संयममय जीवन की विशेषताओं को प्रसंगों के माध्यम से रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि श्राविकाओं को संघ-सेवा में आगे रहना चाहिये, जिनकी जिसमें रुचि हो उसमें आगे आकर सेवा करनी चाहिये।

उन्होंने कहा कि नारी वात्सल्य का झरना है। वह कर्तव्यपरायण है। संस्कार निर्माण के अन्तर्गत बालक-बालिकाओं में नैतिक संस्कारों के बीजारोपण हेतु अग्रसर करने के साथ सेवा के लिए प्रोत्साहित करने को कहा, साथ ही संस्कृति-रक्षण हेतु श्राविकाओं की चेतना जागृत करने पर विशेष जोर दिया। हिंसा जनित सौन्दर्य प्रसाधन, भ्रूण हत्या आदि के त्याग के लिए प्रेरित किया।

श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मंजूजी भण्डारी ने अपने संस्मरण में बताते हुए कहा कि - “गुरु हस्ती की तरह गुरु हीरा भी फरमाते हैं कि जो धर्म से जोड़ता है, वह अपना तो कल्याण करता ही है और जिसको भी जोड़ता है उसका भी कल्याण करता है।” अतः हम-सब मिलकर श्राविका मण्डल की उड़ान में सहभागी बनें। उनकी यही प्रेरणा रहती है कि महिलाओं को धर्म संघ से जोड़ो और संस्कारित करो। उन्होंने प्रत्येक श्राविका को संघ के कार्यों में जुड़ने के लिए निवेदन किया।

निबन्ध प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा-डॉ. मंजुलाजी बम्ब ने आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी पर श्राविका संस्कार एवं गौरव दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता के सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्द्धन करते हुए शीर्ष विजेताओं के नामों की घोषणा की।

1	राखीजी अलीजार	मुक्ताई नगर (महा.)	प्रथम
2	लीलाजी सालेचा	जलगाँव (महा.)	द्वितीय
3	मायाजी जैन	सवाईमाधोपुर (राज.)	तृतीय
4	वैजयन्तीजी मेहता	बैंगलोर (कर्ना.)	चतुर्थ
5	सुषमाजी सिंघवी	जोधपुर (राज.)	पंचम

श्राविका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी भण्डारी-रायचूर ने सात सान्त्वना पुरस्कार के प्रतिभागियों के नामों की घोषणा की-1. सुनीताजी मेहता, जोधपुर (राज.) 74 अंक, 2. वीराजी गोलेच्छा, सूरत (गुज.) 70 अंक, 3. प्रभाजी गुलेच्छा, बैंगलोर (कर्ना.) 70 अंक, 4. चन्दाजी अलीजार, यवतमाल (महा.) 67 अंक, 5. श्वेताजी भण्डारी, जोधपुर (राज.) 67 अंक, 6. शिल्पीजी सुराणा, बैंगलोर (कर्ना.) 67 अंक, 7. चन्द्रप्रभाजी सुराणा, जोधपुर (राज.) 67 अंक।

अध्यक्ष महोदया ने बताया कि इस प्रतियोगिता के 29 प्रोत्साहन प्रतिभागी भी हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया ने वेबिनार पर श्राविका मण्डल की पदाधिकारियों सहित उपस्थित सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। -अलका दुधेड़िया, महासचिव

‘आवश्यकसूत्र’ आगम पर लिखित खुली किताब परीक्षा 24 जनवरी, 2021 को, अवश्य भाग लें

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास-मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्म-योगी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष को पूरे भारत वर्ष में अटूट श्रद्धा भक्ति, सेवा एवं उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

रत्न संघ के प्रत्येक परिवार में कम से कम एक सदस्य प्रतिक्रमण को अर्थ सहित कण्ठस्थ करे, ऐसा लक्ष्य संघ द्वारा निर्धारित किया गया है। ‘प्रतिक्रमण’ आवश्यक सूत्र आगम का एक अङ्ग है। प्रत्येक सदस्य सूत्रों के अर्थ एवं भावार्थ को समझकर अपने क्रियात्मक पक्ष को मजबूत करे, एतदर्थ अखिल भारतीय स्तर पर ‘आवश्यकसूत्र’ आगम पर लिखित परीक्षा का आयोजन आचार्य भगवन्त के 111वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 24 जनवरी-2021 को किया जा रहा है। सभी सदस्य दीक्षा शताब्दी वर्ष में आवश्यक सूत्र आगम का प्रतिदिन स्वाध्याय कर इस परीक्षा में अवश्य भाग लें। इस हेतु जितनी पुस्तकों की आवश्यकता हो, निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें-

(1) शान्तिलालजी गुन्देचा, हैदराबाद- 9247199931 (2) प्रसन्नजी बागमार, बैंगलोर- 9880665551 (3) दिलखुश जी जैन, मुम्बई- 9930732407 (4) आशीष जी जैन, दिल्ली-9811110381 (5) किरणजी जैन, पंजाब-9463118600 (6) ज्ञानचन्द्रजी भण्डारी, कर्नाटक-9019555670 (7) महेन्द्रजी कटारिया, नागपुर-9850345615 (8) रेशमाजी लुंकड़, बालोतरा-9649318421 (9) सुरेखाजी भटेवरा,पुणे-9405875108 (10) मधुबालाजी ओस्तवाल, नाशिक-9422510571 (11) कन्हैयालाल जी जैन, भीलवाड़ा-8764409328 (12) सुमन जी जैन, हरियाणा-8950182548 (13) सुनीलजी नाहर, सूरत-9825125718 (14) आशाजी मेहता,अहमदाबाद-7228865547 (15) विनोदजी जैन, चेन्नई-9444734394 (16) सुरेशजी हिंगड़, चेन्नई-9444852330 (17) मनोजजी जैन, जलगाँव-9156898108 (18) महावीर प्रसादजी जैन, पल्लीवाल क्षेत्र-8949816129 (19) आनन्दजी जैन, पोरवाल क्षेत्र-8104104285 (20) रिंकूजी जैन, मध्यप्रदेश-9685073123 (21) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर-0141-2575997 (22) प्रधान कार्यालय, जोधपुर-7610953735

वरीयता सूची में प्रथम स्थान पाने वाले को 25000/-, द्वितीय 21000/-, तृतीय 15000/- का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। परीक्षा में 90 से अधिक अंक पाने वाले को 1000/- तथा 80 से 90 तक अंक पाने वाले को 500/- का प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा। 50 अंक लाने वाले को उत्तीर्ण माना जायेगा तथा सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रशस्ति पत्र दिया जायेगा।

परीक्षा सम्बन्धी नियम

1. आवेदन करने की अन्तिम दिनांक 15 दिसम्बर, 2020 निर्धारित है।
2. इस परीक्षा हेतु फार्म ऑनलाइन एवं आफलाइन दोनों तरह से उपलब्ध हैं। ऑनलाइन फार्म रत्न संघ एप्प एवं वेबसाइट के माध्यम से भरे जा सकेंगे।
3. परीक्षा का समय 12:30 से 3:30 बजे तक रहेगा, जिसमें दो तरह के प्रश्न-पत्र होंगे। प्रथम (Objective Type) के प्रश्न-पत्र का समय आधा घण्टा रहेगा, जिसमें परीक्षार्थियों को उत्तर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित ‘श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र’ पुस्तक के आधार पर बिना पुस्तक देखे देना होगा। द्वितीय (Subjective Type) के प्रश्न-पत्र का समय 2:30 घण्टा रहेगा, जिसमें आवश्यकसूत्र की

पुस्तक साथ में लेकर प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़कर लिखे जा सकेंगे।

4. प्रथम प्रश्न-पत्र 30 अंकों का तथा द्वितीय प्रश्न-पत्र 70 अंकों का रहेगा।
5. परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूत्र पुस्तक का अर्द्ध मूल्य 50/- रखा गया है। जो परीक्षार्थी इस परीक्षा में भाग लेने हेतु फार्म भरकर देंगे, उन्हें ही पुस्तक दी जायेगी। डाक द्वारा पुस्तक माँगवाने पर उसका व्यय अलग से देय होगा।
6. जहाँ कम से कम 10 परीक्षार्थी होंगे वहाँ परीक्षा का केन्द्र रखा जायेगा।
7. परीक्षा हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित आगम 'आवश्यकसूत्र' ही मान्य होगा। इस पुस्तक में से कहीं से भी प्रश्न दिये जा सकते हैं।
8. आवश्यकसूत्र की परीक्षा में बैठने वाले सभी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा।
9. उक्त परीक्षा से सम्बन्धित अन्य कोई जानकारी एवं किसी भी प्रकार का उचित परिवर्तन होने पर उसकी सूचना जिनवाणी, रत्नम् एवं रत्नसंघ एप्प के माध्यम से दी जायेगी। फोन नं. 0291-2630490, 2624891, 2636763, 2622623
-सुभाषचन्द नाहर, सचिव-आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ द्वारा चतुर्थ निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

प्रातः स्मरणीय, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा शताब्दी एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा चतुर्थ निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है, जिसका विषय है- "आत्मशुद्धि का साधन : प्रतिक्रमण।" विषय के अन्तर्गत अग्रांकित 6 बिन्दुओं को समावेशित करना होगा-1-प्रतिक्रमण का अर्थ-भेद एवं महत्त्व 2-षडावश्यकों का स्वरूप 3-आवश्यकों का क्रम एवं प्रयोजन 4-प्रतिक्रमण करने से लाभ 5-प्रतिक्रमण को जीवन्त बनाने के उपाय 6-आत्म शुद्धि के लिए प्रतिक्रमण क्यों जरूरी। इन 6 बिन्दुओं को आधार बनाकर ही आपको यह निबन्ध लिखना है। निबन्ध लिखते समय कुछ विशेष बातों का अवश्य ध्यान रखें-

1. निबन्ध साफ एवं सुन्दर लिखा हो, जो कि पढ़ने में आ सके।
2. निबन्ध लिखते समय निबन्ध के अन्त में ही अपना नाम, फोन नम्बर एवं पता लिखें। अन्य किसी भी पृष्ठ पर नहीं।
3. निबन्ध फुल स्केप साइज के पाँच पृष्ठ से अधिक न हो। अधिक होने पर माइंस मार्किंग की जायेगी।
4. निबन्ध डाक/कोरियर से भेजने की अन्तिम तिथि 31 अक्टूबर, 2020 रखी गई है।

निबन्ध से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये निम्न पदाधिकारी से सम्पर्क कर सकते हैं-1. सुभाष हुण्डीवाल- संयोजक 9460551096 2. सुनील संकलेचा- सचिव 9413844592 3. कार्यालय सम्पर्क सूत्र- बसन्त कुमार, कार्यालय प्रभारी -9413132362, धीरज डोसी, कार्यालय सहायक-9462543360

विशेष नोट-सभी स्वाध्यायी भाई-बहनों को 24 जनवरी, 2021 को आयोजित होने वाली आवश्यकसूत्र की खुली पुस्तक लिखित प्रतियोगिता में भाग लेना अनिवार्य है।

तृतीय निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम-श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी एवं स्वाध्याय संघ के हीरक जयन्ती वर्ष पर तृतीय निबन्ध प्रतियोगिता 'मुक्ति प्रदाता स्वाध्याय' विषय पर आयोजित की गई, जिसमें जोधपुर से 16, महाराष्ट्र से 16, मध्यप्रदेश से 5, जयपुर से 5, पोरवाल क्षेत्र से 4, पल्लीवाल क्षेत्र से 2, मारवाड़ क्षेत्र से 8, मेवाड़ से 2 तथा अन्य क्षेत्रों से 9 सहित कुल 67

स्वाध्यायी भाई-बहिनों, श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह से भाग लिया। निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है-**प्रथम**-श्री हेमन्तजी डागा, जयपुर, **द्वितीय**-श्रीमती सुषमाजी सिंघवी, जोधपुर और **तृतीय**-श्रीमती अनिता जी संकलेचा, अजमेर। **सान्त्वना पुरस्कार**-1. श्री नाथुलालजी जैन, अजमेर 2. सौ. मधुबालाजी ओस्तवाल, नाशिक 3. श्री पदमचन्दजी गाँधी, जयपुर 4. श्रीमती मीनाक्षीजी चौपड़ा, अजमेर 5. श्रीमती प्रियाजी सुराणा, मदनगंज-किशनगढ़ 6. श्रीमती नवीनाजी जैन, हुबली 7. श्रीमती लीलाजी सालेचा, जलगाँव 8. श्रीमती सुनीताजी मेहता, जोधपुर 9. श्रीमती नीरूजी जैन, जयपुर 10. प्रियंकाजी चौपड़ा, अजमेर।

-सुभाष हुण्डीवाल-संयोजक, सुनील संकलेचा-सचिव

जयपुर में श्री जैन रत्न युवती मण्डल का गठन

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर के मागदर्शन में 23 फरवरी, 2020 को विस्तृत विचार-विमर्श के पश्चात् श्री जैन रत्न युवती मण्डल, जयपुर की स्थापना की गयी। युवती मण्डल के गठन के पश्चात् सर्वप्रथम मण्डल को चलाने के लिए पदाधिकारियों का चयन किया गया। पदाधिकारियों में **अध्यक्ष**-श्रीमती विजेताजी पत्नी श्री विवेकजी लोढ़ा, **कार्याध्यक्ष**-श्रीमती महकजी पत्नी श्री निपुणजी डागा, श्रीमती शिखाजी पत्नी श्री गौरवजी जैन **उपाध्यक्ष**-सुश्री ऐश्वर्याजी सुपुत्री सन्दीपजी बोथरा, **मन्त्री**-श्रीमती संगीताजी पत्नी श्री विनयजी लोढ़ा, **सहमन्त्री**-सुश्री सलोनीजी सुपुत्री श्री कुशलजी जरगड, सुश्री सेहलजी सुपुत्री श्री पीयूषजी जैन **कोषाध्यक्ष**-श्रीमती रिचाजी पत्नी श्री विनीतजी डागा एवं **सहकोषाध्यक्ष**-श्रीमती दीपांशीजी पत्नी श्री मुदितजी जैन का चयन किया गया है।

अब तक युवती मण्डल में 169 युवतियों को सदस्य बनाया जा चुका है। सभी में संघ के लिए समर्पण की भावना है। नवगठित युवती मण्डल, जयपुर द्वारा धर्म-कार्यों में रुचि हमारे संघके लिए अनुमोदनीय है। प्रथम कार्यकारिणी द्वारा लॉकडाउन में धार्मिक ज्ञान की विभिन्न प्रतियोगिताएँ, धार्मिक कक्षाएँ एवं वेबिनार एक कदम धर्म की ओर का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया एवं निरन्तर जारी है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा आयोजित सामायिक-प्रतिक्रमण प्रतियोगिता में भी युवतियों द्वारा रजिस्ट्रेशन कराया गया है। नमो पुरिस्वरगंधहत्थीणं प्रतियोगिता में भी युवतियाँ उत्साहपूर्वक भाग ले रही हैं। नवगठित युवती मण्डल, जयपुर द्वारा धर्म कार्यों में रुचि लिया जाना हमारे संघ के लिये अनुमोदनीय है।

-मीना गोलेछा-अध्यक्ष श्राविका मण्डल, विजेता लोढ़ा-अध्यक्ष युवती मण्डल

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की गतिविधियाँ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र को वर्ष 2006 में स्थापित किया गया। तत्पश्चात् विभिन्न शहरों/गाँवों में दैनिक संस्कार केन्द्र प्रारम्भ किये गये। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 2011 के चातुर्मास पूर्ण होने के पश्चात् जोधपुर के 10 केन्द्रों पर रविवारीय संस्कार शिविर प्रारम्भ किये गये। वर्ष 2016 से अब तक संस्कार केन्द्रों की संख्या दोगुनी हो गई है। वर्तमान में लगभग 82 दैनिक संस्कार केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी में और अधिक दैनिक संस्कार केन्द्र एवं रविवारीय संस्कार शिविर खोलने का लक्ष्य है। इन सभी गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रतिवर्ष बजट संघ द्वारा आवण्टित किया जाता है।

वर्तमान में जोधपुर शहर में 30 रविवारीय संस्कार शिविर संचालित किये जा रहे हैं। इसके खर्च हेतु अर्थ का प्रबन्धन अलग से किया जाता है। दैनिक संस्कार केन्द्र एवं रविवारीय संस्कार शिविर में अधिकाधिक अर्थसहयोग

कर संघ-सेवा के लाभ की आपसे अपेक्षा की जाती है। **Bank Detail** : Akhil Bhartiya Shri Jain Ratna Adhyatmik Sanskar Kendra, **Account Number** : 00592151009075, **Bank Name** : Oriental Bank of Commerce, **Branch** : Sojati Gate, Jodhpur, **IFSC Code** : ORBC0100059

-राजेश भण्डारी, सचिव

संक्षिप्त समाचार

जलगाँव-आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर की हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है-(1) स्वाध्यायियों को इतिहास की विशेष जानकारी हेतु जैन इतिहास के प्रसङ्ग भाग-1 से भाग-40 पर प्रत्येक शनिवार 3 से 3.30 बजे ऑनलाइन परीक्षा ली जा रही है। (2) अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र जोधपुर के अन्तर्गत चलने वाली महाराष्ट्र क्षेत्र की पाठशालाओं के बच्चों की सोमवार से शुक्रवार सायं 5 से 6 बजे तक ऑनलाइन कक्षा ली जाती है। (3) पर्युषण पर्व के पूर्व 7 से 14 अगस्त तक श्री अन्तगडदसासूत्र पर ऑनलाइन प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ, जिसमें देश-विदेश से लगभग 1,500 परीक्षार्थियों ने भाग लेकर आगम के प्रति रही अपनी रुचि को दर्शाया। (4) पर्युषण पर्व के बाद 3 सितम्बर से प्रत्येक गुरुवार को मध्याह्न 3.30 से 4 बजे तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा 4 भागों में प्रकाशित उत्तराध्ययनसूत्र के 4-4 अध्ययनों पर ऑनलाइन परीक्षा का आयोजन अन्तगडदसासूत्र से जुड़े अधिकांश परीक्षार्थियों के आग्रह पर किया जा रहा है। इस परीक्षा में अभी तक 2,500 लोगों के नामाङ्कन दर्ज हो चुके हैं। जो कोई भी इस परीक्षा में भाग लेने का इच्छुक हो वह निम्नलिखित नम्बरों पर सम्पर्क कर सकते हैं। **सम्पर्क सूत्र**-शुभम् बोहरा 91311-90712, 80858-93817

- मन्तोच संचेती, जलगाँव

जोधपुर-श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी, घोड़ों का चौक, जोधपुर में जुलाई, 2020 से डायलिसिस की सुविधा प्रारम्भ हुई है। इसमें चार डायलिसिस की मशीनें लगी है तथा कम कीमत में डायलिसिस की सुविधा उपलब्ध है।

- पूरणराज अबाजी

चेन्नई-मद्रास विश्वविद्यालय के जैनविद्या विभाग, समग्र जैन समाज के सहयोग से स्थापित मातृसंस्था 'रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनेलोजी' एवं 'श्री शङ्करलाल सुन्दरबाई शासुन जैन महिला महाविद्यालय' के संयुक्त तत्त्वावधान में पर्युषण महापर्व के उपलक्ष्य में 17 दिवसीय ई-व्याख्यानमाला का समापन 1 सितम्बर को हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ. प्रियदर्शना जैन ने बताया कि आयोजन का शुभारम्भ 16 अगस्त को साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग के 'अमारि प्रवर्तन' विषयक व्याख्यान से हुआ था। जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन ने 23 अगस्त को व्याख्यान माला में कहा कि क्षमा की समग्र एवं सच्ची आराधना से चारों कषायों से मुक्ति पाई जा सकती है। मुख्यअतिथि उद्योगरत्न अभयजी श्रीश्रीमाल ने कहा कि उत्तम तप की आराधना करके मौजूदा महामारी को खत्म करने में अपना सहयोग करें। राजस्थानरत्न सुगालचन्दजी जैन ने जैनधर्म को जीने की सर्वोत्तम कला बताया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण श्री देवेन्द्रराजजी मेहता (डॉ. डी. आर. मेहता) और श्री कैलाशमल जी दुगड, एयर मॉर्शल श्री सिंहकुट्टी वर्धमान, डॉ. ज्ञानजी जैन, श्री कृष्णचन्दजी चोरड़िया, श्री रमेशजी मूथा, श्री राजेन्द्रजी दुगड, श्री डी. अमरचन्दजी, श्री ऋषभजी कांकरिया, श्री सन्तोषजी रांका आदि महानुभावों ने बतौर अतिथि विचार रखे। डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. वीरसागरजी जैन सहित दो दर्जन विद्वानों ने धर्म के दस लक्षणों पर व्याख्यान दिये। सूत्रधार डॉ. प्रियदर्शनाजी ने बताया कि इस व्याख्यानमाला में देश-विदेश के दो हजार से

अधिक लोगों ने भाग लिया। 'जय भारत! जय जिनशासन!' यूट्यूब चैनल पर सीधा प्रसारण किया गया। विभाग की राजुलजी बोरुंदिया, शान्तिजी चोरड़िया, प्रीतिजी शाह, मीनूजी, चोरड़िया, कश्मीराजी शाह, सुनीताजी जैन, वासुकी आदि प्राध्यापकों और विद्यार्थियों ने सञ्चालन में सहभागिता निभाई।

- शान्तिलाल कोठारी, अध्यक्ष-रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनेलोजी

श्रद्धाञ्जलि

श्रमण संघीय महामन्त्री श्री सौभाग्यमुनिजी 'कुमुद' का देवलोक गमन

उदयपुर-मेवाड़ की स्थानकवासी परम्परा के प्रमुख सन्त, गुरु अम्बेश के प्रमुख शिष्य, श्रमणसंघीय महामन्त्री श्री सौभाग्यमुनिजी 'कुमुद' का 28 सितम्बर, 2020 को उदयपुर के निजी अस्पताल में 85 वर्ष की वय एवं 73 वर्ष की दीक्षा पर्याय के साथ सायंकाल 7.10 पर देवलोकगमन हो गया। आप शेर-ए-मेवाड़ के रूप में विख्यात थे। दक्षिण भारत में भी आपने बैंगलोर, चेन्नई आदि महानगरों में वर्षावास किये। आपकी विद्वत्ता, भाषाविज्ञता एवं काव्यकला बेजोड़ थी। प्रवचन कला एवं शालीनता के संगम थे। सन् 1987 के पूना श्रमण संघीय साधु-साध्वी सम्मेलन एवं इन्दौर के सन् 2015 के साधु-साध्वी सम्मेलन में आपकी विशिष्ट भूमिका रही। सन् 1987 के पूना साधु सम्मेलन में आप महामन्त्री पद पर नियुक्त हुए थे। पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार उदयपुर के कडिया स्थित सौभाग्य दीक्षा स्थल पर किया गया।

सेठिया वीर परिवार पर तीन आघात

जोधपुर-अनन्य गुरु भक्त, धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शान्तादेवीजी धर्मसहायिका श्री धनपतजी सेठिया का 14 सितम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। स्वभाव से सरल, सभी के प्रति प्रीति-मैत्री की शुभभावना, संघ-समाज के प्रति मिलनसारिता जैसे गुणों के कारण आप सभी की प्रियपात्र थीं। आपके धर्मसहायक श्री धनपतजी सेठिया अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामन्त्री पद का बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। आप उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की सांसारिक अनुभवधू थीं। आपके सुपुत्र श्री दीपकजी, पुत्रवधू श्रीमती नीलमजी एवं सुपुत्री सन्ध्याजी, ज्योतिजी सहित सेठिया परिवार धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहता है।

-प्रकाशचन्द टाटिया, अध्यक्ष



धर्मनिष्ठ सुश्रावक वीरभ्राता श्री प्रेमचन्द्रजी सेठिया का 28 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। संघ-समाज के साथ धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में आप सदैव सक्रिय रहे। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहने वाले आपश्री का जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सदगुणों से ओतप्रोत था। आप परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सांसारिक वीरभ्राता थे। आप गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने वाले अग्रणी श्रावकरत्न थे। चौपासनी हाउसिंग बोर्ड स्थानक में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में आप सहित समस्त परिवारजन लाभ प्राप्त करते रहे हैं। संघीय संस्थाओं में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में आपने अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की है।

-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री



धर्मनिष्ठ युवारत्न श्री प्रमोदजी सुपुत्र श्री प्रेमचन्द्रजी सेठिया का 47 वर्ष की अल्पायु में 15 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप चौपासनी हाउसिंग बोर्ड पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की आहार-विहार-सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आप सरल स्वभावी, विनयशील, मिलनसार एवं

स्नेह की प्रतिमूर्ति थे। आपके पूज्य पिताश्री प्रेमचन्दजी भी अपने क्षेत्र में सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। आपके काका श्री धनपतजी सेठिया अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय महामन्त्री पद के दायित्व का बखूबी निर्वहन करने के साथ ही संघ एवं संघीय संस्थाओं के साथ सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं। सेठिया परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी गतिविधियों में सेठिया परिवार का महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हो रहा है। आप परम पूज्य उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सांसारिक भतीजे थे।

-धीरज डोसी, जोधपुर

जोधपुर-अनन्य गुरु भक्त सुश्रावक श्री ज्ञानचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री माँगीलालजी डागा का 22 सितम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आप रत्नसंघ के सुज्ञ, समर्पित, अग्रणी एवं धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न थे। आप अपने निकट स्थित स्थानक सिंहपोल में पधारने वाले सन्त-सतियों की सेवा में हमेशा तत्पर रहते थे। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ एवं संघीय संस्थाओं द्वारा सञ्चालित गतिविधियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। आपके सुपुत्र श्री सूरजजी डागा ने सिंहपोल शाखा के सहसंयोजक पद पर रहते हुए अपने पद का दायित्व पूर्ण निष्ठा के साथ निभाया। डागा परिवार स्वधर्मी वात्सल्य, आतिथ्य सत्कार में भी सदैव समर्पित रहा है।

-धीरज डोसी, जोधपुर

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री भीकमचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री दीपचन्दजी भंसाली का 31 अगस्त, 2020 को देवलोकगमन हो गया। आप सेवानिवृत्त अध्यापक थे। पशुप्रेमी होने के कारण आप पशु-पक्षियों के लिए चारा, दाना आदि का प्रबन्ध करते थे। आप सरल, सेवाभावी, सादा जीवन उच्च विचार के धनी एवं ईमानदार होने के साथ धर्म-ध्यान में सदैव समर्पित रहते थे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवीजी, दो सुपुत्र श्री प्रवीणजी, श्री महावीरजी एवं दो पुत्रियों श्रीमती मंजुजी, श्रीमती संगीताजी सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री कैलाशचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री सवाईचन्दजी मेहता का 28 अगस्त, 2020 को देहावसान हो गया। आप आयकर अधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए थे। आप शान्त स्वभावी, धार्मिक प्रवृत्ति में निरत एवं मिलनसार व्यक्ति थे। आपके सहलज श्री पदमराजजी मेहता, गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलोर संघ के अध्यक्ष हैं। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती वीणाजी मेहता और दो सुपुत्र विनीतजी, सन्नीजी को छोड़कर गये है।

-चंचलचन्द सिंघवी, जोधपुर

मण्डी रोड़-सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री बद्रीलालजी जैन सिंगौर वाले पूर्व संरक्षक श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ शहर, सवाईमाधोपुर का 13 सितम्बर, 2020 को देवलोक गमन हो गया। आप रत्न संघ के सुज्ञ समर्पित श्रद्धावान सुश्रावक रत्न थे तथा सन्त-सतीवृन्द की सेवा भक्ति में सदैव अग्रणी रहे। आप श्री जैन रत्न महावीर भवन के अध्यक्ष, मन्त्री और कोषाध्यक्ष पद पर भी रहे हैं। आपके सुपुत्र विनोदजी जैन कांग्रेस के विभिन्न पदों पर रहकर समाज सेवा में अग्रणी रहते हैं। आप अपने पीछे सुपुत्र विनोदजी, जयकुमारजी, विमल कुमारजी सुपुत्री श्रीमती सुशीला बाईजी का भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

मुम्बई-सरलमना, सेवाभावी एवं तपस्विनी श्राविकारत्न श्रीमती कान्तीदेवीजी धर्मपत्नी श्री कपूरचन्दजी जैन (बिलोपा वाले) का 10 सितम्बर, 2020 को 71 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सन् 2002 के बालकेश्वर-मुम्बई के चातुर्मास में आपने अठाई एवं मासखमण तप की आराधना पूर्ण कर अपने जीवन में नया कीर्तिमान स्थापित

किया। साथ ही सन् 2008 के कांदिवली-मुम्बई के चातुर्मास में चोले तप की आराधना की तथा पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत पालन का नियम ग्रहण किया। आप चारित्रात्माओं के चातुर्मास आदि में समय-समय पर दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण आदि का रुचिपूर्वक लाभ लेती रहती थीं। आपके धर्मसहायक श्री कपूरचन्दजी जैन संघ समर्पित दृढ़ श्रद्धावान श्रावकरत्न हैं। नियमित सामायिक-स्वाध्याय के साथ चतुर्दशी पर्व पर उपवास आदि तप विगत अनेक वर्षों से करते आ रहे हैं। आपके सुपुत्र कमलेशजी, पुत्रवधू नीतिकाजी एवं सभी सुपुत्रियाँ आदि सभी परिवारजन धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत हैं।

-धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार

बजरिया-सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रेमबाबूजी जैन (एण्डवा वाले) गौतम कॉलोनी का 20 सितम्बर, 2020 को 68 वर्ष की आयु में आकस्मिक देवलोक गमन हो गया। आप दृढ़धर्मी, वरिष्ठ स्वाध्यायी, उदारमना, अनन्य गुरुभक्त तथा संघ के प्रति समर्पित श्रावक थे। आपके पिताजी स्व. श्री गोपीलालजी जैन गुरु हस्ती के परम भक्त और वरिष्ठ स्वाध्यायी थे। आप नियमित रूप से गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने वाले श्रावक रत्न थे। आपने विगत कई वर्षों तक पर्युषण मे सेवा दी है। आप अपने पीछे धर्म सहायिका श्रीमती विजयलक्ष्मी, सुपुत्र श्री सौरभजी तथा सुपुत्रियाँ श्रीमती शिखाजी और श्रीमती शिल्पीजी का भरा-पूरा परिवार छोड़ कर गये हैं।



भोपाल-वरिष्ठ श्रावक श्रीमान रविंद्र कुमारजी सुपुत्र श्री चाँदमलजी-लाड़कँवर बाईजी मेहता का 78 वर्ष की आयु में भोपाल में हृदयाघात से 18 सितम्बर, 2020 को निधन हो गया। आप रत्नसंघ के सच्चे सिपाही थे। आपका धार्मिक ज्ञान अत्यन्त गहरा था। आपके पास धार्मिक पहेलियों का अटूट खजाना था। आप प्रत्येक साधु-साध्वीजी महाराज साहब से धार्मिक प्रश्नोत्तर कर अनेक लोगों को धार्मिक समाधान करने में निपुण थे। आपके निधन से भोपाल जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। आपकी श्राविका श्रीमती पुष्पाजी मेहता भी धर्म में अत्यन्त रुचि लेकर ज्ञानार्जन करती हैं। पर्युषण पर्व के दौरान आप 8 दिन स्थानक में ही रहकर धर्म-ध्यान का लाभ लेते थे।



-संजय नाहर, भोपाल

जोधपुर-अनन्य गुरुभक्त सुश्राविका श्रीमती लाड़कँवरजी धर्मपत्नी श्री आसुलालजी पुत्रवधू स्व. श्री हीरालालजी चौपड़ा का 27 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। सन्त-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। उनका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सदगुणों से युक्त था। घोड़ों के चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन, सिंहपोल, पावटा और शक्तिनगर स्थानक में चातुर्मास काल और शेखेकाल में आप स्थानक में पधारकर धर्म-ध्यान करती थीं। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया, जिसके फलस्वरूप चौपड़ा परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी चौपड़ा परिवार सदैव समर्पित है।



-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री

बजरिया-सवाई माधोपुर-वरिष्ठ सुश्रावक श्री कपूर चन्द जी जैन (सूरवाल वाले) का 7 सितम्बर, 2020 को 89 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप वर्ष 1988 में राजस्व विभाग के अन्तर्गत सदर कानूनगो के पद से सेवानिवृत्त हुए थे और तभी से प्रतिवर्ष प्राप्त पेन्शन राशि का उपयोग सर्दियों में गरीबों को कम्बल आदि वितरित करने में तथा जीवदया में करते थे। आप सादगी पसन्द, सरल, अनुशासनप्रिय और धर्मपरायण जीवनशैली पसन्द करते थे। सवाईमाधोपुर में प्रथम सामूहिक विवाह सम्मेलन, बजरिया में स्वाध्याय भवन की भूमि के आवण्टन एवं पोरवाल समाज की नियमावली के निर्माण में आपका योगदान



रहा। आप अपने पीछे तीन सुपुत्र सेवाभावी चिकित्सक राजेन्द्र कुमारजी, अनिल कुमारजी, सुनील कुमारजी जैन एवं चार सुपुत्रियों सहित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। आपकी तीनों पुत्रवधुओं एवं दोनों पौत्र वधुओं ने सेवा शुश्रूषा में पिता की भाँति सेवा की।

-अनिल कुमार जैन

अलीगढ़-रामपुरा-धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ, संघ समर्पित सुश्रावक श्री जम्बूकुमारजी जैन सुपुत्र स्व. श्री बजरंगलालजी जैन (बराना वाले) का 27 अगस्त, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सहिष्णुता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। सबके साथ सामञ्जस्य पूर्ण व्यवहार आपके जीवन की प्रमुख विशेषता थी। आपके ज्येष्ठ भ्राता स्वाध्यायी श्री लड्डूलालजी जैन स्थानीय संघ के मन्त्री रहे हैं। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र रविप्रकाशजी जैन श्री पद्मावती पोरवाल संघ समिति, क्षेत्र सर्वाईमाधोपुर के कार्यकारिणी सदस्य हैं। आपका परिवार धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहा है। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

-सुशील कुमार जैन, जयपुर



खेरली-धर्मनिष्ठ संघनिष्ठ, संघ समर्पित वीर भ्राता श्री महेन्द्र कुमारजी जैन 'भनोखर वाले' का 09 सितम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ खेरली के मन्त्री पद का दायित्व बखूबी से निर्वहन किया था। आपने खेरली स्थित रत्नसंघ के सामायिक-स्वाध्याय भवन एवं भोजनशाला के दस्तावेजों को व्यवस्थित रूप प्रदान करने में प्रशासनिक सहयोग प्रदान किया था। आप नगर पालिका खेरली से दो बार पार्षद रहे तथा अनेक धार्मिक, शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़े हुए होने के साथ आप एन.सी.आर. रेलयात्री समिति के अध्यक्ष भी रहे एवं खेरली कस्बे में कई ट्रेनों के ठहराव तथा स्टेशन के विकास के लिए भी कार्य किया। आप राजनैतिक जीवन में अपने पास आने वाले सभी महानुभावों का सहयोग करते थे। रत्नसंघीया व्याख्यात्री महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा. के आप सांसारिक भ्राता थे। आपका सम्पूर्ण परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। संत-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहनों के आतिथ्य सत्कार में आपका परिवार सदैव तत्पर रहता है।

-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री

बालोतरा-सुश्राविका श्रीमती जतनादेवीजी धर्मपत्नी श्री दौलतराजजी चौपड़ा का 18 अगस्त, 2020 को 70 वर्ष की उम्र में स्वर्गगमन हो गया। आपका पूरा परिवार धार्मिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। आपके पुत्र डॉ. हीरालालजी चौपड़ा हड्डी रोग विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। आप भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-सोहनलाल जैन



देवली-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री कुशलचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री अमोलकचन्दजी लोढ़ा (केकड़ी वाले) का 11 सितम्बर, 2020 को 61 वर्ष की आयु में संथारा पूर्वक देवलोकगमन हो गया। आप शान्त स्वभाव एवं सरल व्यक्तित्व के धनी थे। आपकी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आप समाजसेवा में अग्रणी रहते थे। अपना जीवन जैनशैली से जीते हुए सामायिक-स्वाध्याय करते थे एवं गरीब लोगों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आप भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।



जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पारसमलजी सुपुत्र स्व. श्री भँवरलालजी कांकरिया (भोपालगढ़ वाले) का 28 अगस्त, 2020 को परलोकगमन हो गया। आप अपने कार्य के प्रति निपुण, व्यवहार कुशल, मिलनसार, मृदुभाषी तथा सेवाभावी थे। बासनी तथा आशापूर्णा नगर की ओर पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की सेवा में आपका परिवार समर्पित भाव से संलग्न है। दर्शनार्थ पधारने वाले मेहमानों की आतिथ्य-सेवा में सदा अग्रणी है। आपकी धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती पदमकलाजी ने पाँच वर्षीय



तथा छोटी बड़ी कई तपस्याएँ की है। कई वर्षों से रात्रि चौविहार त्याग है। आपके सुपुत्र अनिलजी तथा परिवारजन संघ-सेवा, समाज-सेवा स्वधर्मि-वात्सल्य और अतिथि सत्कार में सदैव समर्पित है। आप भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई है।

-कुशलचन्द बाफना

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री गोपालराजजी सुराणा का 14 सितम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ,



अग्रणी रहा है।

कर्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त आपका जीवन संघ-समाज सेवा में समर्पित रहा। सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में आप सदैव तत्पर रहते थे। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया, जिसके फलस्वरूप सुराणा परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा, स्वधर्मि वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी सदैव

-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री

कुशतला-सवाईमाधोपुर-संघ-सेवी, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पारसचन्दजी जैन का 27 सितम्बर, 2020 को



अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

देहावसान हो गया। सरल स्वभाव के धनी, हँसमुख चेहरे वाले श्री पारसजी रत्नसंघ के वरिष्ठ श्रावक रत्न थे। महासती श्री रुचिताजी म.सा. के चातुर्मास में आपकी अभूतपूर्व सेवाएँ रही। प्रतिदिन सामायिक का नियम तथा धर्म के प्रति समर्पण गजब का था। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में परिचालक के पद पर राज्य सेवा देते हुए भी आपने सभी सप्त कुव्यसन त्याग रूपी जैनत्व के सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया। आपके देहावसान से पोरवाल समाज एवं रत्नसंघ को अपूरणीय क्षति हुई है। आप

-त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर

सैलाना-संघ-सेवी, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रतनलालजी रांका का 16 सितम्बर, 2020 को देहावसान हो गया।

सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। संघ एवं संघीय गतिविधियों में रांका परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। सैलाना और भीलवाड़ा क्षेत्र में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की विहार-सेवा में और शेखेकाल विराजने पर सम्पूर्ण रांका परिवार सेवा-भक्ति में पूरा सन्नद्ध रहता है। स्वधर्मि-वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी रांका परिवार सदैव समर्पित है।

-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री

बैंगलूरु-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी भण्डारी का 27 अगस्त, 2020 को देहावसान हो गया। धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहने वाले श्री प्रकाशचन्द भण्डारी का जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। सबके साथ सामञ्जस्य पूर्ण व्यवहार आपके जीवन की प्रमुख विशेषता थी। रायचूर एवं बैंगलोर में भण्डारी परिवार संघ की समस्त गतिविधियों में सक्रिय योगदान कर रहा है। व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा तथा व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा के बैंगलोर पधारने पर आप सहित समस्त भण्डारी परिवार ने विहार-सेवा और धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मि भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में भण्डारी परिवार सदैव तत्पर है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

नीमच-धर्मनिष्ठ, तपस्वी, स्वाध्यायी सुश्रावक श्री मनोहरसिंहजी चोरड़िया का 5 अगस्त, 2020 को 82 वर्ष की



आयु में देवलोक गमन हो गया। आपको अन्तगडदसासूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र के 33 अध्ययन, दशवैकालिकसूत्र के 5 अध्ययन तथा आवश्यकसूत्र एवं जीवदया, गमा, गति-आगति, 6 काया आदि कई थोकड़े कण्ठस्थ थे। आँखों में तकलीफ होने के कारण आप स्वयं दीक्षा नहीं ले सके थे, परन्तु आपकी सद्प्रेरणा से एवं सहयोग से 5 से अधिक आत्माएँ संयम मार्ग पर अग्रसर हुईं। पिछली

वय में आँखों से न देख पाने के बावजूद धर्म के प्रति ऐसी लगन थी कि प्रतिदिन जब भी गुरु भगवन्तों का सान्निध्य होता तब नई-नई गाथा सुनकर ही कण्ठस्थ कर लेते थे। आपने 50 वर्ष से अधिक ब्रह्मचर्य का पालन किया एवं कई वर्षों तक स्वाध्यायी सेवा दी। आप महान् तपस्वी थे, 20 से अधिक बार उपवास से वर्षीतप, ओली तप 16 बार किए तथा वर्तमान में एकाशन वर्षीतप गतिमान था। 16 उपवास 3 बार, 13 उपवास 3 बार, 11 उपवास 3 बार, 9 उपवास 11 बार, अठाई 20 बार, 5 उपवास और 3 उपवास अनगिनत बार किए। आप सभी तरह की तपस्या करते रहते थे। कभी खुले मुँह नहीं रहते थे। आपके वर्षों से रात्रि चौविहार के पूर्णतया त्याग रहते थे। आपके इस महान् तपोमय जीवन में आपके पुत्र एवं पुत्रवधू श्री सुनीलजी-श्रीमती पद्माजी चोरड़िया ने आपकी अविरल सेवा विनय-भक्ति पूर्वक की।

-अर्जित कुमार बय, अध्यक्ष

बीजापुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सुनीलजी रूणवाल का 25 जुलाई, 2020 को देहावसान हो गया। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण आप सबके प्रियपात्र थे। केवल आप ही नहीं सम्पूर्ण रूणवाल परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है तथा सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनो के आतिथ्य-सत्कार में सदैव तत्पर रहा है। आपने संस्कारों से अपने समूचे परिवार को सम्पन्न किया। इसी का सुफल है कि आपका सम्पूर्ण परिवार संघ प्रवृत्तियों में निष्ठा पूर्वक जुड़ा हुआ है। श्री सतीशजी रूणवाल गजेन्द्रनिधि के ट्रस्टी के रूप में अपना दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं।

-धन्यत सेठिया, महामन्त्री



बालोतरा-सुश्री शिवांगिनी (स्वीटी) सुपुत्री श्री कान्तिलालजी सुपौत्री श्री पारसमलजी छाजेड़ का 21 सितम्बर, 2020 को 25 साल की आयु में अहमदाबाद में स्वर्गवास हो गया। आपका पूरा परिवार धार्मिक गतिविधियों से जुड़ा है। परिवार में सामायिक के प्रति विशेष लगाव है तथा परिवार के सभी सदस्य तपस्या में अग्रणी हैं।

-सरोहनलाल जैन



कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती हरकीबाईजी धर्मसहायिका श्री छोटूलालजी पुत्रवधू श्री सुवालालजी जैन (कचोरी वाले) का 19 अगस्त, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति असीम आस्था थी। आप धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-त्रिलोकचन्द जैन, महाराणी फार्म जयपुर



कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मंजूजी धर्मपत्नी श्री कमल कुमारजी पुत्रवधू श्री बाबूलालजी जैन (गलवानिया वाले) का 23 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप व्यवहार कुशल एवं धर्मपरायण श्राविका थीं। आपकी सभी सन्त-सतियों के प्रति दृढ़ आस्था थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-अनिल कुमार जैन (बाबई वाले), जयपुर



कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री राजेन्द्र कुमारजी सुपुत्र स्व. श्री चौथमलजी जैन (देवली वाले) का 9 सितम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आप उदारमना, शान्तस्वभावी एवं दृढ़ पुरुषार्थी श्रावकरत्न थे। आपका जीवन संघर्षमय रहा। आपकी सन्त-सतियों के प्रति असीम श्रद्धा थी। आप धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहते थे।



जोधपुर-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पुष्पकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री उगमचन्दजी सिंघवी का 28 सितम्बर, 2020 को पूना में देहावसान हो गया। आप व्यवहारकुशल, उदारमना एवं धर्मपरायण श्राविकारत्न थीं। आपकी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा थी। सिंघवी परिवार धार्मिक कार्यों, वात्सल्य एवं आतिथ्य सत्कार में सदैव अग्रणी रहता है। आप अपने पीछे भरा-पूरा

परिवार छोड़कर गई हैं।

-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री

❁ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❁

<p>4000/- मण्डल सत्साहित्य सदस्यता (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक</p> <p>810 श्री अमितजी, राजेन्द्र कुमारजी काठेड, हाट पीपलिया-देवास (मध्यप्रदेश)</p> <p>1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक</p> <p>क्रम संख्या 16163 से 16166 तक कुल 4 सदस्य बने</p> <p>'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त</p> <p>100000/- श्री भागचन्दजी, हेमेशजी सेठ, जयपुर की ओर से जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु।</p> <p>21000/- श्रीमती कुसुमलताजी-श्री राजेशजी कोठारी, जयपुर, स्व. श्री जीतमलजी सुपुत्र स्व. श्री सुमेरचन्दजी कोठारी की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।</p> <p>5100/- श्री कमलेश कुमारजी-श्रीमती नीतिकाजी, आशीष कुमारजी जैन (बिलोपा वाले), मुम्बई, पूजनीया माताजी सुश्राविका श्रीमती कान्तीदेवीजी धर्मपत्नी श्री कपूरचन्दजी जैन का 10 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।</p> <p>5100/- श्री सुनीलजी, विनम्रजी जामड़, जयपुर, पूज्या माताश्री श्रीमती पारसदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री हेमचन्दजी जामड़ की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।</p> <p>5000/- श्री प्रकाशचन्दजी झांबड़ एवं परिवारजन, अकोला की ओर से सप्रेम।</p> <p>3701/- श्रीमती ललिताजी, महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, पूज्या माताश्री स्व. श्रीमती पुष्पकँवरजी (जोधपुर निवासी), धर्मसहायिका स्व. श्री मनमोहनमलजी गांग की 37वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।</p> <p>2100/- श्रीमती कमलादेवीजी, प्रवीणजी, महावीरजी भंसाली, जोधपुर, स्व. श्री भीकमचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री दीपचन्दजी भंसाली का 31 अगस्त, 2020 को स्वर्गारोहण हो जाने पर भावाञ्जलि-स्वरूप।</p> <p>2100/- श्री पारसमलजी सुपुत्र स्व. श्री मगराजजी ढेलड़िया बोहरा, मंडली-बाड़मेर की ओर से सप्रेम।</p>	<p>2100/- श्री गणपलालजी, अरूणजी (मनोज), मनीषजी जैन (धनौली), सवाईमाधोपुर, सुश्राविका श्रीमती पिंकीजी धर्मसहायिका श्री मनीषजी के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।</p> <p>2100/- श्री त्रिलोकचन्दजी, राहुलजी, अक्षयजी जैन (श्यामपुरा), सवाईमाधोपुर, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री त्रिलोकचन्दजी के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सवाईमाधोपुर से वरिष्ठ व्याख्याता (प्रिंसिपल उ.मा.) पद से 31 जुलाई को सेवा निवृत्त होने पर तथा श्राविकारत्न श्रीमती कुमकुम जी जैन के 15 उपवास और श्रीमती स्वातिजी जैन के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।</p> <p>2100/- श्री सोहनलालजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, पिताजी स्व. श्री मूलचन्दजी जैन की छठी पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।</p> <p>2100/- श्रीमती विजयलक्ष्मी, सौरभ जी जैन (एण्डवा वाले), सवाईमाधोपुर, सुश्रावक श्री प्रेमबाबूजी जैन का 20 सितम्बर, 2020 को देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।</p> <p>2100/- श्री विनोदजी, जयकुमारजी, विमल कुमारजी जैन (सिंगौर वाले), सवाईमाधोपुर, सुश्रावक श्री बद्रीलालजी जैन का 13 सितम्बर, 2020 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।</p> <p>2000/- श्री कपूरचन्दजी जैन (बिलोपा वाले), मुम्बई, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कान्तीदेवीजी जैन का 10 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।</p> <p>1111/- श्री विनय कुमारजी, मनीष कुमारजी, अंकित कुमारजी अब्बाणी, चित्तौड़गढ़, सुश्री अरिहाजी सुपुत्री श्री अंकित कुमारजी के प्रथम जन्मदिवस 19 अगस्त, 2020 के उपलक्ष्य में।</p> <p>1101/- श्री लड्डूलालजी जैन के लघुभ्राता तथा श्री रविप्रकाश जी, पवन कुमारजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा वालों के पिताश्री जम्बूकुमारजी जैन (बराणा वाले) का 27 अगस्त को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।</p>
---	--

- 1100/- श्रीमती वीणाजी मेहता, जोधपुर, धर्मसहायक श्री कैलाशचन्द्रजी सुपुत्र स्व. श्री सवाईचन्द्रजी मेहता का 28 अगस्त को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री मोहनलालजी-श्रीमती विमलाजी जीरावला, जोधपुर, अपने सुखमय वैवाहिक जीवन की 53वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री हरिचन्द्रजी हीरावत, जयपुर, सुपौत्री सौ.कां. साक्षीजी सुपुत्री श्री सुनीलजी हीरावत की 9 की तपस्या के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री प्रतीक कुमारजी जैन, श्यामपुरा, माता-पिताजी की पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री शिवनाथचन्द्रजी, राजकुमारजी, जोधपुर, पूज्य पिताश्री स्व. श्री महावीरचन्द्रजी की दसवीं पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री धनसुरेशजी, आशीषजी, अमितजी, सुमितजी जैन (श्यामपुरा), सवाईमाधोपुर, सुश्राविका श्रीमती शिल्पाजी धर्मसहायिका श्री अमितजी के प्रथम बार अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री राधेश्यामजी, कपिलजी, सचिनजी जैन (करमोदा वाले), आदर्शनगर-सवाईमाधोपुर, सुश्राविका श्रीमती रन्जूजी जैन के एक माह एकाशन और प्रथम बार 9 दिवस की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्रीमती फूलकँवरजी मेहता, ब्यावर, स्व. श्री हुक्मीचन्द्रजी मेहता की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री महावीर प्रसादजी, दिनेशजी, पारसजी, पंकजजी, मुकेशजी जैन (कुण्डेरा वाले), इन्दौर, पूज्य पिताश्री स्व. श्री रघुनाथ प्रसादजी जैन की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री बाबूलालजी, नरेन्द्रकुमारजी, जिनेन्द्र कुमारजी जैन, देई-बून्दी, रिद्धिजी जिन्दल के तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री रतनलालजी, महावीर प्रसादजी (कोटा), हीरालालजी, मनमोहनजी जैन चौधरी, सवाईमाधोपुर, पूजनीया माताजी श्रीमती कल्याणीबाई जी जैन (चौधरी) की पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, नरेन्द्र कुमारजी, बुद्धिप्रकाश जी, कमलेश कुमारजी जैन (मुई वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, पूज्या माताजी श्रीमती अनोखीदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री मूलचन्द्रजी जैन का 29 अगस्त को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री विशालजी, भारतजी जैन (बरगमा वाले), जयपुर, पूज्य पिताजी श्री देवेन्द्र कुमारजी जैन के 31 जुलाई को राजकीय सेवा (34 वर्ष की सेवा) पूर्ण कर सेवानिवृत्त होने पर सप्रेम।
- 1100/- श्री छोटूलालजी, जितेन्द्र कुमारजी जैन, कोटा, सुश्राविका श्रीमती हरकीबाईजी जैन की पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री धीरज कुमारजी जैन (देवली वाले), पाटनपोल-कोटा, पूज्य पिताश्री राजेन्द्र कुमारजी जैन का 9 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
- 1100/- श्री बाबूलालजी, कमल कुमारजी, नरेन्द्रजी, संजयजी जैन (गलवानिया वाले), कोटा, सुश्राविका श्रीमती मंजूजी धर्मसहायिका श्री कमल कुमारजी जैन का 23 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री नरेन्द्र कुमारजी, सुमित कुमारजी जैन, कुशतला की ओर से अपने पूजनीय पिताश्री पारसचन्द्रजी जैन का 27 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

संशोधन

जिनवाणी, सितम्बर 2020 में प्रकाशित परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के प्रवचन में पृष्ठ 13 एवं पृष्ठ 14 पर 'आचार्य पूज्य श्री गणेशीलालजी म.सा.' के स्थान पर 'आचार्य पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. तथा भाई 'सुल्तानमलजी बाघमार' के स्थान पर 'मुल्तानमलजी बाघमार' पढ़ा जाए। यह अशुद्धि आशुलिपि के दोष से रह गई।

-सम्पादक

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

उपकारी को नहीं भूलें

श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्यरत्न'

एक गरीब आदमी था। वह पढ़ा-लिखा, समझदार एवं ईमानदार था। वह एक सेठ के पास पहुँचा और नौकरी के लिए याचना की। सेठ ने उसे एक छोटी-सी नौकरी दे दी। गुण तो उसमें थे ही, जल्दी ही उसने तरक्की की और सेठ का मुनीम बन गया।

एक दिन सेठ ने देखा कि दोपहर की छुट्टी में मुनीम ने अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया। सेठ को कुछ सन्देह हुआ। अब वह रोज ही मुनीम पर निगाह रखता। हर रोज मुनीम दोपहर के समय अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लेता। अब तो सेठ का सन्देह पक्का हो गया। वह सोचने लगा- 'हो-न-हो, यह रुपये चुराता होगा और कमरा बन्द करके कहीं छिपाकर रख लेता होगा।'

एक दिन जैसे ही मुनीम ने कमरा बन्द किया, सेठ वहाँ पहुँच गया और बोला- 'दरवाजा खोलो।'

मुनीम ने दरवाजा खोल दिया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। सेठ की दृष्टि एक पुराने बक्से पर पड़ी, जिसमें ताला लगा हुआ था। वह डाँटते हुए बोला- 'यह बक्सा खोलो।' मुनीम ने बहुत विनय से कहा- 'सेठजी, इस बक्से में कोई खास चीज नहीं है, इसे मत खुलवाइए।' अब तो सेठ का सन्देह और भी पक्का हो

गया। वह चिल्लाकर बोला- 'खोलो जल्दी, लेकिन उसमें मिला मैला-कुचैला कुरता और एक जोड़ी पुरानी चप्पल।'

मुनीम ने हाथ जोड़कर कहा- "सेठजी, ये वही कपड़े हैं, जिन्हें पहनकर मैं पहली बार आपके पास आया था। रोज दरवाजा बन्द करके इन कपड़ों को देख लेता हूँ। आज तो आपकी कृपा से अच्छा खाता-पहनता हूँ, लेकिन इन्हें रोज इसलिए देखता हूँ, ताकि भूल न जाऊँ अपने पुराने दिनों को और आपकी कृपा हमेशा याद आती रहे।" सेठ मन-ही-मन शर्मिन्दा हो गया।

हमेशा सोचना चाहिए-किस-किस ने हमारी सहायता की, हमारी जरूरतें पूरी की, हमें ढाढ़स बँधाया, हमारे आँसू पोछे, हमें सहारा दिया। हमेशा उनके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए।

-70, टी.टी.के. रोड़, अलवार पेट, चेन्नई-600018

सावधान! क्रोध से बचें

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

क्रोध व्यक्ति का बहुत बड़ा शत्रु है। इससे बचना ही जीवन के लिए हितकर है। इस बात को अपने स्मरण में अवश्य रखें कि-

☛ आपकी हजार कोशिकाओं को जला देता है।

- ❖ क्रोध आपके सुमधुर सम्बन्धों को खत्म कर देता है।
- ❖ क्रोध आपके रक्तचाप को बढ़ा देता है।
- ❖ क्रोध आपके चेहरे की भाव भङ्गिमाओं को रौद्र कर देता है।
- ❖ क्रोध आपकी वाणी में भयंकर कड़वाहट भर देता है।
- ❖ क्रोध आपके मस्तिष्क को विवेक शून्य कर देता है।
- ❖ आपकी आँखों में लालिमा भर देता है।
- ❖ इससे अनर्थकारी घटनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं।
- ❖ इससे मस्तिष्क आवेश की ज्वाला में भभकने लगता है।
- ❖ इससे माथे की तपन से व्यक्ति अपना भान भूल जाता है।

माचिस की तूली पहले स्वयं जलती है और फिर सामने वाले को जलाती है। ठीक इसी तरह क्रोधी व्यक्ति पहले स्वयं जलता है, फिर सामने वाले को जलाता है। इस प्रकार क्रोध का परिणाम सिर्फ और सिर्फ नुकसान ही है। क्रोध विनाशकारी है, अहितकारी है।

कुत्ते का काटा हुआ सम्भवतः बच सकता है, सर्प का काटा हुआ भी सम्भवतः बच सकता है, लेकिन आदमी द्वारा काटने पर उसके बचने की सम्भावना नहीं रहती है। आदमी के शरीर में ज़हर भरा हुआ है। क्रोध करने पर व्यक्ति के शरीर में ज़हर बढ़ जाता है। इसका आशय यही है कि क्रोधी व्यक्ति सामने वाले का विनाश करने पर तुल जाता है।

हम थोड़ी-थोड़ी बातों पर क्रोधित हो जाते हैं। मन के प्रतिकूल प्रसंग उपस्थित होने पर, अपेक्षा पूर्ण नहीं होने पर अर्थात् अपेक्षा की उपेक्षा होने पर, अहं को ठेस पहुँचने पर व्यक्ति क्रोधित हो उठता है। धैर्य खो बैठता है। धैर्य के अभाव में छोटी-छोटी बातों पर विवाद की स्थितियाँ पैदा हो जाती हैं। भगवान ने क्रोध से बचने के लिए क्षमाभाव की साधना बताई है। समभाव

और क्षमा भाव अपनाने से क्रोध पर नियन्त्रण किया जा सकता है।

क्रोध की स्थिति में मन विभाव दशा में चला जाता है। क्रोध का वेग उपशान्त होने पर क्रोध करने वाले व्यक्ति के मन में कई बार पश्चात्ताप की भावना आ जाती है और वह स्वयं चिन्तन कर समझने लगता है कि क्रोध की प्रवृत्ति किसी भी दृष्टि से अच्छी नहीं है। कवि ने दशा को इस प्रकार व्यक्त किया है-

नफ़रत होती उनसे मुझको, मेरी बात को न माने,
बैर की ज्वाला अन्दर जलती, ऊपर मीठी मुस्कानें।
अहं हटाकर, आवेश मिटाकर, समता की राह चला देना,
आराधना में जो-जो अड़चन, उसको प्रभुवर मिटा देना।
यह मन उलझा, उलझा रहता, प्रभु मेरी उलझन मिटा देना,
आराधना में जो-जो अड़चन, उसको प्रभुवर मिटा देना।

क्रोध तीन प्रकार के होते हैं-

1. **अल्पकालीन क्रोध**-सज्जन का गुस्सा घासफूस की आग की तरह होता है। ऐसा क्रोध जल्दी समाप्त हो जाता है।
2. **अपेक्षा की उपेक्षा होने पर उत्पन्न क्रोध**-व्यक्ति की अपनी कुछ अपेक्षाएँ होती हैं, वे अपेक्षाएँ पूर्ण न होने पर व्यक्ति आवेश में आ जाता है। ऐसा क्रोध भी ज़्यादा टिकाऊ नहीं रहता है। वह जल्दी अपनी सामान्य स्थिति में आ जाता है।
3. **स्थायी क्रोध**-किसी-किसी बात को लेकर व्यक्ति इतना अधिक नाराज़ हो उठता है कि वह क्रोध बैर बनकर क्रोध करने वाले के मन में स्थायी रूप ले लेता है। बैर की गाँठें कभी कभी इतनी मजबूत हो जाती हैं कि वर्षों तक या जीवन पर्यन्त वह बैर कायम रहता है। ऐसा बैर इस भव को और परभव को भी बिगाड़ने वाला रहता है। साथ ही ऐसा बैर रिश्तों को छिन्न-भिन्न कर अप्रिय स्थितियाँ उत्पन्न कर देता है।

ज्ञानी फरमाते हैं कि पुराने कैलेण्डर को नहीं सम्भालते हो तो फिर वर्षों पुराने क्रोध को क्यों सम्भाल

कर रखते हो। कैलेण्डर की तरह ही क्रोध के प्रसंगों को भी भूल जाओ और परस्पर पुनः प्रेम स्थापित करो। पुराने कैलेण्डर को हम अनुपयोगी समझ कर हटा देते हैं, उसी प्रकार क्रोध की बातों को अहितकर समझकर दिल से हटा देना चाहिये, यही श्रेयस्कर है। ऐसा करने से मन में सदैव शान्ति-समाधि स्थापित रहेगी।

-जन्ता साड़ी सेन्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़) 9424109109

व्यवहार सम्यक्त्व के 67 बोल

नववें बोले आगार छह

व्रत अङ्गीकार करते समय रखी जाने वाली छूट को 'आगार' कहते हैं।

1. राजाभियोग-राजा की पराधीनता से यदि समकितधारी श्रावक को अनिच्छापूर्वक अन्य तीर्थिक तथा उनके माने हुये देव आदि को वन्दना नमस्कार करना पड़े तो श्रावक सम्यक्त्व व्रत का अतिक्रमण नहीं करता।
2. गणाभियोग-गण अर्थात् बहुजन समुदाय के आग्रह से अनिच्छा पूर्वक.....
3. बलाभियोग-बलवान् पुरुष द्वारा विवश किये जाने पर अनिच्छा पूर्वक.....
4. देवाभियोग-देवता द्वारा बाध्य किये जाने पर अनिच्छा पूर्वक.....
5. गुरु-निग्रह-माता, पिता, गुरुजन आदि के आग्रह वश अनिच्छा पूर्वक.....
6. वृत्तिकान्तर-अटवी (जंगल) में जिस प्रकार आजीविका प्राप्त करना कठिन है, उसी प्रकार क्षेत्र और काल यदि आजीविका के प्रतिकूल हो जाएँ और जीवन-निर्वाह होना कठिन हो जाए तब ऐसी दशा में अनिच्छापूर्वक अन्य तीर्थिक तथा उनके माने हुये देवादि को यदि वन्दना नमस्कार करना पड़े तो श्रावक सम्यक्त्व व्रत का अतिक्रमण नहीं करता।

दसवाँ बोले यतना छह

सम्यक्त्व रूप अनमोल धन को मिथ्यात्व रूप चोरों से सुरक्षित रखने के प्रयत्न को 'यतना' कहते हैं।

1. आलाप-मिथ्यादृष्टि से बिना कारण न बोलें और सम्यग्दृष्टि से ज्ञान-चर्चा के लिए बोलें।
2. संलाप-मिथ्यादृष्टि से विशेष भाषण न करें और सम्यग्दृष्टि से बार-बार चर्चा अवश्य करें।
3. दान-मिथ्यादृष्टि को गुरु बुद्धि से दान न दें, लेकिन अनुकम्पावश दान देने के लिए निषेध नहीं है। सम्यग्दृष्टि को गुरु बुद्धि से दान दें।
4. मान-सम्यग्दृष्टि का बहुत आदर-सम्मान करें, मिथ्यादृष्टि का नहीं।
5. वन्दना-सम्यग्दृष्टि को वन्दना करें, मिथ्यादृष्टि को नहीं।
6. गुणग्राम-सम्यग्दृष्टि के गुणों का वर्णन करें, मिथ्यादृष्टि का नहीं।

Questions and Answers

Sh. Dulichand Jain

Q.1- What are the three jewels of Jainism?

Ans. The three ultimate concepts of Jainism, also known as the three jewels are :-

1. *Samyak Darśana* (Right Vision) : Also known as Right Faith, this is belief in the teachings of the tīrthaṅkaras. It helps us to see things for what they really are.
2. *Samyak Jñāna* (Right Knowledge) : It means knowing the universe and its constituents. It frees us from doubt and delusion.
3. *Samyak Caritra* (Right Conduct) : It helps us abide by ethical rules and religious dictums.

In his last sermon, Tīrthaṅkara Mahāvīra said that through faith, we come to believe in the nature of substances; through knowledge, we begin to understand them; and through

conduct, we put an end to the flow of karmas. The soul is liberated when all karmās are annihilated. Together, Right Faith, Right Knowledge and Right Conduct constitute the Jaina path of liberation.

Q.2- Who is a true ascetic ?

Ans. Both men and women have the option to take initiation into the Jaina Religious order. Whether a monk (sādhu) or a nun (sādhvī), a true ascetic is someone who :-

1. Is absorbed in studying the self.
2. Is free of worldly attachments.
3. Follows the three fold path of right faith, right knowledge and right conduct.
4. Observes the five great vows.
5. Observes the five regulations of conduct and three guards against misconduct.
6. Cultivates the ten supreme virtues.
7. Lives according to the dictums of the Āgamas.
8. Guides householders on the right path.

No. 70, T.T.K. Road, Aalwarpath, Chennai-600018
(Tamilnadu)

त्रिशला नन्दन वीर की

डॉ. दिलीप धींग

त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की॥
सिद्धार्थ के घर-आङ्गन में, चेत सुदी तेरस को जन्मे।
कुंडलपुर का कण-कण हर्षित, खुशियाँ छाईं जन-जन में।
देव-देवियाँ जश्न मनाएँ, जय हो उस तकदीर की।
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की॥1॥
बढ़ोतरी ही बढ़ोतरी हुई, वर्धमान है पहला नाम।
निर्भय, निडर अभय के साधक, महावीर को कोटि प्रणाम।
कर्म-युद्ध के अनुपम योद्धा, आत्म-विजेता वीर की।
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की॥2॥
तीस बरस का स्वर्णिम यौवन, मगसर बद दसमी का मान।
वर्धमान ने दीक्षा ले ली, करके वर्षादान महान्।
बोले सुरनर जय हो, जय हो, महात्यागी अतिवीर की।

त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की॥3॥
साढ़े बारह वर्ष साधना, कष्ट अपार सहे समभाव।
ज्ञान-ध्यान का सूरज मानो, चला धरा पर पाँव-पाँव।
पापों का तम हरने वाले, परम धीर, गम्भीर की,
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की॥4॥
ऋजुबालुका का तट आया, कलकल सरिता शाम सुहानी।
सुद बैशाख तिथि दसमी को, बने सन्मति केवलज्ञानी।
देव-दुन्दुभि बोली जय-जय, तीर्थकर महावीर की।
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की॥5॥
प्रभु पधारे मध्यम पावा, इक उजला इतिहास बना।
सुद बैशाख तिथि ग्यारस को, चार तीर्थ की स्थापना।
समवसरण में बहने वाले, शीतल मन्द समीर की।
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की॥6॥
तीस बरस तक अमृत बरसा, लाखों प्राणी हुए अमर।
कार्तिक बदी अमावस के दिन, मोक्ष पधारे प्रभुवर वीर।
आत्मदीप की दीवाली के, सूत्रधार महावीर की।
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की॥7॥

निदेशक : अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध
केन्द्र, 1, अरव्या मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई

जन्म-दिन ऐसे मनाएँ.....

संकलन : मरौलिक जैन

- ▼ पुष्प नहीं, पेन-पुस्तक या पर्स दें।
- ▼ मिनी पार्टी नहीं, मूक प्राणियों पर दया दृष्टि रखें।
- ▼ भोजन स्वजन-मित्रजन को ही नहीं, अनाथ अपङ्ग को भी प्रेम से कराएँ।
- ▼ होटल का नहीं घर का खाना खाएँ।
- ▼ दीर्घायु की कामना करें।
- ▼ जरूरतमन्द को पोशाक (ड्रेस) दिलाकर।
- ▼ किसी स्वधर्मी की स्कूल फीस भरवाकर।
- ▼ निर्धन रोगी को दवा, औषधि दिलाकर।

-बी 174, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

COVID-19

कोरोना की कहानी वर्णमाला की जुबानी

Humera Faridi B.A. 4TH Sem. R.L.S.M. DEGREE COLLEGE....

अ अपना खयाल रखें	आ आप घर पर रहें	इ इधर-उधर बैवजह न घूमें	ई ईसा अधिक न करें	उ उम्मीद पर दुनिया कायम है	ऊ ऊटपटांग कार्यों से बचें	ऋ ऋणात्मक न सोचें
ए एकान्त का आनन्द लें	ऐ ऐसा करो घर में रही	ओ ओझा से बचें	औ औषधि समय पर लें	अं अन्त भला ही होगा	क कोरोना से न घबराएँ	ख खबरदार बने रहें
ग गमनीन माहौल से बचें	घ घर को स्वच्छ रखें	च बटुआ से काम करें	छ छल-कपट से बचें	ज जल-साबुन से हाथ धोते रहें	झ झाड़ा न करें	ट टहले सिर्फ अपनी छत पर
ठ टहले सिर्फ अपने घर में	ड डर के आगे जीत है	ढ ढकोसलों से बचें	ण णमोकार मन्त्र का जाप करें	त तैयार रहें, न डरें	थ थूके न सड़कों पर	द दयालुता अपनाएँ
ध धैर्य बनाये रखें	न नशीले पदार्थों से बचें	प पड़ोसियों का ध्यान रखें	फ फर्जी जानकारी न फैलाएँ	ब बुजुर्गों का ध्यान रखें	भ भोजन समय पर करें	म मास्क का उपयोग करें
य योग करें	र रवि की किरणें जुहर लें	ल लचीलापन अपनायें	व वातालाप दूर से करें	श शराब से दूर रहें	ष षड्यन्त्र न करें	स सकारात्मक सोच रखें
ह हल तलाशें	क्ष क्षेत्र के प्रश्न में रहें	त्र त्रि-मल डक्टर, पुलिस, सफाईकर्मी	ज्ञ ज्ञानी बनें, अज्ञानता से बचें			

सुख की लक्ष्मी

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 नवम्बर, 2020 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

लक्ष्मीपुर नाम का एक नगर था। उस नगर में लक्ष्मी नाम का एक सुन्दर महल था। जहाँ लक्ष्मीचन्द नाम का सेठ रहता था। पुराने समय की बात है जब बिजली नहीं थी। दीपक थे, लक्ष्मीचन्द सेठ कमरे में सो रहा था। करवटें बदलते हुए अचानक अर्द्ध-खुली आँख से उसे कुछ प्रकाश दिखाई पड़ा। आधी-रात को कमरे में यह उजाला कैसा? चौंककर सेठ तुरन्त उठकर बैठ गया। नज़र खोलकर देखता है कि लक्ष्मीजी साक्षात् उसके सामने खड़ी हुई है। यह वास्तविकता है या स्वप्न, इसके लिए उसने अपने गाल पर एक-दो चपत लगाई, फिर मन ही मन बुदबुदाने लगा कि मैं जाग रहा हूँ।

वास्तव में यह तो लक्ष्मीजी ही हैं। वह बोली- “सेठ बहुत हुआ। मैं सात पीढ़ी से तुम्हारे घर पर हूँ। अब मेरे जाने का समय आ गया है। तुमझो झटका न लगे इसीलिए मैं पहले से तुम्हें चेतावनी देने आई हूँ। इस कमरे में तुम्हारी टेबल पर रखा दीया जब तक जलता रहेगा, तब तक मैं तुम्हारे घर में रहूँगी।” सेठ लक्ष्मीजी का आभार व्यक्त करते हुए बोला- “आपका हम पर बहुत उपकार है कि आप सात पीढ़ियों से हमारे घर में हो और जब से आप घर में हो तब से आज तक हमारे घर दुःख, दारिद्र्य बिल्कुल भी नहीं रहा। पहले आप आर्यो यह तो उस समय की बात रही, किन्तु अब आप जाओगी तो कहाँ

जाओगी? मेरे भाइयों के घर ही जाओगी न? कोई बात नहीं। लेकिन आपको अपने वचन का पालन करना होगा। जब तक दीपक जलता रहेगा तब तक आप यहाँ हो न?”

रात के 12 बजे का समय है। आधी रात अभी बाकी है। सेठानी पास के कमरे में सो रही है। पाँच लड़कों का वह परिवार है। सेठ की नज़र के सामने सब कुछ भविष्य का दिखने लगा। यदि लक्ष्मीजी चली गई तो क्या होगा? एक के बाद एक अशुभ समाचार आर्येंगे। माल से भरा जहाज समुद्र में डूब गया। लाखों रुपयों का माल पानी में बह गया। माथे पर दूसरों का कर्जा चढ़ गया। बीमारी में लाखों रुपया कपूर की तरह उड़ने लगा।

एक आशा की किरण हाथ में है। लक्ष्मीजी जाने वाली हैं, परन्तु अभी गई नहीं है। जब तक दीपक की लौ है तब तक वे घर में रहेंगी। अब क्या होगा? क्या सेठ सो जायेगा? नहीं अब तो सेठ बैठ गया। बिस्तर पर नहीं, काउस्सग में नहीं, बल्कि दीपक के सामने। आधी रात से लेकर सुबह तक सेठ रूम से बाहर निकला ही नहीं बल्कि रातभर दीप की लौ के सामने टकटकी लगाकर बैठा रहा। सुबह उठकर सेठानी विचार करने लगी कि आखिर सेठजी आज कमरे से बाहर क्यों नहीं निकले। सेठानी कमरे में जाकर देखती है। सेठ तो दीपक के सामने बैठा हुआ है। सेठ-सेठानी से पाँचों पुत्रों को बुलाने को कहता है। थोड़ी देर में सभी पुत्र वहाँ उपस्थित हो जाते हैं। सेठ आधी रात

में लक्ष्मी के आने की बात सभी से करता है और कहता है- ‘‘हमारी तो लक्ष्मी ज्वैलर्स है। हम तो हीरे के व्यापारी हैं। लाखों रुपये के माल की हेरा-फेरी होती है। लेकिन मेरे बच्चों! कान खोलकर ध्यान से सुनो। लक्ष्मी दुकान पर नहीं, बल्कि दीए में है। यदि दीपक बुझ गया तो तुम चाहे 24 घण्टे भी काम करो, लेकिन लक्ष्मी तब भी रहने वाली नहीं है। यदि दीपक जलता रहा तो लक्ष्मी कहीं जाने वाली नहीं है। अतः सभी को 5-5 घण्टे इस दीपक की रखवाली करनी होगी। इसके बाद वह सेठानी से बोला- ‘‘लक्ष्मी तो हाथ का मैल है। अतः तुम दिल खोलकर, खोखा भरकर जितना दान देना है दे दो। चिन्ता बिल्कुल मत करो। जब तक यह दीपक है, तब तक लक्ष्मी है।’’

अब पाँचों पुत्र क्या करेंगे? पाँचों पुत्रों की मनोदशा आखिर क्या होगी? पाँचों लड़कों का कर्तव्य-पालन क्या होगा? अब पाँचों में से चार पुत्र बैठे हैं दुकान पर और एक बैठा है दीपक के पास में। उसको दीपक पर परम श्रद्धा है कि इस दीपक को जलते रहने देना है। जब तक इस दीपक ज्योति बुझेगी नहीं तब तक दुकान पर कमाई चलती रहेगी। यदि यह दीपक बुझ गया तो मेरे चारों भाई

कितनी भी मेहनत कर लें फिर भी वे हजार के लाख नहीं कर पायेंगे। अतः कमाई कहाँ है? दुकान में या दीए में? यहाँ दीया ‘धर्म’ का सूचक है। धर्म में श्रद्धा होगी एवं धर्म का आचरण होगा, तो धन भी रहेगा, अन्यथा नहीं।

जिस तरह पतंग आकाश में उड़ती है, परन्तु उसकी डोर हाथ में होती है, उसी तरह लक्ष्मीजी की डोर दीए में है। अतः बच्चों! सुख की डोर धर्म है। यदि इतनी-सी बात समझ में आ जाये तो सुखी बन जायेंगे। लेकिन हमारी समझ अधूरी है। हर जीव को सुखी होना है। किन्तु उसको यह बात समझ में नहीं आती कि सुख की चाबी धर्म में है।

-दियाकर प्रकाशन, अरागरा (उत्तरप्रदेश)

- प्र. 1. सेठ लक्ष्मीचन्द के चौंकने का क्या कारण था?
- प्र. 2. सेठजी ने सेठानी को लक्ष्मी के विषय में क्या बताया?
- प्र. 3. सेठजी ने लक्ष्मी घर पर रुकी रहे, इस हेतु कौनसे प्रयत्न किए?
- प्र. 4. धन एवं धर्म में क्या सम्बन्ध है?
- प्र. 5. प्रस्तुत कहानी हमें क्या सन्देश देती है?
- प्र. 6. साक्षात्, दरिद्र, कर्तव्य, पीढ़ी शब्दों से एक-एक वाक्य बनाइए।

HOW TO REALLY ACHIEVE YOUR GOALS

1. Make sure your goals are specific
2. Make sure your goals are measurable
3. Identify the obstacles and think of the solutions before kickstarting
4. Have a strategic plan
5. Break it down into small ones
6. Review your progress regularly and make tunings accordingly
7. Mark down every tiny achievement along the way
8. Share your goals with someone else (it'll help you stick to it)
9. Always prepare an alternative plan

बाल-स्तम्भ [अगस्त-2020] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त 2020 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'प्रायश्चित्त' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	उत्कर्ष कुमार जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	24.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	24
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	कुणाल भरग्तिया, जयपुर (राजस्थान)	23
	अरिन चोरड़िया, जयपुर (राजस्थान)	23
	सुश्री प्रियंका चौपड़ा, अजमेर (राजस्थान)	23
	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	23
	कुशल सुशील जैन, भुसावल (महाराष्ट्र)	23

बाल-जिनवाणी सितम्बर, 2020 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 नवम्बर, 2020)

- प्र. 1. 'द्रुम का पीला पत्ता' प्रसङ्ग क्या सन्देश देता है?
- प्र. 2. व्यक्ति के तनाव ग्रस्त होने के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?
- प्र. 3. जीवन में अनुशासन कितना महत्त्वपूर्ण है? स्पष्ट कीजिए।
- प्र. 4. 'जीवन में करिये मत पाप' कविता का मूल भावार्थ संक्षेप में लिखिए।
- प्र. 5. पाप किसे कहते हैं? हम कैसे स्वयं को इनसे बचा सकते हैं?
- प्र. 6. 'प्रभावक' किस प्रकार जैनधर्म की उन्नति एवं प्रचार में सहायक होते हैं?
- प्र. 7. तनाव से होने वाली बीमारियों के विषय में बताते हुए उनसे बचने के उपाय भी लिखिए।
- प्र. 8. तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए-द्रुम, शरीर, कुञ्जी, परिवाद।
- प्र. 9. How can we be happy in our life.
- प्र. 10. Make sentences using behind, intended, blessed, perishing.

बाल-जिनवाणी [जुलाई-2020] का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई-2020 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	अभिषेक पालरेचा, जोधपुर (राजस्थान)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	गुंजन प्रशान्त कोठारी, धुलिया (महाराष्ट्र)	38.5
तृतीय पुरस्कार- 300/-	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	38
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	यशवर्द्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	37
	वंश जैन, जयपुर (राजस्थान)	37
	आरची जैन, सिंगोली (मध्यप्रदेश)	37

संस्कार केन्द्र एवं पाठशाला अध्यापकों से निवेदन

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं धार्मिक पाठशालाओं के अध्यापकों से निवेदन है कि वे जिनवाणी पत्रिका में प्रकाशित 'बाल-जिनवाणी' का वाचन कक्षा में करावें एवं उसमें पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भेजने हेतु व्यवस्था करावें। आचार्य हस्ती दीक्षा शती वर्ष में बालकों को संस्कारित करने का यह भी एक उत्तम साधन है।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : 022 2628 7187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)
A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168
A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूष्यार्जन किया ऐसे संघनिष्ठ श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफ्तराज सा मुणोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव सा नीता जी डागा, झुट्टन। युवारल श्री हरीश सा क्वाड़, चैन्नई।	श्रीमान् दलीचंद बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद सा सुरेश सा क्वाड़, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश सा विमल सा पवन सा बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम सा क्वाड़, चैन्नई।
SILVER MEMBER (RS.50000)	श्रीमान् अम्बालाल सा बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज सा राजकंवर जी मंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.) श्रीमान् विजय जतिन जी नाहर, इन्दौर श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमति गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् महावीर सोहनलालजी बोधरा, जलगांव (मोपालगढ़) श्रीमान् सोहनराज जी बाघमार, कोयम्बटूर। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किसनगढ़। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, अहमदाबाद। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, मुम्बई।	

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें- M.Harish Kavad - No.5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें- मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

‘छोटा सा चिन्तन परियह को हल्का करने का, लाम बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का’

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रैल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अतः इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

- (1) श्री चंचलमलजी बच्छावत, कोलकाता, अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (2) श्रीमती मंजूजी भण्डारी, बेंगलोर, अध्यक्ष-अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
- (3) श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई, पूर्व संघाध्यक्ष एवं पूर्व मण्डल अध्यक्ष
- (4) श्री विनयचन्दजी डागा, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (5) डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (6) श्री अशोक कुमारजी सेठ, जयपुर, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (7) श्री राजेन्द्र कुमारजी रितुलजी पटवा, जयपुर, कोषाध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (8) श्री दुलीचन्दजी-श्रीमती कमलाजी बाघमार, चेन्नई
- (9) श्री अशोक कुमारजी चोरड़िया, जोधपुर
- (10) श्री प्रमोदजी महनोत, जयपुर, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर
- (11) श्री हिमांशुजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, जिला-टोंक
- (12) श्री गौतमचन्दजी जैन, पूर्व जिला रसद अधिकारी (अलीगढ़-रामपुरा वाले), जयपुर
- (13) न्यायमूर्ति श्री जसराजजी श्री आनन्दजी चौपड़ा, जयपुर
- (14) श्री सुशीलजी सोलंकी, मुम्बई
- (15) श्री रतनराजजी नेमीचन्दजी भण्डारी, मुम्बई (पीपाड़ सिटी वाले)
- (16) श्री भागचन्दजी हेमेशजी सेठ, जयपुर

निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु स्वीकृति प्राप्त हो गयी है-

1. श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, पूर्व संघाध्यक्ष, जयपुर
2. श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर, मण्डल कार्यकारिणी सदस्य
3. श्री अतिशजी सेठिया, होलनांथा
4. श्री सागरजी सेठिया, शिरपुर
5. श्री राजरूपमलजी, संजयजी, अंजयजी, दिवेशजी जैन, शिवाकाशी (तमिलनाडु)

जिन महानुभावों ने अर्थसहयोग हेतु स्वीकृति प्रदान की है, उनके प्रति भी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कृतज्ञता ज्ञापित करता है तथा स्वेच्छा से इस योजना से जुड़ने वाले महानुभावों की स्वीकृति के लिए प्रतीक्षारत है।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

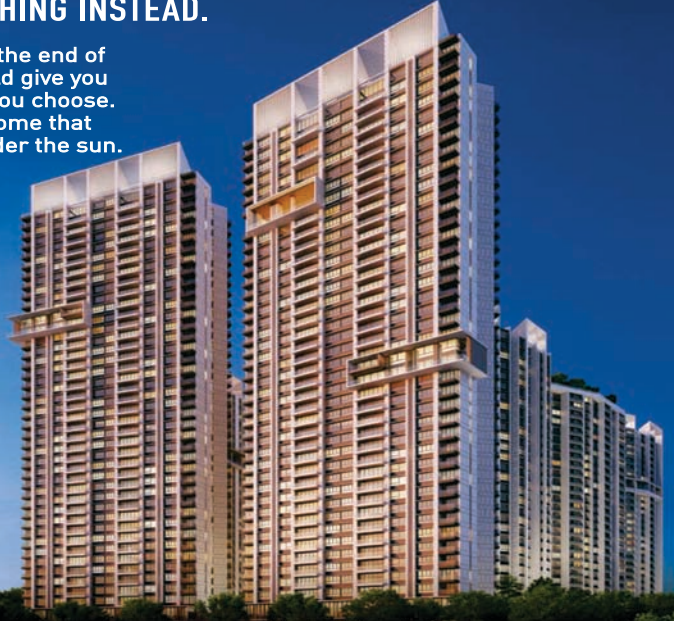
FSSAI LIC. No. 10012013000138



**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENZA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with


This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to
Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन